के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन-मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं। -शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

१ मोक्ष प्राप्ति का मार्ग २० ०२ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और वह यज्ञोमयी स्वरूप है मानो याग उसका आयतन है उसका गृह है उसका सदन है और वह प्रायः उसी में वास कर रहा है तो इसीलिए हम उदास परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में यह कहा करते हैं कि वह परमात्मा विभु है और विभु के गर्भस्थल में यह सर्वत्र समाहित हो जाता है तो वे परमपिता परमात्मा मानो यज्ञोमयी स्वरूप है जो सृष्टि का सृजन होता है अथवा उसका निर्माणवेत्ता भी यह परमदेव आनन्दनीय है वह आनन्द देव ही मानो इसका निर्माण करने वाले हैं और वह मंगल ब्रहे मानो इस प्रकार के ऐसे निर्माणवेत्ता वह अनन्तमयी हैं कि जैसे यज्ञमान अपने गृह में यज्ञशाला का निर्माण करता है इसी प्रकार यज्ञशाला के स्वरूप में इस ब्रह्माण्ड का निर्माण करता रहता है प्रत्येक लोक-लोकान्तरों की जो माला है वह माला भी इसी प्रकार बनती है जैसे माला रहती है सुमेरू होता है इसी प्रकार जब यज्ञशाला का निर्माण होता है तो वे परमपिता परमात्मा इस संसार रूपी यज्ञशाला के सुमेरू बन करके रहते हैं यह नाना प्रकार का जो अनन्य जगत हमें दृष्टिपात आता है चाहे वह लोक-लोकान्तरों के रूप में विद्यमान हो चाहे वह मानव के रूप में विद्यमान हो कोई भी प्राणी मात्र हो परन्तु वह एक माला है और माला ही मानो देखो, उसके मध्य से देखो, सूत्र पिरोया हुआ है और सूत्र

पिरोने से वह माला बनती है तो वही यज्ञशाला के रूप में परिणत रहती है जैसे यज्ञशाला में यज्ञमान हैं जितने भी होता उद्गाता और अध्वर्यु और जितने भी पुरोहित जन हैं वह सब मानो देखो, यज्ञमान रूपी सूत्र में पिरोऐ हुए रहते हैं इासी प्रकार देखो, जितना भी लोक-लोकान्तरों का यह जगत है चाहे वह मुनिवरों! देखो, नाना पृथ्वियों के रूप में हो चाहे वह नाना सूर्यों के रूप में हो चाहे वह नाना ध्रुव के रूप में विद्यमान हो चाहे वह पुष्प नक्षत्रों के रूप में हो चाहे वह मानो आकाश गंगा और निहारिका और अवन्तिका के रूप में क्यों न हो परन्तु देखो, उसका निर्माणवेत्ता वह चैतन्य देव है मानो निर्माणवेत्ता मानो एक दूसरें में पिरोऐ हुए हैं एक दूसरें में उनमें विरोधाभास नही होता है वह मानो देखो, वह चित्रं ब्रह्मा वह ब्रह्म रूपी सूत्र सुमेरू में पिरोऐ हुए हैं उसमें ब्रह्म नही होगा मानो देखो, आत्मां भूतं ब्रह्मा वह आत्मा भी कहीं-कहीं सुमेरू के रूप मे रहता है और परमात्मा को सुमेरू ही कहा ही जाता है जैस मानो देखो, इसके पूर्व काल में हमने उद्गीत गाया जैसे यज्ञोपवीत में मानो देखो, ब्रह्म ग्रन्थि लग जाती है इसी प्रकार यह मानो देखो, यह भी ब्रह्म ग्रन्थि कहलाती है जिसमें बेटा! यह जगत पिरोया हुआ है और पिरो करके मुनिवरों! देखो, एक ब्रह्म ग्रन्थि लग जाती है एक सुमेरू कहलाता है इसी प्रकार हमें विचार-विनिमय करना है कि यह परमपिता परमात्मा हमारा सुमेरू है यज्ञमान याग कर रहा है परन्तु याग का सुमेरू ही पर ब्रह्म परमात्मा है कहीं कही आत्मा को माना है क्योंकि आत्मा एक प्राण है तो बेटा! देखो, यज्ञनं ब्रह्मा वर्णासुता वेद का वाक् कहता है कि सब सुमेरू स्वीकार करके अपने में मानो देखो, अपने पन को दृष्टिपात करते रहे हैं आज मैं विशेष चर्चा इस सम्बन्ध में नही देना चाहता हूँ केवल यह क्या ऋषि-मुनियों की सभाएं एकत्रित होती रही हैं और याग के सम्बन्ध में ऋषि-मुनियों ने अपने अनन्य विचार दियें हैं और विचार-विनिमय करने के लिए उन्हें सदैव विद्यमान हो

करके बेटा! अपनी-अपनी गोष्ठियों में अपना-अपना मन्तव्य देते रहें हैं तो विचार आता रहता है स्वन्धनं ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, यह जो परमपिता परमात्मा का जो अमूल्य जगत है यह मानो देखो, एक अनुपम है और इसमें आत्मा यज्ञमान है परमात्मा ब्रह्मा है पंच महाभूत बेटा! देखो, इसमें कोई उद्गाता अध्वर्यु के रूप में इसी के आश्रित हो करके बेटा! देखो, अनुशासन की प्रतिभा आती है इसी को आश्रय बना करके बेटा! राष्ट्रों का निर्माण होता रहा है तो मेरे प्यारे! देखो, एक-दूसरें में एक दूसरा जगत एक दूसरें में प्रतिष्ठित हो रहा है अथवा अपने में अपनेपन का भान कर रहा है तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! ब्रह्मणे व्रत्यं देवाः सुमेरू की भांति है आओ, बेटा! देखो, आज मैं तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ जिसकी चर्चाएं बेटा! मैं बारम्बार करता रहता हूँ मेरा अन्तरात्मा उनके विचारों से अथवा उनके कर्मों से बेटा! उनसे छिन्न-भिन्न होता है तो यह प्रसन्नता होती है और मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणे देखो, वशिष्ठ जैस मुनियों के यहाँ भी प्रायः ब्रह्मवेत्ता होते हुए वह भौतिक और आध्यात्मिक दोनो रूप से इस ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करते रहें हैं इसी प्रकार याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालयों में ब्रह्मचारियों को बेटा! नैतिक शिक्षा देते रहें हैं और नैतिक शिक्षा दे करके यह कहते हे ब्रह्मचारियों! आओ, तुम विराजमान हो करके आओ, तुम प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर अन्वेषण करो और अनुसन्धान करो जिससे तुम्हारा मानवीयतव पवित्रता को प्राप्त हो जाएं और पिण्डो ब्रह्माण्डं भूतं ब्रह्मे लोकाः मानो पिण्ड और ब्रह्माण्ड के ऊपर तुम विचार-विनिमय कर सको मेरे प्यारे! देखो, वह नैतिकवाद देते हुए और वह न्यौदा में से वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते हुए बोले यज्ञनं ब्रह्मा यज्ञनं प्रह्वे कृतं ब्रह्मा विष्णु यज्ञनं दिव्यं ब्रह्मा देवत्वां लोक प्राण भू वर्णं ब्रह्वा वेद का आचार्य कहता है ब्रह्मचारियों के मध्य में प्रातःकालीन हे ब्रह्मचारियों! आओ, तुम मानो देखो, अपन नैतिकता

को ऊँचा बनाओ यदि मानव का नैतिकतव ऊँचा बन गया है तो आत्मिक जीवन पवित्र बन गया है और इस शरीर को यज्ञशाला के रूप में तुमने दृष्टिपात कर लिया है तो तुम्हारा याग पवित्र बन गया है तो इसी से विज्ञान की उपलब्धि होती रही है और विज्ञान अपने में बड़ा पवित्रता में धारयामि बना रहा है मुझे एक समय देखो, ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारियों! मुझे उद्दालक गोत्र का एक निमन्त्रण आया और उद्दालक गोत्र के शिकामकेतु ऋषि ने कहा क्या हे याज्ञाम् भूतं कृतं ऋषिवर मेरी आप यज्ञशाला का दर्शन करो और उसमें मैंने जो भी कुछ प्राप्त किया है जो भी कुछ मैंने जाना है उसके ऊपर भी अनुसन्धान करो तो मानो देखो, क्योंकि निमन्त्रण आया तो निमन्त्रण होने के नाते एक समय हम ब्रह्मचारियों के समीप मानो देखो, भयंकर वन में पंहुचे और वनों में जहाँ देखो, शिकामकेतु उद्दालक और देखो, उनकी पत्नी श्वेलता मानो देखो, दोनो प्रातःकालीन याग करते याग के ऊपर अन्वेषण करते रहे तो मेरे पुत्रों! महर्षि कहते हैं कि हम ब्रह्मचारियों के समीप ऋषि आश्रम में पंहुचे तो शिकामकेतु उद्दालक ने हमारा स्वागत किया और हम आसनों पर विद्यमान हो गएं तो उन्होंने कहा ब्रह्मणे कहो भगवन! आप का यज्ञसुतं यज्ञशाला कैसी है और विज्ञानशाला कैसी है मैं दृष्टिपात करना चाहता हूँ मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा-प्रभु! हम नित्यप्रति आओ, तुम मेरी यज्ञशाला में याग करो तो याज्ञवल्कय मुनि महाराज ने अपने ब्रह्मचारियों के सहित बेटा! यज्ञशाला में विद्यमान हो गएं और यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह याग करने लगे और यागां स्वाहाः ब्रह्मे कृतं प्राणं भू वर्णनं देवाः स्वाहाः ऐसा उद्गीत गा करके बेटा! वह स्वाहाः उच्चारण करने लगे उन्होंने बेटा! देखो, यन्त्र एक यन्त्र में अपने यज्ञशाला में स्थित किया शिकामकेतु ने कहा हे ऋषिवर! मेरे यहाँ यह यज्ञशाला है और यह यन्त्र है मानो देखो, तुम्हारे जो शब्द है और शब्दों के साथ में तुम्हारा जो चित्र है और वह चित्र मानो देखो, सूक्ष्म

रूपों से ही पंच महा देखो, भूतों की तरंगो में तरंगित होता है अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके चह द्यौ में प्रवेश कर रहा है मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने द्यौ में प्रवेश हो करके उनके चित्र शब्दों को और मुनिवरों! देखो, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके वह द्यौ मे अवस्थित होते हुए दृष्टिपात कराए उन्होंने कहा यह इसमें स्थित हो रहे हैं तुम दृष्टिपात करो तो वह हमने मानो दृष्टिपात किया तो हमे यह ज्ञात हुआ क्या याग वास्तव में अपने में एक बड़ा एक क्रियाकलाप है जो सृष्टि के प्रारम्भ से क्रियाकलाप चला आ रहा है आत्मा का भोज्य इससे प्राप्त हो रहा है और संसार में मानो वायुमण्डल इसी से पवित्र होता है हमारे ऋषि-मुनि जब भी साधना में परिणत होते साधक बनने से पूर्व मानो वह याग करते राजा जब अपने राष्ट्र का मानो राज्यभिषेक होता तो राजा भी प्रथम याग करता तो वेदमन्त्र सुगन्धि को ले करके मानो देखो, मन्त्र उद्गीत गाते रहे हैं और वह राजा भी पवित्र और प्रजा अश्वमेध याग करते रहें है राजा और प्रजा दोनो मिल करके तो इस प्रकार याग का जो क्रियाकलाप है वह मानो बड़ा भव्य और पवित्रतम माना गया है मेरे प्यारे! देखो, जब शिकामकेतु उद्दालक ने जब मानो देखो, यज्ञशाला में याग कराया सुकेति विद्यमान हो गएं तो उनके चित्र बन करके मानो द्यौ में प्रवेश हो गएं तो उन्होंने कहा द्यौ में प्रवेश होते ही ऋषिवर तुम्हें यह दृष्टिपात आ रहे हैं जो अग्नि मानो द्यौ में प्रवेश हो रही है क्योंकि मानो द्यौ में ही सूर्य समाहित रहता है द्यौ में अग्नि रहती है और देखो, द्यौ में ही आपो रहता है और द्यौ में ही मानो देखो, वायां ब्रीहि व्रणा वायु भी उसी में स्थित हो जाती है जैसे मानव के हृदय में प्रत्येक इन्द्रियाँ मानो देखो, इन्द्रियों के विषय समाहित हो जाते हैं नेत्रों का विषय अग्नि बन करके रहता है और घ्राण मानो देखो, पृथ्वी बन करके रहता है और अमृतं मानो देखो, रसना जल तत्त्व बन करके रहता है और उन्होंने बेटा! वर्णनं ब्रह्मे यह भी हृदय में समाहित होती है

मानो देखो, वह आकश अन्तरिक्ष तत्त्व भी इसी में ओत-प्रोत हो जाता है तो विचार आता रहता है कि एक दूसरें में समाहित हो करके और हृदय में समाहित हो जाता है वह हृदय ही तो देखो, आत्मिक यज्ञशाला है जहाँ देखो, आत्मवेत्ता विद्यमान हो करके मानो वह साधना करता हुआ मानो उसमें प्रत्येक इन्द्रियों का इन्द्रियों के विषय का हूत करता रहता है और हूत करके हृदय को विशाल बनाता है और यह सर्वत्र जगत मानो देखो, हृदय में समाहित हो जाता है तो विचारवेत्ता यह कहते हैं ब्रह्मे ब्रहा तो बेटा! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपना मन्तव्य प्रगट किया कि हम ऋषि के आश्रम में याग प्रारम्भ किया तो हमारे शब्द हमारे चित्र सब द्यौ में प्रवेश हो करके हमें दृष्टिपात आने लगे, तो हम कितने अपने को, सौभाग्यशाली स्वीकार करते रहें। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने कहा आओ, भगवन! हमें एक सौ पांच वर्ष हो गएं हैं मैं और मेरी देवी हम नित्य प्रति साकल्य एकत्रित करते हैं और हमें महाराजा इन्द्र के यहाँ से एक कामधेनु प्राप्त हुई उसका गौ घृत उसका दुग्ध और उसके घृत के द्वारा हम याग करते हैं और वह मानो देखो, हम यह स्वीकार करते हैं क्या विचारों की सबसे प्रथम यदि कोई पगडण्डी हैं तो वह याग है संसार में जितने भी कर्म है उन कर्मों में यदि कोई कर्म है तो मानो वह याग है और यागं ब्रह्मे वह मोक्ष की पगडण्डी का पथिक बनता है इसी प्रकार बेटा! देखो, ऋषि ने अपना मन्तव्य देना प्रारम्भ किया और मन्तव्य देते हुए उन्होंने कहा सम्भूति ब्रह्मा व्रतं मेरे प्यारे! देखो, जैसे तपस्वी मानो जैसे भयंकर वनों में जा करके तपस्या में लीन हो जाता है जैसे सूर्य देखो, रात्रि छा जाती है और सांयकाल को सूर्य अपने अस्ताचल को चला जाता है, तो रात्रि के गर्भ में मानो निहित हो जाता है। इसी प्रकार हम मानो देखो, अपने शरीर और हृदय और मस्तिष्क सर्वत्र को ऊँचा बना करके हम परमात्मा के गर्भ में हमारा जीवन

हमें स्थित होता हुआ दृष्टिपात होता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने जब इसी प्रकार अपना मन्तव्य प्रगट किया, तो अपना मन्तव्य दिया तो वह बड़े प्रसन्न युक्त हो करके वह अपना विचार करते रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं, क्या शिकामकेतु उद्दालक की यज्ञशाला में हमने भ्रमण करना प्रारम्भ किया याग हो रहा है, साकल्य एकत्रित कर रहे हैं, और उसमें मानो देखो, अग्नि के मुखारबिन्दु में हूत किया जाता है। वही अग्नि है जो बेटा! वेदमन्त्रों के साथ में बेटा! द्यौ में ले जाती है, अथवा वही अन्तरिक्ष में रमण कराता है। और वही मुनिवरों! देखो, यज्ञमान का रथ बना करके द्यौ में प्रवेश करा देता है। मेरे प्यारे! अमृतं ब्रह्मा अमृतं देवां अमृतं दिव्य प्रह्वा लोकां वशिष्ठतां ऐसा वाक् उच्चारण करके कहता है कि अमृत है उसको पान करना हमारा कर्तव्य है, तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि कहता है क्या हमने ऋषि से कहा-प्रभु! हमें दृष्टिपात कराईए उन्होंने यज्ञशाला को दृष्टिपात कराया जहाँ नाना प्रकार का ब्रह्मचारी अध्ययन करते थें और अनुशासन करते रहे मेरे प्यारे! देखो, वह अग्रणीय शब्दों का एक नाना प्रकार के यन्त्रो का देखो, यन्त्र मानो व्रत्यं ब्रह्मे वर्णा वह अपने पूर्वजों के चित्रों को पूर्वजों की वाणी को और पूर्वजों के क्रियाकलापों को वह सदैव यन्त्रों में वह सदैव दृष्टिपात करते थे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने एक यन्त्र को दृष्टिपात कराया उन्होंने कहा ऋषिवर! यह यन्त्र है यह मेरा यन्त्र ऐसा है, क्या इसमें जो हमने अन्वेषण किया है, क्या मेरे जो महापिता पड़पिता उनके चित्र और क्रियाकलाप मेरे प्यारे! देखो, सर्वत्र मानो देखो, इस यन्त्र में दृष्टिपात आते हैं। मैं प्रसन्न होता रहता हूँ, अपने पूर्वजों के क्रियाकलापों को दृष्टिपात करता रहता हुआ मैं ब्रह्मण व्रत्यं देखो, इसमें मानो देखो, पचीसवें महापिता तक के दर्शन होते हैं। अगला यन्त्र है, जिसमें पचासवें महापिता तब के दर्शन होते हैं। सौवे महापिता तक के दर्शन होते हैं मानो देखो, हमारा यह वृत बन गया है कि हमारे जो शरीर का

निर्माण होता है, इसमें न प्रतीत कितने प्राणियों का इसमें पूर्वजों का मानो देखो, परमाणुवाद हमारे शरीरों में प्रवेश हो रहा है मेरे प्यारे! देखो, परमात्मा का जो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है, अनन्तमयी जगत है वह बड़ा अनूठा है विचित्र है। इसके ऊपर विचार-विनिमय करते-करते मानव अन्त में मौन हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार अपनी मानो यज्ञशाला को ऋषि को अमृतं दृष्टिपात कराया तो वह बड़े प्रसन्न चित्त हो गएं, और प्रसन्नयुक्त हो करके बोले कि-प्रभु! आपको धन्य है मेरे प्यारे! देखो, उस कक्ष में ले गएं जहाँ ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहे थे, अध्ययन करके बेटा! एक वेदमन्त्र उच्चारण किया वेदमन्त्र के गर्भ में जो ज्ञान है विज्ञान है। मानो देखो, उसको क्रियात्मकता में लाने का प्रयास होता रहा है। बेटा! देखो, पृथ्वी के गर्भ में कौन-कौन-सी दूरी पर कौन-सा खनिज विद्यमान है। उसके ऊपर यन्त्रों का निर्माण हो रहा है। यन्त्रों में भरण किया जा रहा है मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष में रमण करने वाले मानो देखो, द्यौ में यन्त्रों का व्यवधान हो रहा है। अपनी उड़ाने उड़ी जा रही हैं मेरे पुत्रों! देखो, शिकामकेतु उद्दालक के यहीं बेटा! यह एक यन्त्र था जिसमें नाना प्रकार की आकाश गंगाएं और निहारिकाएं और देखो, उसमें सौर मण्डल दृष्टिपात आता है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा-प्रभु! यह यन्त्र है जो मानो देखो, वेदमन्त्र के आश्रित हैं। वेदमन्त्र अवृतं देखो, अन्तरिक्षं ब्रह्मा प्रह्मो देवत्वां भूतं ब्रह्मणा व्रत्यं प्राणा यह प्राण के आश्रित होने वाला मानो सर्वत्र जगत माना गया है। प्राण ही भोगतव्य और प्राण ही भोगता रहता है। प्राण ही आहार कर जाता है। इसी प्रकार देखो, यह सर्वत्र एक दूसरे में आहार करते हुए दृष्टिपात आने वाला जगत है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा कि नाना पृथ्वियों को आहार करने वाला यह सूर्य है, और नाना सूर्यों को आहार करने वाला बृहस्पति है, और नाना बृहस्पतियों को आहार करने वाला आरुणि है, और नाना आरुणि को आहार करने वाला ध्रुव है,

और नाना ध्रुवों को आहार करने वाला यह मानो देखो, पुष्प नक्षत्र है, और नाना पुष्प नक्षत्रों को आहार करने वाला स्वाति है, और नाना स्वातियों को आहार करने वाला अचंग मण्डल है, और नाना अचंग मण्डलों को आहार करने वाला व्रणकेतु है, और नाना व्रेणकेतुओं को आहार करने वाला श्वेतु है, और श्वेतु को आहार करने वाला नाना श्वेतुओं को आहार करने वाला मौन कृतिका है, और नाना मौन कृतिका मण्डलों को आहार करने वाला बेटा! गन्धर्व गन्धर्व से पूर्व इन्द्रो वशिष्ठ कहलाता है, और नाना इन्द्रो को आहार करने वाला यह गन्धर्व माना गया है।

तो विचार आता है बेटा! एक दूसरें में समाहित होता हुआ यह अनुपम जगत मेरे प्यारे! देखो, यह सौरमण्डलों के रूप में प्रायः दृष्टिपात आता है और नाना सौरमण्डलों का जो नृत्त बनता है बेटा! कए आकाशगंगा बनती है, जब मुनिवरों! देखो, अरबों सौरमण्डल एक रेखा पर आ जाते हैं तो बेटा! एक आकाश गंगा बन जाती हैं। विचार आता है बेटा! एक अरब छयानवें करोड़ उन्नतीस लाख उन्नचसवें हजार पांच सौ इक्कसठ के लगभग बेटा! देखो, इतने सौरमण्डलों की बेटा! एक रेखा पर आ जाने के पश्चात एक आकाश गंगा बनती है, मेरे प्यारे! आकाश गंगा जब बनती है तो आकाश भूतं ब्रह्मे वह मुनिवरों! देखो, एक प्रकार के यज्ञशाला के रूप में यज्ञशाला की विवेचना करता हुआ ऋषि कहता है, सम्भवे ब्रहे देखो, एक दूसरे लोक को और मुनिवरों! देखो, आकाशगंगा वह इसे औरों की वार्त्तालाप इतनी है, जिसके ऊपर मुनिवरों! देखो, आश्चर्य आता है, जैसे अगम्य जल में मानो नाना प्रकार के फल होते हैं, उसी प्रकार आकाशगंगाएं हैं, मानो देखो, जो भ्रमों में अपने को सुसज्जित करती रहती हैं, और मुनिवरों! देखो, लगभग अरबों वर्षों अरबों वर्षों से बेटा! इस प्रकार का नृत्त चल रहा है, चलता ही रहता है, बेटा! देखो, वही अमृतं ब्रह्मे वही आकाशगंगाएं हैं, जो बेटा! देखो,

एक अरब, छयानवें करोड़, बयासी लाख और पिचासी हजार, पांच सौ इक्कसठ के लगभग बेटा! इतनी आकाश गंगाओं का एक निहारिका बन जाती है। तो बेटा! वे एक निहारिका कैसी विचित्र है, जिसके ऊपर ऋषि-मुनि बेटा! अपने में अध्ययन करते रहे हैं। जब मुनिवरों! ऋषिवर अपने समाधिष्ट हो करके बेटा! ब्रह्मरन्ध्र में और ब्रह्मरन्ध्र को मानो देखो, लघु मस्तिष्क में और लघु मस्तिष्क को रेणकेतु मस्तिष्क में ले जाते हैं तो बेटा! ये सब मानो देखो, यह सब नृत्त होने लगता है। और ये नृतिका बन करके धारयामि बन जाता है। तो विचार आता है बेटा! पौने दो अरब लगभग निहारिकाओं के बेटा! देखो, एक अवन्तं ब्रहे देखो, निहारिका और अमृतं ब्रहे व्रत्यं मुनिवरों! देखो, एक अवन्तिका बन करके अपने में धारियामि बन जाते हैं।

तो विचार आता है बेटा! परमात्मा का जगत अनन्मयी हैं तो महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने जब इस यन्त्र का उन्होंने दर्शन कराया तो उन्होंने कहा-प्रभु! मैं अनन्त कह करके प्रभु परमात्मा के ब्रह्माण्ड को मैं मौन हो गया मानो देखो, यदि हम संसार में अभिमान करते हैं, नाना प्रकार की त्रुटियों में युक्त हैं, मानो देखो, हम इस परमात्मा के सृष्टि के कणक के समान भी नही हैं। इतना प्रभु का अनन्तमयी जगत माना गया है मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है सम्भू ब्रह्मा शिकामकेतु उद्दालक ने कहा कि यह एक प्रकार की यज्ञशाला है और यज्ञशाला में मानो एक दूसरें में ओत-प्रोत हो करके मानो यज्ञ अपनी क्रियाशील हो रहा है, और क्रियात्मकता में मानो जगत अपने में रमण कर रहा है, मैं बेटा! इसके विज्ञान में नही ले जा रहा हूँ, क्या एक-एक लोक मानो कैसे अपना नृत्त कर रहा है। इस प्रकार अपना प्रभाव एक दूसरे से प्रभावित कर रहा है। तो बेटा! देखो, ऐसा अनुपम जगत, उस परमपिता परमात्मा की अनन्तमयी एक यज्ञ है, जिस यज्ञशाला का स्वामीतव मानो देखो, वही परमात्मा उसी यज्ञशाला का आयतन है, उसी में ये सब समाहित

रहता है। तो मेरे प्यारे! परमपिता परमात्मा जो ब्रह्माण्ड का स्वामी है, नाना प्रकार की अवन्तिकाओं का स्वामी है, हम उस प्रभु को जानने वाले बनें, और उसके ऊपर अन्वेषण करें विचार-विनिमय करते चले जाएं, जिससे हमारा जीवन एक विज्ञान में परिणत होता हुआ, सागर से पार हो जाएं। उन्होंने कहा-प्रभु! वह एक सौ पांच वर्ष हो गएं हैं, मैं और मेरी देवी हम दोनो याग करते हैं और यागों में परिणत हो करके हम कहते हैं प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा मानो देखो, यह प्राणों से घिरा हुआ यह अनुपम जगत है जिससे मानव के शरीर में प्राण और अपान, उदान, समान इस प्रकार ये उदान बन करके यह अपने में उद्गीत गा रहा है इसी में चित्त का मण्डल विद्यमान है। ऐसे ही यह जो ब्रह्माण्ड है, यह परमात्मा का चित्त कहलाता है, बेटा! देखो, नाना प्रकार की धाराएं विद्यमान रहती हैं और एक धारा दूसरें में परिणत होती रहती है परन्तु देखो, यह सब ब्रह्म सूत्र में पिरोई हुई हैं जैसे प्रत्येक वेद की ऋचा ओ३म् रूपी धागे में ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोऐ जाते हैं, इसी प्रकार वह ब्रह्म में बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड को पिरो लेते हैं वेद का ऋषि तो यहाँ तक कहता है कि इस प्रकार के अनन्य ब्रह्माण्ड हैं मानो देखो, अनन्य ब्रह्माण्ड इस प्रकार के जिसके ऊपर ऋषि मुनि अपने में मौन हो जाते हैं तो आज मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ मैं ईकाई में जाना नही चाहता हूँ विचार-विनिमय क्या ऋषि ने कहा है ब्रह्मचारियों के मध्य में महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने हे ब्रह्मचारियों! जब मैं शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ पंहुचा तो उद्दालक ने मुझे नाना प्रकार के मुझे अपने गोत्रों का वर्णन कराया अपने विचार दिए और मानो देखो, उन्होंने यज्ञशालाओं का मुझे दृष्टिपात कराया एक-एक परमाणु में ब्रह्माण्ड है। वेद के ऋषि ने ऐसे यन्त्र का वर्णन कराया मानो जिस यन्त्र के परमाणु में और परमाणु का जब विभाजन किया गया यन्त्रों के द्वारा मुझे एक

ही परमाणु में विभक्त हो करके नाना ब्रह्माण्ड उसमें दृष्टिपात आने लगे तो बेटा! एक-एक परमाणु में ब्रह्माण्ड हैं, और ब्रह्माण्ड में परमाणु हैं। तो बेटा! देखो, कैसा अनूठा जगत है प्रभु का आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं देने नही आया हूँ। इसकी विवेचना करने के लिए मुझे बहुत समय की आवश्यकता है, आज मैं तुम्हें केवल परिचय दे रहा हूँ, और वह परिचय क्या कि परमात्मा ब्रह्माण्ड है इसके ऊपर विचार-विनिमय करना यह मानव का कर्तव्य है, क्योंकि देखो, मानो जहाँ भी इस प्रकार के विचार अपने में लाना प्रारम्भ कर देता है तो ये जितने भी अशुद्ध जो संकीर्ण विचार है इससे उपराम हो जाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ विचार यह कि परमपिता परमात्मा की महिमा जो ब्रह्म हैं जो मानो देखो, ब्रह्माण्ड का सूत्र है और मानो देखो, सूत्रं यह ब्रह्माण्ड नाना प्रकार के मनके बन करके ब्रह्म सूत्र में पिरोऐ जाते हैं तो बेटा! जगत एक माला के सदृश्य दृष्टिपात आता है तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों के मध्य में कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम मानो देखो, इस प्रकार से अपनी अनुपमता को धारण करने वाले बनो अनुपमता को जान करके तुम अपनी धारा में परिणत हो जाओ तो आओ, मुनिवरों! आओ, यज्ञशाला में विद्यमान हो करके ऋषि-मुनि इस प्रकार का विचार-विनिमय देते रहें हैं और अपना-अपना मन्तव्य देते रहें हैं और मैं विशेष अपना मन्तव्य न देता हुआ अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवां भूतं भवि वर्णाश्चनं आभ्यां देवाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर मे सागर की कल्पना कर रहे है एक-एक बड़े विशाल गागर को सागर में प्रवेश कर रहे थे और मेरा अन्तरात्मा इनके विचारों से ऐसा गद-गद

हो रहा था, जैसे मैं जब पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष हो करके अपने उनके विचार, उनका मानो शिक्षा का जो माध्यम बना हुआ था, मैं उनको श्रवण कर रहा हूं ऐसा मुझे दृष्टिपात आ रहा था देखो, विज्ञानशाला में विज्ञान की प्रायः चर्चा पूज्यपाद गुरुदेव करते रहते थे राजाओं के यहाँ जाते वैज्ञानिकों के मध्य में विद्यालयों में अपनी-अपनी चर्चाएं करते रहे है। इसी प्रकार आज भी कुछ ऐसा अनुभव रहा था जैसे अश्वपति के यहाँ जब जाते वैज्ञानिकों के मध्य में विद्यमान हो करके वह अपना विचार देते तो वह हृदयग्राही होता जब वह भोज्य के लिए कहते तो मेरे पूज्य कहते क्या नही हम राष्ट्र का अन्न नही ग्रहण करेंगे। यह दूषित अन्न होता है क्योंकि अन्न से हमारा मानवीयतव और मन मस्तिष्क अशुद्ध हो जाता है, इसीलिए हमारा देखो, मनं ब्रहे इसी प्रकार का रहने दें तो मानो देखो, इस प्रकार की विचारधाराएं प्रायः पूज्यपाद गुरुओं से प्राप्त होती रही हैं। आज का विचार बड़ा भव्य और आज के मानो देखो, जहाँ हमारी यह वाणी जा रही है। वहाँ एक देखो, याग का आयोजन हुआ मेरा अन्तरात्मा याग के प्रति बड़ा प्रसन्न रहता है, और वर्तमान का जो काल एक भव्य काल चल रहा है यह काल वाममार्ग का काल मैं इसको कहा करता हूँ। जैसे मैंने इससे पूर्व काल में भी वाम मार्गता का वर्णन किया है वाममार्ग कहते हैं, जो उल्टे मार्ग पर चलता है, सुसज्जित मार्ग को जो त्यागता जा रहा है, और सुरा में पान करने में बड़ा मग्न और देखो, गौरव स्वीकार करता है। मानो देखो, मैं विशेष न कहता हुआ, केवल यह कि हे यज्ञमान! तू अपने गृह में द्रव्य का सदुपयोग करता है। द्रव्य को मानो देवताओं को मानं ब्रहे देवताओं के मुख में परिणत कर देता है। जो सर्वत्र मानो देखो, सबको प्राप्त हो जाता है, ऐसा जो क्रियाकलाप है जो हमारे यहाँ, परम्परागतों से इस प्रकार का नृत्त हो रहा है। सृष्टि के प्रारम्भ से ऋषि-मुनियों ने इस क्रियाकलाप को सर्वश्रेष्ठ माना है। क्योंकि इसी से विज्ञान का

ज्ञान होता है, इसी से मानव अपने मस्तिष्क से लघु मस्तिष्क से ले जाता है। इन्हीं विचारों को जान करके वह उग्र रूप बन जाता है। इन्हीं को जान करके ब्रह्म रूप बन करके परमात्मा की सृष्टि को दृष्टिपात करता रहेगा आज मैं देखो, याग के माध्यम से ही मानो देखो, ब्रह्मरन्ध्र से मूलाधार से ले करके ब्रह्मरन्ध्र में प्रवेश कर जाता है। अष्ट चक्रा नौ द्वारा ऐसी तो अयोध्या पुरी है। उसको वह विजय कर लेता है। तो इसी प्रकार मैं विशेष चर्चा ने देता हुआ केवल यह कि हे मानं ब्रहे तू अपने मानवीय जीवन को ऊँचा बनाने के लिए तेरा जो वातावरण है। वह मानो सात्विक होना चाहिए जहाँ तेरा सत्य का विचार हो जहाँ सत्य का व्यवहार हो जहाँ सत्य का ही मानो देखो, तुझे नाना प्रकार का वातावरण प्राप्त हो जाएं, उसी वातावरण के मानो देखो, यज्ञं ब्रहा हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे मैं सदैव यही कामना रहती है। क्या यज्ञमान का अमृतं ब्रहे देखो, उसका सौभाग्य अखण्ड बना रहे, मेरी यह कामना सदैव बनी रहती है और यज्ञमान के साथ मेरा हृदय रहता है। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ पूज्यपाद गुरुदेव से यही कहता रहता हूँ कि आधुनिक समाज में राष्ट्र दोनो को राजा अश्वमेध याग करने वाला हो, प्रजा उसके अनुसार चलने वाली गमन करने वाली हो, माता-पिता देखो, पवित्रता को धारण करते हुए अपने गृह को ऊँचा बनायें और लोक-लोकान्तरों की चर्चा करते हुए अपने मन मस्तिष्क जिससे विशाल होता है। मन मस्तिष्क में एक वैज्ञानिकता आती है। ज्ञान आता है परमात्मा की सृष्टि का बोध होता है, ऐसे क्रियाकलापों को मानव को अपनाना चाहिए आज का विचार मैं विशेष न देता हुआ केवल यह क्या मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब भी अपने विचार देते हैं। तो यह गागर में सागर की कल्पना करते हैं। मैं यह कहता रहता हूँ ब्रह्मे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा है कि राष्ट्रीय अन्न को ग्रहण पूज्यपाद गुरुदेव नही करते थे, और अन्नतं ब्रह्मा वर्णनं जब मैं यह कहता रहता हूँ परन्तु

आधुनिक काल कहता रहता है किसी साधु का महात्मा का देखो, कोई राष्ट्र का कर्मचारी हो, ऊर्ध्वा में देखो, उनके द्वारा आने लगे तो वह अपने में गौरव स्वीकार करता है। वह गौरव चाहिए, क्योंकि उसे अज्ञान है, उसके कारण राष्ट्रीयता के होने के कारण उसे अभिमान की उत्पति वाला भी है तो ऐसा नही होना चाहिए। परन्तु देखो, अभिमान भी एक मृत्यु है, अकारण भूतं ब्रहे देखो, अपने सुयोग्य मनुष्य नही है हमारा आवागमन हो गया है, वह भी मृत्यु है, क्योंकि वह मेरे विचारों से भिन्न है, इसी प्रकार नाना प्रकार का ज्ञान जब हमें होता है, तो प्रायः देखो, हमारे उस ज्ञान के परमात्मा के ज्ञान में संलग्न होते हैं, परन्तु देखो, उससे हमारे जीवन में एक महानता का जन्म होता है, वशिष्ठ मुनि महाराज और विश्वामित्र की चर्चाओं को तो प्रत्येक मानव जानता है, जब तक देखो, विश्वामित्र ब्रह्मवेत्ता के सुयोग्य नही बने, तो कितने कष्ट वशिष्ठ को दिए, परन्तु वह ब्रह्मवेत्ता जब ही कहा है जब उसका सुयोग्य बन गया है। अभिमान उसका नष्ट हो गया है। इसी प्रकार जब इस प्रकार के निष्ठावान प्राणी हो जाते हैं। जैसे महात्मा देखो, देवता हो जाते हैं तो वह मानो देखो, समाज को ऊँचा बनाते हैं। तो विचार-विनिमय क्या हे राजन! तेरा राष्ट्र पवित्र हो और तेरे राष्ट्र में एकोकी ब्रह्म ज्ञान की धाराओं का तुम्हारा राष्ट्र चुना जाएं जब ब्रह्म ज्ञान समाज में नही होगा समाज देखो, बिना ज्ञान के मृत्यु को प्राप्त होता रहेगा राजा में ज्ञान नही होगा इन्द्रियों में संयम नही होगा, तो राष्ट्र मृत्य को प्राप्त हो जाएगा, समाज में नही होगा तो समाज मृत्यु को चला जाएगा इसी प्रकार देखो, विचारों को धारयामि बनाते हुए अपने में ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा को ले करके विज्ञान का सदुपयोग होना चाहिए। द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। इसीलिए मैं यज्ञमान को कहता हूँ हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, और गृह में मानो देखो, देवां ब्रहे यह अग्नि देवताओं का

मुख है। इसको प्राप्त होना चाहिए यह है आज का हमारा वाक् अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरूदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी अपने महानन्द जी ने अपने विचार दियें हैं, उनके विचारों में बड़ी भव्यता रहती है। मानो देखो, उनके विचारों को मानवीय समाज को ऊँचा बनाने के लिए ये उसके जो भव्य विचार हैं मानो वह अपने में बड़े पूर्णतव को प्राप्त होते रहें हैं, आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मां देवाः वचान्नमः। ओ३म् सर्वं भूत्वा आप्यां दधि देवाः ओ३म् दधि मां रेवा वाचन गतो अच्छा भगवन्! आज्ञा आन्नद मंगलं भवति।

२ याज्ञिक बनो २४ ०२ १९९२

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ परम्परगतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। जो परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं, और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है, हमारे यहाँ प्रत्येक वेदमन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का वर्णन होता रहता है, हमारे यहाँ प्रायः वैदिक साहित्य में, ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ी जाती हैं, क्योंकि मानव इस संसार में, नाना प्रकार की प्रबलताओं को ले करके अपने जीवन का उत्थान करता रहा है और यह विचारता रहा है कि मैं विज्ञानवेत्ता बनूं और ज्ञान में पारायण हो करके यौगिकता को प्राप्त हो जाऊं। क्योंकि प्रत्येक मानव के हृदय में यह प्रबलता सदैव रही है। यह इच्छाएं बनी रही हैं कि मैं संसार के प्रत्येक ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में मैं रत्त हो जाऊं। जैसे मानव के नेत्र हैं, वह संसार को दृष्टिपात करके अपने में ओझल हो जाते हैं। जैसे वाणी नाना प्रकार का बखान करती हुई मानो अपने में ही मानो समाहित हो जाती है। इसी प्रकार प्रत्येक मानव के हृदय में यह प्रबलता बनी रहती है, क्या मैं इस संसार को जान करके अपने में ओझल हो जाऊं, और अपने में समाहित हो करके अमृतं हृदयानि गच्छतं ब्रह्मा मानो मैं ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करके अपनी इन्द्रियों में सिमट जाऊं। जब वेद का मन्त्र यह कहता है कि मैं अपने मे सिमट जाऊं, परन्तु सिमटा नही जाता वह अपने में विस्तार को चाहता है, प्रत्येक ज्ञान और विज्ञान को जानता हुआ मानव नाना प्रकार की

उड़ाने उड़ता हुआ उस परमपिता परमात्मा की महिमा में रत्त होना चाहता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमरा वेदमन्त्र यह अपने में अपनेपन की आभा को प्रगट कर रहा है, परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन करते हुए कहा कि प्रत्येक मानव को तपस्वी बनना चाहिए। आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है, तपं ब्रह्मणा तपं देव ब्रह्वा कृतं तपाः प्रत्येक मानव को तपस्वी बनना चाहिए। क्योंकि विद्यालयों में ब्रह्मचारी अध्ययन के लिए जाता है और वह अध्ययन का अभिप्रायः केवल तप कहा जाता है। जब वह ब्रह्मचारी अपने में तपो में निष्ठ हो जाता है। तपों में प्रबलता को प्राप्त कर लेता है। तो बेटा! वह अपने में गार्हपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करता है, और गार्हपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करता हुआ अपने में महानता को प्राप्त करना चाहता है।

आओ, बेटा! आज मुझे एक वाक् स्मरण आ रहा है तपं ब्रह्मणे वाचन्न धनं ब्रह्वा कृतो मानो देखो, प्रत्येक मानव के हृदय में तप की एक पिपासा बनी रहती है क्या मैं तपस्वी बनूं परन्तु वेद का मन्त्र यह कहता है कि तप है क्या? तप के ऊपर इतना ललाहित है। कि तप है क्या? जैसे मेरी पुत्री है, वह बाल्य काल में अपने ब्रह्मवर्चोसि बन करके तपो में रत्त हो जाती है, परन्तु तप करने के पश्चात वह ममतामयी को प्राप्त होती है। इसी प्रकार एक ब्रह्मचारी विद्यालय में तप रहा है, परन्तु तपने के पश्चात वह आचार्यतव को प्राप्त होता है। गार्हपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करता हुआ, अपने को सुसज्जित बनाता हुआ, तपों में मन व्रत्यं मानो तपों में निष्ठ हो जाता है। आओ, बेटा! आज मुझे एक वाक् स्मरण आ रहा है, मैंने ये कागो पूर्व काल में भी तुम्हें यह वार्त्ताएं प्रगट की हैं मानव देखो, एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके, अपने में नाना प्रकार की उड़ाने उड़ता रहा है आओ, बेटा! मैं उस उड़ान में तुम्हे ले जाना चाहता हूँ, मुझे वह काल स्मरण आ रहा है, जिस

काल में बेटा! देखो, वाजश्रवा अपने आसन पर विद्यमान हैं, भंयकर वन में बेटा! देखो, एक समय वह नद के तट पर विद्यमान हो करके वह अपने में विचार-विनिमय कर रहे थे, और विचार यह कर रहे थे कि मैं मोक्ष को जाना चाहता हूँ परन्तु मुझे मोक्ष कैसे प्राप्त हो मैं आनन्द को प्राप्त करना चाहता हूँ। मुझे आनन्द कैसे प्राप्त हो? तो उन्होंने विचारा कि मेरे द्वारा यह जो नाना प्रकार का जो द्रव्य है, इस द्रव्य को मैं हूत करना चाहता हूँ, मानो जब मैं हूत करूंगा, तो मुझे स्वतः मानो मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी। ऐसा वाजश्रवा ने अपने मन ही मन में मानो देखो, विचार-विनिमय करते हुए और ये निश्चय करने लगे कि मैं अपने में याज्ञिक बनना चाहता हूँ, और मैं जितना भी मेरे द्वारा गो है अथवा द्रव्य है उस सर्वत्रता को हूत करना चाहता हूँ, मेरे प्यारे! अपने में निश्चय कर लिया तो निकटतम एक आश्रम था महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज का वह विभाण्डक मुनि के आश्रम में पंहुचे और विभाण्डक मुनि ने उनका स्वागत किया आईए उद्दालक आईए विराजिए क्योंकि वह उद्दालक गोत्र के थे उनको उन्होने आसन दिया और वह विराजमान हो गएं उन्होंने कहा कहो ऋषिवर आज आप अपनी निन्द्रा में शान्त क्यों हैं उन्होंने कहा कि मैं शान्त इसीलिए हूँ क्या मैं आज वेद के मन्त्रों का अध्ययन कर रहा था और वेदमन्त्र अपने में यह उद्गीत गा रहे थे तपं ब्रह्मा तपं प्रह्मे लोकां तपाः क्या अपने मैं यह विचार रहा था कि मुझे तप करना चाहिए कहीं तो मानो तप की मीमांसा में यह आता है कि ब्रह्म हत्या नही होनी चाहिए क्योंकि ब्रह्म हत्या करने वाला महापाप को प्राप्त होता है कही मेरे मस्तिष्क मे यह वाक् आया कि ब्रह्म ज्ञान भूतं ब्रह्मे मानो देखो, द्रव्यों को देवताओं को मुझे सूक्ष्म रूप बना करके देवताओं में प्रसारित कर देना चाहिए परन्तु कही मन में यह आ रहा था क्या आत्मां भूतं ब्रह्मे आत्मा यह ब्रह्म है और इस आत्मा को जान करके तू ब्रह्मतव को प्राप्त हो जा तो प्रभु! सबसे प्रथम मैं एक प्रथम

पगडगडी को ग्रहण करना चाहता हूँ, और पगडगडी यह है कि मैं मेरा जितना द्रव्य है कि सबका मैंने संकल्प किया कि मैं सबको हूत करना चाहता हूँ, मैं याग में परिणत करना चाहता हूँ। जिससे मेरा द्रव्य प्रथम जो कर्म हैं। मेरा वह देवताओं को प्राप्त हो जाएं। तो महर्षि विभाण्डक मुनि बोले कि महाराज! आपके जो विचारों को जो चयन है, वह बड़ा पवित्र है और बड़ा मानो मार्मिकतव माना जाता है आप अवश्य सर्वत्र दान कर दीजिए। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा विश्वश्रवा ने, अपने मे ये निश्चय कर लिया क्योंकि उद्दालक गोत्र, परम्परागतों से बड़ा विचित्रतव चला आ रहा है। क्योंकि उद्दालक गोत्र में नाना ब्रह्मवेता हुए हैं, विज्ञानवेत्ता भी हुए हैं। परन्तु देखो, उनका सबका जो निश्चय किया है वह निश्चयात्मक हो जाता है तो बेटा! देखो, वाजप प्रह्ने वर्णनं मानो देखो, उन्होंने अपने में यह निर्णय कर लिया कि मैं याग करूंगा। विभाण्डक मुनि महाराज ने मानो उसका सर्मथन किया और यह कहा कि जैसा तुम्हारा विचार बन गया है। उस विचार में मैं द्वितीय विचार देना नही चाहता हूँ, अवश्य दान दीजिए मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वाजश्रवा ने अपने में यह निश्चय कर लिया तो बेटा! देखो, वहाँ उन्होंने ऋषि-मुनियों की सभा एकत्रित की जिनमें महर्षि विभाण्डक, महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलभ, और महर्षि दालभ्य और महर्षि श्वेतकेतु, और मुनिवरों! आदि ऋषिवरों का और महर्षि वैशम्पायन और महर्षि शोभनी को भी निमन्त्रित किया, और निमन्त्रित करके उन्होंने अपने में यह मानं ब्रहा विराजामन हो गएं, और यह उन्होंने प्रस्ताव किया कि मेरी इच्छा यह है कि आज मैं न्यौदा में वेदमन्त्रों का अध्ययन कर रहा था, और न्यौदा में वेदमन्त्र यह आया, तपं ब्रह्मणे तपां देवं ब्रह्मा तपं रूद्र प्रह्वा लोकां ब्रह्वा हे प्रभु! यह वेद की आख्यिकाएं मुझे स्मरण आई और वेद की आख्यिका यह कहती है, कि मुझे तप करना चाहिए। मानो तप के लिए मुझे प्रेरित कर रही हैं। तो यह प्रत्येक मानव प्रेरणा को पा

करके अपने में कुछ जानना चाहता है। तो मैं प्रेरणा को प्राप्त हो रहा हूँ। और वेदमन्त्र मुझे प्रेरणा दे रहा है, क्या तुम तपस्वी बनों मैं तप को प्राप्त हो जाऊं ऐसा बेटा! देखो, जब अपने में उद्गीत गाया तो ऋषि-मुनियों ने कहा महर्षि प्रवाहण जी ने कहा कि हे ऋषिवर! आपका विचार बहुत प्रिय कि आपकी तप करने की प्रबल इच्छा है, आप तप अवश्य कीजिए। ऋषि ने कहा कि तप कहते किसे हैं? कि तपो ब्रह्मणा तपां हृदयानि गच्छतं ब्रह्मा क्योंकि यह जो हृदय है, मानो इसको पवित्र बनाने का नाम तप है। जब तक मानव का हृदय पवित्र नही हो जाता है। मन मस्तिष्क मानो प्राणी की प्रतिभा में प्रतिष्ठित नही हो जाते। तब तक मुनिवरों! देखो, यह तपों में रत्त नही हो पाओगे। तो इसीलिए तप किया जाएं तो बेटा! उन्होंने कहा तपं ब्रह्मणे प्रत्येक इन्द्रिय को तपाने का नाम तप है। मानो देखो, जितने यम हैं, जितने भी नियम है, उसी में मानो देखो, यह सब ब्रह्म ज्ञान का प्रबलता रत्त होने लगता है। तो प्रायः आप तप कीजिए। तो बेटा! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य अमृतं ब्रह्मे वर्णासुतं उन्होंने कहा कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने भी तप की इसी प्रकार विवेचना की है। परन्तु देखो, वाजश्रवा के मन में यह विचार भरण करने लगा कि तू तपों में परिणत हो जा। द्वितीय उन्होंने कहा-प्रभु! मेरे द्वारा जितना भी द्रव्य हैं, गो हैं, मैं सर्वत्र को याग के माध्यम से मानो समर्पित करना चाहता हूँ। हे प्रभु! तुम्हारी क्या इच्छा है। उन्होंने कहा यह तो बहुत प्रिय है। क्योंकि हमारे ऋषि-मुनि जब भी साधना में परिणत हुए हैं, उन्होंने अपने अंग-संग को वायु मण्डल को याग के द्वारा पवित्र किया है। वेदमन्त्रों के द्वारा वेदों की ध्वनि में ध्वनित होता हुआ मानो देखो, उसी परमाणुवाद का उन्होंने प्रसार किया है, और नाना प्रसार और नाना प्रकार का साकल्य अग्निं देवतां ब्रहे यह जो अग्नि देवताओं का मुख है और देवताओं के मुखारबिन्दु में सर्वत्र साकल्य उन्होंने परिणत किया है, और वह वायु मण्डल में प्रसारित होता हुआ मानो

देखो, वायुमण्डल अपने मे पूर्ण हो जाता है, और जब मानव तपस्या में परिणत होता है। उन्होंने अपना वर्णन करते हुए कहा महर्षि लोमश मुनि से यह कहा कि हे प्रभु! मैं याग करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा मैं वायुमण्डल को पवित्र बनाना चाहता हूँ। मैं एक अनुष्ठान करना चाहता हूँ उन्होंने कहा बहुत प्रियतम मेरे प्यारे! देखो, ज्ञान के माध्यम से अथवा मन को पवित्र बनाने का प्रयास करते रहें हैं बेटा! मुझे उनका जीवन स्मरण आता रहा है वह जब तपस्या में परिणत हो गएं अनुष्ठान करने लगे तो बेटा! देखो, वह याग के माध्यम से जो भी विचार जो भी तरंगे मानो देखो, द्यौ लोक को जाती दृष्टिपात होती वह उनको प्रायः अपने में योगाभ्यास के द्वारा साक्षातकार दर्शन करते रहे हैं मेरे प्यारे! देखो, वह सांयकाल को लोमश मुनि के समीप विद्यमान हो करके अपनी प्रगति का वर्णन करते रहे हैं उन्होंने कहा-प्रभु! आज मुझे और देखो, याग की तरंगो में से अमुक देवता का भान प्राप्त हुआ है आज मैं अग्नि की धाराओं पर मेरा शब्द विद्यमान हो करके वह द्यौ में वह स्वाहाः में प्रविष्ट हो करके मानो देखो, सत्य में परिणत हो गया है। इस प्रकार बेटा! जब कागभुषुण्ड जी अपनी वार्त्ताओं को प्रगट करते रहे, तो बेटा! एक समय उन्होंने अमृतं ब्रह्मा वर्णनं देवो देखो, श्वेतकेतु मुनि महाराज अपने ब्रह्मचारियों को अध्ययन करा रहे थे और अध्ययन करा करके उनके मानो ब्रह्मचारियों को दण्डित किया और दण्डित करने के पश्चात उनका रजोगुण बन गया जब रजोगुण की प्रवृत्तियां उत्पन्न हो गईं। तो बेटा! देखो, वह बेटा! ब्रह्मणे प्रमाणां ब्रह्वे मुनिवरों! देखो, वह तमोगुण की प्रवृत्ति भी उनके हृदय में प्रवाहित हो गई। तो बेटा! देखो, वह वहाँ से दण्डित करके ब्रह्मचारियों को और वह तमोगुण की भाव प्रवृत्ति को ले करके वहाँ से गमन किया तो प्रातःकाल में महर्षि कागभुषुण्ड जी अपने आश्रम में याग कर रहे थे। नाना प्रकार के साकल्य के द्वारा अग्नि को समर्पित कर रहे थे, अग्नि को

हूत कर रहे थे तो मेरे प्यारे! देखो, वह श्वेत्ता ब्रह्मचारी वह देखो, उसी याग में आहुति प्रदान करने लगे, जैसे आहुति प्रदान करने लगे तो बेटा! उनकी तरंगे जो तमोगुणी तरंगे थी, रजोगुणी मानो जो धाराएं थी वह देखो, याग के साथ में मानो देखो, साकल्य के स्वाहाः के साथ में अन्तरिक्ष में गमन करने लगी जब अन्तरिक्ष में गमन करने लगी। तो मुनिवरों! देखो, कागभुषुण्ड जी जब समाधिष्ट हुए और वह साकल्य को प्रदान करने लगे तो बेटा! देखो, तमोगुण तरंगे उनको स्पर्श करने लगी जब रजोगुण, तमोगुण दोनो प्रकार की तरंगे उन्हें स्पर्श करने लगी। तो उन्होंने अपना याग शान्त कर लिया उन्होंने कहा हे ऋषिवर! हे श्वेत्ता ऋषिवर! आप यह तमोगुण और रजोगुण मेरे याग में क्यों परिणत कर रहे हैं। हे प्रभु! मेरा याग अशुद्धता को प्राप्त हो जाएगा मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने यह वाक् स्वीकार कर लिया और उन्होंने बेटा! देखो, लगभग बारह दिवस तक उन्होंने वायु का सेवन किया, और वायु का सेवन करके जब तमोगुण की प्रवृत्तियां जब वायुमण्डल में से दूरी चली गई परन्तु देखो, इस प्रकार का ये नृत्त क्रिया होती रहती है। तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि कहता है तपं ब्रह्मे अग्नं ब्रह्मा देवत्वाहं तो बेटा! देखो, महर्षि प्रवाहण जी ने यह वाक् उन्हें प्रगट कराया और उन्होंने वाजश्रवा से कहा, क्या इस प्रकार की मानो देखो, याग की अपने में सूक्ष्मतम है। तुम पूर्व तपस्या करों, और अपने विचारों को मन मस्तिष्क को ऊँचा बना करके जब तुम याग में परिणत हो गएं, तो याग तुम्हें मानो देवपुरी को प्राप्त करा देगा। और वह याग की जो अमृतं तुम्हारे हृदय की जो तरंगे है, वह द्यौ में प्रवेश हो जाएगी। इस प्रकार बेटा! देखो, देखो, इतने में उन्होंने वर्णन किया उन्होंने कहा ऐसा ही होगा। तो मेरे प्यारे! ऋषि महर्षि दालभ्य उपस्थित हुए और दालभ्य जी ने यह कहा कि हे ऋषिवर! तुम आध्यात्मिक याग करना चाहते हो या भौतिक पिण्ड के द्वारा, उन्होंने कहा कि मैं आध्यात्मिक और पिण्ड को दोनों को एक

समन्वय करना चाहता हूँ क्योंकि संसार में यह नियमावली बनी हुई है। क्या पिण्डे ब्रह्मण्डे क्या जो मानो ब्रह्माण्ड में गति हो रही है। वही पिण्ड में गति होती है, और पिण्डे सो ब्रह्माण्डे मैं दोनो प्रकार के याग को व्यवधान करना चाहता हूँ। अपने में रमण करना चाहता हूँ वाजश्रवा के वाक्यों को पान करके महर्षि दालभ्य जी ने यह कहा कि मैं जब अपनी माता की लोरियों का पान करता था, तो माता मुझे ब्रह्मवेत्ता बनानी चाहती थी, क्योंकि माता मल्दालसा मेरी माता रही हैं, और माता मलदाल्सा मानो देखो, सतोगुणी का उपदेश देती रहती परन्तु माताएं जो होती हैं वह गर्भस्थल में जब ब्रह्मचारी को ब्रह्म का उपदेश दे देती हैं। तो विचार धारा बनी रहती है और जब वह बाह्य जगत में आता है। तो बाह्य जगत में मानो देखो, उसको सूक्ष्म से जागरूक करके वह संस्कार उदबुद्ध हो जाते हैं। तो मेरे हृदय के जो मेरे अन्तःकरण में माता के दिए हुए है। वह संस्कार उद्बुद्ध होते रहे हैं। परन्तु मैं उसमें भौतिक याग और आध्यात्मिक प्रायः देखो, दोनो का अपने में अनुसन्धान करता रहा हूँ, हमारे वंश में नाना प्रकार के देखा आचार्यजन हुए हैं, और महर्षि हुए हैं जिन्होंने इस प्रकार का व्यवधान किया है। क्या मानो देखो, मैं यह कहा रहा हूँ कि तुम आध्यात्मिकवाद को ऊँचा बनाना चाहते हो, या भौतिकवाद को तो ऋषि ने कहा क्या मैं दोनो प्रकार के विज्ञान को जानना चाहता हूँ। सबसे प्रथम भौतिकवाद को ऊँचा बनाऊं। भौतिकवाद के पश्चात आध्यात्मिकवाद ऊँचा बनता है। तो बेटा! देखो, हमारे विचारों में यह आता है कि आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनो ही मुनिवरों! अपने में रत्त रहने चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, जब इस प्रकार जब महर्षि प्रवाहण जी ने यह वाक् कहा तो मुनिवरों! उद्दालक ब्रह्मर्षि महर्षि दालभ्य ब्रह्मे अपने में मानो देखो, उद्बुद्धता को वर्णन करने लगे, तो महर्षि शिलभ महर्षि दालभ्य और प्रवाहण जी ने बारी-बारी उपस्थित हो करके कहा कि मेरी माताएं सदैव देखो, ब्रह्म का उपदेश देती

रही हैं। इसी प्रकार हम ब्रह्मवेत्ता हैं, और आप भी ब्रह्मवेत्ता की कोटि में परिणत हो जाईयें। मेरे प्यारे! देखो, अपने में शान्त हो गएं इतने में मुनिवरों! देखो, महर्षि शृंगी ने कहा कहो भगवन! आपं ब्रह्मे और याग मानो देखो, तुम्हारा कर्तव्यवाद माना गया है। तुमने याग के ऊपर दो सौ चौरासी वर्ष तक का अध्ययन किया है, तो आप वर्णन कराईए। तो महर्षि शृंगी ने कहा कि मेरे विचार में तो प्रायः ऐसा आता है, क्या यह अन्वेषण का विषय है, अपने में मानो देखो, मार्मिक विषय कहा जाता है। याग के बहुत प्रकार के व्यवधान माने जाते हैं। जिससे आत्मा का उत्थान किया जाता है इसीलिए तुम्हारा आध्यात्मिकवाद अपने में मानो देखो, पवित्रता की आभा में सदैव रत्त रहा है तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने यह प्रसंग आचार्य से कहा हे आचार्य विश्वश्रवा! तुम्हारे हृदय में यह आशंका और तुम्हारे हृदय में यह विचार कैसे उत्पन्न हुए हैं। क्या मैं याग में परिणत होना चाहता हूँ मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वाजश्रवा ने कहा हे भगवन! मेरे विचारं ब्रहा मेरे यह विचार इसीलिए बनें हैं। क्योंकि मैं जब बाल्यकाल में माता की लोरियों का पान करता था तो माता अपने मानो लोरियों का पान करा करके उसके हृदय में यह आशंका बनी रहती है कि मुझे याज्ञिक बनना चाहिए मैंने पुत्र याग किया है, तो पुत्र याग के पश्चात मानो देखो, आध्यात्मिक याग भी करना चाहिए, और आध्यात्मिक याग के पश्चात भौतिक याग में भी परिणत होना चाहिए, तो मानो देखो, यह मेरी माता के उद्बुद्ध विचार हैं इन्ही विचारों के साथ में मैं प्रायः देखा अपने विचारों का व्यवधान करता रहता हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो, वाजश्रवा ने कहा-प्रभु! मेरी कितनी प्रबल इच्छा बनी रहती है। क्या मैं माता की आज्ञा का पालन करूं। मैं आध्यात्मिक भौतिक और देखो, भौतिकता में परिणत हो जाऊं जिससे मानो देखो, मेरा जो अन्तरात्मा है यह मुझे प्रेरणा देता है, और जो आत्मा की वाणी को प्रेरणा को जो स्वीकार करता है। वह ब्रह्मजिज्ञासु कहलाता है।

मोक्ष प्राप्ति का मार्ग

मैं ब्रह्म जिज्ञासु बनना चाहता हूँ, हे प्रभु! ब्रह्मणे ब्रहाणं ब्रह्मा ब्रह्म लोकां वाचसुतं और ब्रह्म हत्या नही करना चाहता हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषियों ने कहा कि ब्रह्म हत्या का अभिप्रायः क्या है? तुम ब्रह्म हत्या किसे स्वीकार करते हो उन्होंने कहा कि मैं ब्रह्म हत्या उसे कहता हूँ, जो आत्मा की प्रेरणा को अपने में स्वीकार नही कर रहा है वह ब्रह्म हत्या कर रहा है। तो मैं यह चाहता हूँ कि मेरी आत्मा से मुझे प्रेरणा समाप्त हो रही है। मैं प्रेरणा का स्रोत बनना चाहता हूँ, और प्रेरणा को पा करके मैं आत्मवेत्ता बन जाऊं। मैं ब्रह्म रक्षक बन जाऊं। मेरे प्यारे! क्योंकि आत्मा को ब्रह्म कहते हैं, इसीलिए आत्मा की प्रेरणा को मानो नष्ट नही करना चाहिए। आत्मा का सम्बन्ध हृदय से रहता है और हृदय मानो देखो, परमात्मा से सम्बन्धित रहता है। देखो, हमारे यहाँ जो नाना प्रकार की बुद्धि का जो व्यवसाय है, मानो देखो, जैसे मेधा है, ऋतम्भरा है, प्रज्ञा है, यह मानो देखो, एक दूसरी बुद्धि को जान करके हम प्रभु का दर्शन करते हैं। हम ब्रह्म का दर्शन करते हैं और आत्मा रूपी देखो, यह जो ब्रह्म है, उसको हम जानते हुए उसी प्रेरणा के साथ साथ इन्द्रियों का व्यवसाय बनाते हैं। अथवा इन्द्रियाँ आत्मा की प्रेरणा के साथ में प्रेरित हो करके मानो क्रियाकलाप करती हैं। और जो मानो देखो, आत्मा की प्रेरणा प्राप्त हो रही है, और प्रेरणाओं को जो नष्ट कर रहा है वह ब्रह्म हत्या कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्महत्या का अभिप्रायः यहाँ ब्रह्मवेत्ता का अपमान भी नही होना चाहिए। बेटा! जो ब्रह्म का बखान कर रहा है, ब्रह्म का उद्गीत गा रहा है, मेरे प्यारे! देखो, उस ब्रह्म को हत्यां ब्रहे उसके वाक्यों को स्वीकार करके हमें भौतिकवाद को ऊँचा बनना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया और उन्होंने कहा-प्रभु! इसीलिए मैं अपनी आत्मा की देखो, ब्रह्म हत्या नही करना चाहता हूँ। याग करना चाहता हूँ मेरे प्यारे! देखो, महर्षि श्रृंगी ने कहा-प्रभु! तुम्हारा विचार मानो प्रबल है। परन्तु इन

विचारों के लिए तुम तपस्या करो तपस्वी बन करके तपस्या करो और इन्द्रियों को मानो इन्द्रियों के विषयों का तुम साकल्य बनाना जानों जब तक इन्द्रियों का तुम साकल्य नही बनाओगे। जब तब मानो तुम्हारा यह याग सम्पन्न नही होगा। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा-प्रभु! मैं साकल्य कैसे बनाऊं। उन्होंने कहा तुम नेत्रों में अग्नि का भान करो और देखो, नेत्रों में अग्नि का वास रहता है, और श्रोत्रों में दिशाओं का अन्तरिक्ष का वास रहता है, और घ्राण में पृथ्वी का वास रहता है, और त्वचा में वायु का वास रहता है, और मानो देखो, तुम्हारी वाणी में जल का वास रहता है। जल में शीतलता है, अग्नि में ऊष्णता है, और देखो, यह जो तुम्हारी पृथ्वी है। इसमें गुरूतव है। जो पिण्ड बनाने की शक्ति देखो, इसमें विद्यमान रहती है और वायु में प्राण रहते हैं। जो प्राण मानो देखो, प्राण अपान, उदान, बन करके देखो, क्रियाकलाप करते हैं, या बाह्य जगत में भी करते हैं और देखो, यह जलं ब्रह्मा यह जो वाणी का रस है, और जल और देखो, गुरूतव अग्नि बन करके पिण्ड का निर्माण करते हैं और पिण्डों का निर्माण कार्य जितना भी लोक-लोकान्तरवाद है। जितना भी यह पिण्डवाद है। चाहे वह माता के गर्भस्थल में बाल का पिण्ड बन रहा हो चाहे वह अन्तरिक्ष में मानो देखो, यह नाना पृथ्वियों के निर्माण हो रहे हो, पिण्ड बन रहे हों यह पिण्ड मानो देखो, तीनों के कारण बनते और प्राण सत्ता इसमें विद्यमान रहती हैं और देखो, अवकाश रहता हैं। जिसमें भ्रमण कर सकें तो इस प्रकार मानो देखो, तुम सब का साकल्य बनाओं, और साकल्य बना करके और वह जो तुम्हारा देखो, मन, बुद्धि, चित, अहंकार का जो आन्तरिक जगत है। जैसे बुद्धि के व्यवसाय हैं, जैसे बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा, प्रज्ञा इनके जो क्रियाकलाप है। मानो देखो, बुद्धि से दृष्टिपात किया जाता है, और मेधा से उसको जाना जाता है। और मेधा से जान करके ऋतम्भरा से मौन हो जाता है और प्रज्ञा में जा करके चेतना का दर्शन करता है चेतना का

दर्शन करना ही मानो देखो, साकल्य उसमें परिणत करना है। तो इसी प्रकार तुम्हें प्रतीत मानो तत्त्वों का साकल्य बना करके इन्द्रियों का साकल्य बना करके और तुम यह जो हृदय रूपी मानो देखो, षट कोण है, यज्ञशाला है, उसमें तुम हूत करना प्रारम्भ करो, तो मानो देखो, तुम्हारे हृदय हृदय से समन्वय हो जाएगा। परन्तु देखो, हृदय से हृदय का मिलान हो करके वही हृदय अगम्य बन करके तुम्हारे लिए ज्योति बन करके अपने में ज्योतिवान हो जाएगी। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो ऋषि वाजश्रवा अपने में मौन हो गएं। उन्होंने कहा-प्रभु! मैं भौतिक पिण्ड में देखो, भौतिक याग करना चाहता हूँ। तुमने आध्यात्मिक याग की चर्चाएं की मैं भौतिक साकल्य को कैसे बनाऊं। उन्होंने कहा भौतिक साकल्य अपनी भावना से एकत्रित करो अपनी भावनाओं की पुट देना प्रारम्भ करो जैसे एक वैद्यराज है। एक औषध बनाता है। परन्तु उन औषधियों में नाना प्रकार की पुट देता रहता है, अथवा भावना देता रहता है तो जितनी भावना दोगे उतनी प्राण शक्ति उत्पन्न हो जाएगी इसी प्रकार हम जितनी भी अपने विचारों में भावना देना प्रारम्भ करोगे, उतनी तुम्हारा विचार तुम्हारा मन मस्तिष्क पवित्र बनता चला जाएगा। मन में पवित्रता आ जाएगी और उसके पश्चात जब तुम याग करोगे तो याग तुम्हारा सफलता के मार्ग पर चला जाएगा तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो सभा बेटा! देखो, यहीं आ करके शान्त होने लगी, तो विचार यह आत रहता है बेटा! उन्होंने भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार दे करके कहा क्या जो मानव याज्ञिक होते हैं। वह मृत्यु को अपने में विजय कर लेते हैं उनकी मृत्यु नही हुआ करती है। क्योंकि वह इन्द्रियों में जय होते हैं, और इन्द्रियों के साकल्य को हृदय में और हृदय के भाव बाह्य जगत में और बाह्य जगत को मानो देखा बाह्य जब साकल्य में जब परिणत कर देते हैं। तो उस मानव की मृत्यु नही होती। क्योंकि वह बाह्य

जगत को भी जानता है, और आन्तरिक जगत को भी जानता है और दोनो जगतों का जब वह समन्वय कर देता है। बेटा! मृत्यु उसकी नही हो पाती तो विचार आता रहता है। आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा प्रगट करना नही चाहता हूँ। केवल विचार-विनिमय यह केवल वाजश्रवा ने ऋषि-मुनियों की आज्ञा पा करके अपने में यहाँ देखो, बेटा! देखो, याग का एक व्यवधान बनाया और याग के कर्म काण्ड की प्रतिभा का अपने में धारयामि बना करके बेटा! देखो, शिल्पकारों को आज्ञा दी हे शिल्पकारों! तुम मेरे यहाँ एक यज्ञशाला का निर्माण करो तो बेटा! उन्होंने यज्ञशाला का निर्माण किया और निर्माण करके मानो देखो, भौतिक तत्त्वों भौतिक रूप को ले करके उन्होंने मानो देखो, उसी प्रकार का निर्माण किया। जिसमें बेटा! देखो, वह तीन प्रकार की वेदियों का निर्माण किया जिसमें बेटा! देखो, दैविक आधि, आधि भौतिक यह तीन प्रकार की प्रतिभा मानी जाती हैं। तीन ही प्रकार के गुण माने जाते हैं मुनिवरों! रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण और तीन ही प्रकार के मानो तीन विद्या मानी जाती हैं। ज्ञान कर्म और उपासना तो बेटा! देखो, तीन मात्राएं शिक्षा के माध्यम में अ,उ और म् इन तीन मात्राओं को बन करके बेटा! परमात्मा की प्रतिभा परमात्मा का देखो, मूल रूप उसके नामों का उच्चारण किया जाता है। तो इसी प्रकार बेटा! र्भु, भुवः स्वः यह तीन प्रकार के मण्डल माने जाते हैं। और तीन प्रकार के परमाणु हैं बेटा! तेजोमयी, तरलतव और गुरूतव यह तीन प्रकार के परमाणुओं में सर्वत्र विज्ञान बेटा! अपनी आभा में रमण कर रहा है और इसी से पिण्डों का निर्माण होता है तो मेरे प्यारे! देखो, यह र्भु, भुवः स्वः और तीन प्रकार की प्रतिभा कही जाती है बेटा! रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण यह तीन प्रकार का देखो, तप कहा जाता है। सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण बेटा! देखो, मैं इस प्रकार त्रैतवाद की चर्चा करना नही चाहता हूँ। क्योंकि सृष्टि की रचना भी ती ही कारणों से होती है।

बेटा! देखो, एक रचना करने वाला एक जिससे रचना होती है वह पदार्थ और देखो, जिसके लिए वह रचना की जाती है। वह आत्मा जैसे आत्मा भोगतव्य है, और परमात्मा रचनाकार है और प्रकृति बेटा! देखो, रचना में आने वाली है इसके तीन ही गुण माने गयें है, तो आज बेटा! मैं तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह जो आज हम बेटा! देखो, त्रैतवाद को ले करके साम्य विचार को ले करके अपनी साम्य आभा में रमण कर जाएं। तो इसीलिए बेटा! देखो, वेद का ऋषि कहता है, तपं ब्रह्मणां ब्रहे ब्रह्मा जो बेटा! मानो देखो, यह मानव नाना प्रकार की तरंगों में तपता है। वह तपस्वी कहलाता है तो वेद के ऋषि ने कहा हे मानव! तू तपस्या में परिणत हो जा और तू तपों में निष्ठ हो करके तपोमयी धारा को अपनाने का प्रयास कर।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए और वाजश्रवा के याग की जो मैं चर्चा कर रहा था बेटा! वाजश्रवा का वह तपं ब्रह्मा ऋषि-मुनियों का एक ही मन्तव्य रहा है कि तुम तप करों परन्तु देखो, वह तप याग के माध्यम से करो, और याग को तुम मानो देखो, तप का पुंज मानो और देवताओं का साकल्य बना करके मानो देखो, अग्नि देवा मुखा अग्नि को देवताओं का मुख स्वीकार करते चलो, मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि-मुनियों ने इस प्रकार वार्त्ता प्रगट की यह निश्चय हो गया कि मेरे द्वारा जो द्रव्य है। मैं सबका याग करना चाहता हूँ, मैं भौतिकता को ऊँचा बनाऊँ, मेरा भौतिकवादयदि ऊँचा होगा तो आध्यात्मिकवाद की भी ऊर्ध्वा में उड़ान उडुंगा तो बेटा! देखो, इस प्रकार उन्होंने अपना विचार बनाया और विचार बना करके मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनियों की आज्ञा पा करके उन्होंने कहा कि अब यज्ञशाला का निर्माण होने जा रहा है। मैं अपने गृह में प्रवेश हो जाऊं। वह गृह में पंहुचे तो देखो, उनकी पत्नी ने कहा देव आप बहुत समय के पश्चात

आपका पर्दापण हुआ है। आप कैसे शून्य हो रहे हैं। उन्होंने कहा-देवी! मैं एक याग करना चाह रहा हूँ, उन्होंने कहा बहुत प्रिय भगवन! यह तो आपके सुविचार है, आपका पुण्यार्थ भूतं ब्रह्मणा लोकां वेद का वाक् कहता है कि आपका कोई पुण्य उदय हो गया है। आपके हृदय में कोई संस्कार माधुर्यता में उत्पन्न हो गएं हैं। आप याग अवश्य कीजिए तो बेटा! वाजश्रवा ने अपनी पत्नी से उसका वाक् श्रवण करके बड़े उत्साहित हुए उन्होंने कहा-देवी! तुम्हें धन्य है, मानो देखो, दोनो का एक ही विचार बन करके मानो देखो, यागाम् भूतं ब्रह्मे बेटा! उन्होंने याग का प्रारम्भ किया तो विचार आता है बेटा! याग की चर्चा तो मैं तुम्हें कल ही प्रगट करूंगा। आज तो मैने याग की प्रस्तवाना अथवा उसके जो भिन्न-भिन्न प्रकार के जो विचार है, वह मैंने प्रगट करायें हैं, क्या देखो, जो यज्ञशाला का जो निर्माण हुआ तीन प्रकार के देखो, उसमें भौतिक, आधि दैविक, आधि भौतिक यह बेटा! तीन प्रकार के उत्पन्न होते है। मानो जो मैंने त्रैतवाद की मैंने अभी-अभी चर्चाएं की मानो त्रिकाल में यह संसार विभक्त हो रहा है तीन ही काल होते हैं। बेटा! देखो, जिनमें ज्ञान, कर्म, उपासना निहित रहते हैं। सबसे प्रथम ज्ञान है उपासनं ब्रह्मे देखो, ज्ञान और कर्म और उपासना मानो देखो, उपासना साम को कहते हैं, साम कहते हैं मिलन को मेरे प्यारे! देखो, और यजु कहते हैं, कृतिका मानो देखो, कर्म को और मुनिवरों! देखो, चरेवेति इदं ब्रह्मा वर्णनं बेटा! देखो, ऋक का अर्थ है ब्रह्मणे चरेवेति क्या तुम गति करने लगो ज्ञान में गति करते रहो उस समय ज्ञानी बन करके तुम ब्रह्म ज्ञान में परिणत हो जाओ। तो इसीलिए बेटा! ज्ञान कर्म उपासना का अभिप्रायः बन करके बेटा! देखो, वह तीन पड़ियां का निर्माण होता है। मेरे प्यारे! देखो, अग्नि तीन प्रकार की मानो देखो, आभा को ले करके उत्पन्न होती है। मानो देखो, काष्ठ में रहने वाली अग्नि और देखो, जो गृहपथ्य माता-पिता के मध्य में अग्नि रहती है। एक अग्नि वह है जो

वानप्रस्थ के हृदय में पनपती है। यह तीन प्रकार की अग्नियों का व्यवधान अग्नि के प्रदीप्त होते उसमें बेटा! भाव उत्पन्न हो जाते हैं। तो आज बेटा! मैं तुम्हे इतने गम्भीरताओं में तुम्हें नही ले जा रहा हूँ, केवल विचार-विनिमय केवल यह आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है वेदमन्त्र कहता है, सम्भवं ब्रहे कृतं देवतवां ब्रह्मा बेटा! वाजश्रवा के मन में यह विचार आया क्या मैं तपस्वी बनूं और तप जब बनेगा जब ज्ञान होगा और ज्ञान मेरे प्यारे! देखो, आधिभौतिक, आधि दैविक, और दैविक यह तीन प्रकार की आभाओं में ज्ञान विद्यमान रहता है।

तो आओ, मुनिवरों! देखो, विशेष चर्चा न देता हुआ आज का विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा को जान करके बेटा! इस सागर से पार होने का प्रयास करें। प्रत्येक मानव का एक ही मन्तव्य रहा है, क्या मैं इस संसार से पार होना चाहता हूँ, और मैं नाना प्रकार की आभा को जान करके अपने मे ओझल हो जाऊं तो बेटा! देखो, ज्ञान और विज्ञान में रत्त होना अपनेपन को जानना यही बेटा! देखो, आज के विचारों का हमारा मन्तव्य है। आज के विचारों का अभिप्रायः क्या क्या वेद हमें क्या कहता है? वेद कहता है तुम याज्ञिक बनो और तुम आध्यात्मिक और भौतिक दोनो प्रकार के याग में पारायण हो करके और मृत्यु से विजय हो जाओ। क्योंकि मृत्यु से विजय होना ही मानवीयतव कहलाता है। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां मनु गायन्त्वा रथं ब्रह्मा वा याः। ओ३म् पृतां रथं वायु गताः मां प्राची ऋवृवृणाः वाचन्नमाः। ओ३म् देवं भद्रा ग्राहणां त्वा यम सर्वा।

३ मोक्ष प्राप्ति का मार्ग २५ ०२ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा का महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं, और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आता रहता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है। कोई स्थली ऐसी नही हैं, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो कोई भी पर्वतों की गुफा ऐसी नही है, जहाँ वह देव विद्यमान न हो समुद्रों की कोई भी तरंग ऐसी नही है। जहाँ वे परमपिता परमात्मा तरङ्गित न हो क्योंकि वह इस ब्रह्माण्ड का संचालन करने वाले हैं, और उसका नियमन कर रहे हैं। क्योंकि नियमन जो धारण करने वाला है, वही तो परमपिता परमात्मा कहा जाता है। तो इसीलिए जितना भी नियमन हो रहा है चाहे वह सूर्य की किरणों में विद्यमान हो चाहे वह जो प्रकाश तारामण्डलों से प्रकाश आ रहा है। चाहे वह मानो नाना प्रकार की माला के रूप में यह जगत दृष्टिपात आ रहा है, यह परमपिता परमात्मा का नियमन है, और उसके नियम को गति दे रहा है। सूर्य प्रातःकाल में उदय होते हैं, सांयकाल को अस्ताचल को चले जाते हैं। चन्द्रमा अपनी मानो कलाओं से युक्त होते हैं, और अपनी ही कलाओं में मानो देखो, वह समाहित हो जाते हैं। मानो देखो, आज कहीं पूर्णिमा का दिवस है, कहीं मानो वही दिवस अमावस्य के रूप में परिवर्तित हो जाता है। कही बेटा! यह शुक्ल पक्ष के रूप में है, कही कृष्ण

पक्ष के रूप में विद्यमान रहता है, यह परमपिता परमात्मा का नियम है, नियम मानो यह गतिवान हो रहा है, तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन करते रहते हैं, और अपने में यह विचारते रहते है। कि वे परमपिता परमात्मा हमारा देव हैं, और हमें मानो संचालन और प्रेरित कर रहा है, और मानव उसी की प्रेरणा को प्राप्त करता हुआ। मानव महान और पवित्रता को प्राप्त हो जाता है। तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा को सर्वत्र और इस ब्रह्माण्ड का संचालन स्वीकार करें एक-एक परमाणु में परमपिता परमात्मा विद्यमान है, और उनकी तरंगों में वह तरंगित हो रहे हैं, और अग्नि अपने में मानो देखो, प्रकाश में और वह स्वतः अपने में प्रकाश और वह अपने में किसी के प्रकाश को ले करके प्रकाशित हो रही है। तो इसीलिए वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है, और उसका जो ज्ञान और विज्ञान है, वह भी अनन्तमयी माना गया है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं। परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वह सीमा से रहित हैं, सीमा में आने वाले नही हैं, इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसकी महानता का सदैव अपने में मानो देखो, वर्णन करते रहते हैं। विचारते रहते हैं कि वे परमपिता परमात्मा का अनुपम यह जगत है। और मानो वही इसका निर्माण करने वाला है, वही मानो इसको नियम में नियमन कर रहा है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद का मन्त्र यह उद्गीत गा रहा है, कि हे मानव! तू परमपिता परमात्मा को महती अथवा उसकी अनन्त महिमा को जानने का प्रयास कर तो मुनिवरों! यह मनं ब्रह्मा यह शरीर रूपी रथ में विद्यमान होने वाला आत्मा है। परन्तु देखो, मन इसका सारथी बना हुआ है, और यह पांच ज्ञानेन्द्रियाँ और पांच कर्मेन्दियां इसके अश्व कहलाए

जाते हैं, और आत्मा इसमें विद्यमान है। वह इस शरीर को संचालन कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, मन ब्रह्मणे यदि पवित्र है, तो यह मानो देखो, यह जो रथ है, यह ऊर्ध्वा में गमन करता हुआ अपने निश्चित स्थान पर मानो स्थिर हो जाएगा और यदि मन में देखो, विकृता हैं मन में यदि पवित्रता नही है तो देखो, यह जो रथ है यह जो शरीर रूपी रथ है। यह मानो कहीं न कहीं किसी ऐसी स्थली पर जहाँ जाएगा जहां ये स्थित स्थान पर जाना है। वहाँ नही पंहुच पाता वहा न जा करके मुनिवरों! ये अपने में विकृता को प्राप्त हो जाता है।

तो आओ, बेटा! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करना नही चाहता हूँ, केवल विचार-विनिमय ये कि हमारा वेद का मन्त्र क्या कहता है वेद की एक-एक आख्यिका हमें उस मार्ग के लिए प्रेरित करती रहती हैं। जहाँ हमारा जीवन मानो स्थित हो जाएं और हम अपने में ब्रह्मवादी बन करके और इस सागर से पार होने का प्रयास करें।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें ऐसी स्थली पर ले जाना चाहता हूँ। जहाँ हमारा यागों का एक क्रियाकलाप चल रहा है, जहां ऋषि मुनियों की वार्ताए प्रारम्भ हो रही हैं, वहाँ बेटा! ऋषि-मुनि बेटा! अपना-अपना मन्तव्य देते रहें हैं। आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें उसी उद्दालक गोत्र में ले जाना चाहता हूँ। वहाँ उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि हुए हैं। परन्तु कोई ऋषि उनमें विशेष में ब्रह्मवेत्ता विशेषकर रहे हैं, और कोई-कोई विज्ञान में भी पारायण रहे हैं, जैसे शिकामकेतु उद्दालक विज्ञान में बड़े पारायण थे, एक-एक तरंगों के ऊपर वह अन्वेषण करते रहें। परन्तु यहाँ भी यागों का प्रकरण परन्तु यागों के माध्यम से जो मानव के हृदय में एक उज्ज्वलता का जन्म होता है। मैं उसके ऊपर तुम्हें अपना विचार देना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहा है। जब नाना ऋषिवर विद्यमान हो करके महाराजा वाजश्रवा के यहाँ

देखो, यागां का कर्म प्रारम्भ हुआ, मेरे प्यारे! देखो, महात्मा यज्ञं ब्रहा देखो, वह वाजश्रवा उस याग के यज्ञमान बनें, और उनकी पत्नी मानो अपनी स्थली पर विद्यमान हो गई। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज उस याग के अध्वर्यु उद्गाता बने मानो देखो, अध्वर्युं ब्रहा मुनिवरों! देखो, अपने में अपनेपन का भान न रह करके अपने में ही देखो, उज्ज्वलता को ही प्राप्त होते रहें, और मुनिवरों! देखो, इनमें से महर्षि प्रवाहण जी, उस याग के मुनिवरों! देखो, ब्रह्मतव को प्राप्त हुए, और देखो, ब्रह्मणे कृता प्रवाहण और देखो, शिलक जी उसके अध्वर्यु और उद्गाता बन करके विभाण्डक इत्यादि अपने में याग का प्रारम्भ होता है। क्योंकि याग के चार स्थान होते हैं। जैसे अन्तरिक्ष में चार दिशांए होती हैं, मानो देखो, प्राची दिक दक्षिणी दिक और प्रतीची दिक ये चार दिशाएं होती हैं, और उदीचि दिक् मानो देखो, ध्रुवा ऊर्ध्वां ब्रह्मणे कृता ये चार दिशाओं में इसी प्रकार के याग के चार ऊर्ध्वा मुख कहलाए जाते है। मेरे प्यारे! सबसे प्रथम यज्ञमान होता है, जो अपनी देवी से कहता है, आओ, दिव्या! हम मानो देखो, देवपूजा करने के लिए तत्पर हो जाएं। उसके पश्चात उद्गाता को कहते हैं, आओ, उद्गीत गाओ, और वेदमन्त्रों का उद्गीत गा करके देवताओं को उसी वेदां भूवर्णनं मानो उसी देवता की उपासना करके देवता के प्रति हमारा मन्तव्य बन गया है। मेरे प्यारे! देखो, अध्वर्यु उसे कहा जाता है, जो द्रव्य का स्वामी है। जो साकल्य का स्वामी बनता है। मुनिवरों! देखो, वह सब देखो, अमृते एक पुरोहित होता है जो यज्ञमान को प्रेरित करता रहता है, तो ये चार स्थलियां कहलाई जाती हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मा कहता है, संरक्षण करने वाला आभ्यां ब्रह्मा देवो यज्ञनं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान! आओ, कृतं अपने में उद्गीत गाना प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार यह याग का प्रारम्भ हुआ, जब प्रारम्भ होने लगा प्रारम्भ अमृतं देखो, अग्नि प्रदीप्त हो गई अपनी समिधाएं अपने स्वरूप को ले

करके बेटा! देखो, अग्नि जो देवताओं का मुख है। उस देवताओं के मुख में बेटा! देखो, साकल्य प्रदान करता रहता है, यज्ञमान अपना संकल्प के साथ में देखो, वेदमन्त्रों की प्रतिभा और उस प्रतिभा के साथ में साकल्य का हूत करता रहता है। अग्नि उसे देवताओं से प्रदान कर देते हैं और देवता जन जब प्रसन्न होते हैं तो बेटा! देखो, समय-समय पर वृष्टि प्रारम्भ होती है, और समय-समय पर बेटा! देखो, अपने में नृत्त करते रहते हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! देखो, भूतं जो परिवर्तनता आती रहती हैं, उसको नही आने देते हैं। तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, याग का अभिप्रायः माना गया है। तो विचार आता है मैं इसके कर्म काण्ड में जाना नही चाहता हूँ, क्या कर्म काण्ड की पद्धतियाँ क्या-क्या कहती हैं? परन्तु याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने शतपथ ब्राह्मण का वर्णन किया है। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वाजश्रवा यात्रा प्रारम्भ करते हैं। प्रारम्भ करके अग्नि प्रदीप्त हो गई है, बेटा! वेदमन्त्र में यह आता रहता है यज्ञं ब्रह्मा यज्ञनं प्रह्वा दिव्यां भूतं ब्रह्मा मानो देखो, यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ में प्रवेश कर जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब यह तो उद्गाता जब उद्गीत गाता है, और उद्गीत गा करके कहता है, प्राणां ब्रह्मा प्राणां देव प्रह्वा कृति देवतवाम् अग्नं ब्रह्मे व्रत्यं स्वाहा कह करके उद्गीत गाता है। बेटा! देखो, याग की जो आत्मा है, वह मानो देखो, स्वाहा माना गया है, देखो, हमारे यहाँ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने विचारों का वर्णन करते हुए कहा, यदि देखो, मुझे याग में प्रत्येक देवता के लिए याग का हम अवसर नही दे सकते तो देखो, हमारा याग पवित्र नही रहेगा तो इसीलिए प्रत्येक देवता एक-एक क्षण में इस जगत को संचालन करते हैं और जगत का मानो देखो, अपने में जगत्यां बन करके देखो, इसको हूत में परिणत कर देते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, इसी में यज्ञं देवं ब्रह्मा तो इसीलिए हमारे यहाँ याग का बड़ा पवित्र व्यवधान माना गया है। आज मैं बेटा! ऋषि-मुनियों की इस प्रणाली में तुम्हें

नही ले जा रहा हूँ केवल विचार-विनिमय ये कि हमारे आचार्यों ने देखो, आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों को मानो इसमें कटिबद्ध किया है। विचार आता रहता है बेटा! एक समय जब वह याग चल रहा था तो कहीं से शिकामकेतु व्रणकेतु ब्रह्मणां ब्रहा श्वेति श्वेत्ता बेटा! ये कहीं से भ्रमण करते हुए, उद्दालक गोत्र में से अमृतं देखो, वह भारद्वाज के यहाँ होते हुए बेटा! यज्ञशाला में आ पधारे जब यज्ञशाला में आ पधारे तो देखो, श्वेत्ता श्वेतर ने यह कहा कि हे यज्ञमान! तुम क्या कह रहे हो? यज्ञमान कहता है कि मैं मानो हूत कर रहा हूँ। मैं अपने देवता को प्रसन्न कर रहा हूँ। जो मेरे देवता देखो, आत्मा का लोक बने हुए हैं मैं उनको पवित्र बनाना चाहता हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा धन्य है वह आगे भ्रमण करते हुए समिधा के द्वार पर पंहुचे और समिधा से कहा हे समिधा! यह तू अग्नि में प्रदीप्त हो रही है। ये तू क्या कर रही है? समिधा ने कहा हे प्रभु! मैं इसीलिए अपने को नष्ट मानो अग्नि में हूत कर रही हूँ, क्या अग्नि में भी देवताओं का भोज्य बन करके मैं देवताओं को प्राप्त हो जाऊं। इसी प्रकार बेटा! देखो, जब अमृतं क्योंकि वही मानो प्रिय होता है, संसार में किसी के लिए अपने अस्तित्व को समाप्त कर देता है। और वह उसी में रत्त हो जाता है वही परमात्मा की प्रतिभा में रत्त होता है, और जो वह मेरी देखो, माता अपनी मानो देखो, संसार में पुत्र को जन्म दे करके और जन्मेति जन्मं ब्रह्मा कृतं मानो देखो, पुत्र की हो जाती है, इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, अपने में अपनेपन का भान उसे होता रहता है। तो इसी प्रकार देखो, अग्नि में जब समिधा प्रदीप्त हो जाती है, और अग्नि के माध्यम से बेटा! देखो, अग्नं प्रमाणं वही समाप्त हो करके वायुमण्डल को पवित्र बना देती है।

तो आओ, बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ आगे वह श्वेत्ताश्वेतर ऋषि बेटा! देखो, वह साकल्य के द्वारा पंहुचे, और साकल्य से

कहा हे साकल्य! तू मधु हैं, तू पुष्ट है मानो देखो, मधु ब्रह्मणो और देखो, अपने में दाह है और इसी प्रकार तुम मानो देखो, सुगन्धित हो करके सुगन्ध देता है, इसीलिए दे रहा है। उसने कहा यदि मानव यदि देखो, किसी के हृदय से सुगन्धि का जन्म नही होता है। तो उसका हृदय ही नही कहलाता। तो इसीलिए प्रत्येक मानव के हृदय में, विचारों की सुगन्धि होनी चाहिए, विचारों में मानो इतना मार्धुयपन, इतना मानो पौष्टिकतव होना चाहिए इतना सुगन्धित होना चाहिए और इतना मानो देखो, वह अपने में वायु मण्डल को पवित्र बनाने वाला हो, जिससे मानो देखो, वह वायु मण्डल उसका धन्यवाद दे करके अपने में अपनेपन का भान और देखो, हृत कराता है तो इस प्रकार वह मेरे प्यारे! देखो, अपने में सन्तुष्ट हो गएं देखो, यज्ञं ब्रह्मा याग अपने में मानो कितना पवित्रतम क्रियाकलाप है। वेद का मन्त्र कहता है यह जो याग है यह मानो सर्वत्र ब्रह्माण्ड की प्रतिभा कहलाती है। जैसे हमारे मानो शरीर में आत्मा विद्यमान रहता है आत्मा मानो देखो, ये विष्णु कहलाता है और ये आत्मा भूतं ब्रह्मे यदि आत्मा इस शरीर से निकल जाता है, तो बेटा! सर्व द्रव्य विद्यमान है, परन्तु आत्मा के न रहने से देखो, शून्यता को प्राप्त हो जाता है। माता रूधन कर रही है पितर रूधन कर रहा है और देखो, जितना भी कुटुम्ब है सब रूधन कर रहा है कि आत्मा नही रहा है, परन्तु शरीर ज्यों का त्यों विद्यमान है। तो इसीलिए देखो, याग अपने में आत्मा के शरीर में न रहने से देखो, शून्यता को प्राप्त हो जाता है, इसी प्रकार यदि मानव में याग नही रहेगा मानव के मध्य से याग चला जाएगा, तो मानव भी नही रहेगा तो इसीलिए जितना भी सुक्रियाकलाप है, ऊर्ध्वा में कर्म है उन सर्वत्र का नाम बेटा! याग के रूप में परिणत किया गया है। आओ, मेरे प्यारे! मैं इन वाक्यों को तुम्हें गम्भीरता में नही ला जा रहा हूँ, केवल विचार-विनिमय ये मुनिवरों! देखो, याग लगभग मुनिवरों! देखो, मुझे स्मरण है वह याग छह माह तक

प्रारम्भ रहा छह माह के पश्चात बेटा! वह याग सम्पन्न हो गया सम्पन्न हो जाने के पश्चात वाजश्रवा बेटा! देखो, जब ब्रह्माणों को ब्रह्मवेत्ताओं को अथवा जो उद्गीत गाने वाले अध्वर्यु इत्यादि देखो, ब्रह्मतव को प्राप्त होने वाले उन सर्वत्र को देखो, द्रव्य इत्यादि देखो, प्रदान करने लगे तो बेटा! देखो, जब वह बहुत-सी गऊओं को ज बवह समर्पित करने लगे। तो उनमे बहुत-सी गंऊए वृद्ध थी तो बेटा! उनका एक बाल्य ब्रह्मचारी जो सात वर्ष आठ दिवस का ब्रह्मचारी नाचिकेता था। नाचिकेता ने विचारा कि अमृतं पिता तो धर्म के स्थान मे अधर्म कर रहा है उन्होंने कहा हे पितर! यह तुम क्या कर रहे हो? मानो इनमें तुम यदि किसी को दान देते हैं, तो इसको लेने वाले को कोई लाभ नही होगा, उसको सुखद नही पंहुचा सकता, तो हम पाप कर रहे हैं। हे प्रभु! इनमें बहुत-सी गंऊए वृद्ध है देखो, इनको देने से तुम्हे क्या लाभ होगा यह पाप का मूल बन जाएगा। इसी प्रकार प्रभु जब आपकी ये गऊंए सब सम्पदाएं हैं। द्रव्य भी सब सम्पदा है, और मैं आपका पुत्र हूँ। मैं भी तो एक सम्पदा हूँ। हे प्रभु! आप मुझे किसको दोगो तो मुनिवरों! देखो, बालक नाचिकेता से इन वाक्यों का पान करने वाले देखो, वाजश्रवा ने कहा हे नाचिकेता! तुझे मृत्यु को दूंगा। बेटा! यह उच्चारण करके मृत्यु का नामो उच्चारण वह शान्त मुद्रा में विद्यमान हो गएं। उन्होंने आवेश में आ करके ऐसा कहा परन्तु जब उनका दक्षिणा का क्रियाकलाप सम्पन्न हो गया, सांयकाल हो गया सांयकाल के समय जब आचार्य बेटा! देखो, अपने कक्ष में विश्राम कक्ष में पंहुचे, तो विश्राम करने वाले इतने में बालक नाचिकेता पितर के द्वार पर पंहुचे और बालक नाचिकेता ने उनके चरणों को स्पर्श करके कहा हे पितर! मैं आपका बाल्य पुत्र हूँ। परन्तु देखो, हमारा जो गोत्र है, वह उद्दालक गोत्र कहलाता है, और उद्दालक गोत्र मं भी बहुत से वंशलज हुए है। परन्तु उद्दालक गोत्र का जो निकास हुआ वह हरितत गोत्रों से हुआ है, उनमें भी

लाखों वंशलज हुए हैं परन्तु देखो, उनका जो निकास हुआ है, वह अंगिरस गोत्रों से हुआ है और अंगिरस गोत्रों में भी नाना वंशलज हुए हैं। मानो लाखों के लगभग उनमें कोई भी देखो, ऐसा नही हुआ या अपने पिता की आज्ञा का पालन न करने वाला हो। हे पितर! आप ने मुझे मृत्यु के लिए कहा है। मुझे मृत्यु को प्रदान कर दीजिए। हे प्रभु! मैं मृत्यु को जाने के लिए तत्पर हूँ। मेरे प्यारे! बालक नाचिकेता ने कोई पाप नही किया था उनका शरीर शान्त हो जाता। परन्तु उन्होंने कहा कि जाओ तुम मृत्यु को चले जाओ। मेरे प्यारे! देखो, यमाचार्य ने अमृतं देखो, ब्रह्मणे व्रत्यं देवाः बालक नाचिकेता अपने पितर की वार्त्ता को शान्त करते हुए, वहाँ से उन्होंने उस समय प्रस्थान किया, और भ्रमण करते हुए मानो देखो, रात्रि समाप्त करने के पश्चात वह यमाचार्य के गृह में जा पंहुचे। यमाचार्य के समीप पंहुचे, तो उनकी पत्नी विद्यमान है, आचार्य कहीं भ्रमण करने गएं थे, किसी याग मे गएं थे, परन्तु देखो, जब वह अमृतं उनके गृह में पंहुचे, तो उन्होंने कहा हे माते! मृत्यु आचार्य कहाँ हैं? जिन्होनें मृत्यु को विजय कर लिया है, क्योंकि यमाचार्य उसी को कहते हैं, जो यम बन जाता है, और यम वह कहलाता है। जो मृत्यु को विजय कर लेता है। अथवा मृत्युंजय बन जाता है। वह यमाचार्य कहलाते हैं। उन्होंने कहा पितर कहाँ हैं? आचार्य कहाँ हैं? यमाचार्य तो उस समय देवी ने कहा हे ब्रह्मचारी! आओ, तुम अन्न जल का पान करो, कहीं से आचार्य भ्रमण करके तुम्हारे समीप आ पायेंगे। उन्होंने जब नाचिकेता ने कहा की नही मुझे पितर ने कहा है कि तुम मृत्यु को पाप्त हो जाओ, मैं जब तक मृत्यु के दर्शन नही करूंगा, जब तक अन्न जल का पान नही करूंगा। अपने पिता की आज्ञा का मुझे पालन करना है। तो मेरे प्यारे! पत्नी बड़ी खिन्न हो गई। उन्होंने कहा हे देवो! देवो ब्रह्मणे जिस गृह में मानो देखो, ब्रह्मचारी अन्न जल से पीड़ित रहता है। वह गृह बड़ा मानो देखो, बड़ा पापाचरण में परिणत हो जाता है।

क्योंकि गृह में जब अतिथि सेवा नही होगी तो वह गृह मानो देखो, अतिथि से शून्य हो करके गृह देखो, शून्यवान न रह करके पापाचार में परिणत हो जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, वह बालक नाचिकेता द्वार पर विद्यमान हो गएं और यह कहा हे माते! मैं द्वार पर विद्यमान हूँ। जब तक आचार्य नही आयेंगे, मैं जल और अन्न का पान नही करूंगा। मेरे प्यारे! देखो, वह उस बालक को तीन दिवस हो गएं, और तीन रात्रि हो गएं उन्होंने देखो, अन्न जल का पान नही किया न करने से बेटा! देखो, तीन दिवस के पश्चात यमाचार्य गृह में उनका प्रवेश हुआ। और उनकी पत्नी ने कहा हे प्रभु! हे प्रभु! देखो, हम बड़े पापी बन गएं हैं। ऋषि ने कहा क्यों क्या हे भगवन! देखो, बालक नाचिकेता उद्दालक गोत्रीय ऋषि बेटा! तीन दिवस और तीन रात्रि हो गएं हैं। उन्हें अन्न जल का पान नही किया है, और अन्न जल का पान न करने से देखो, वह हमारे यहाँ जब यहाँ से जाएगा। तो हमारे गृह के पुण्य ले जाएगा और पापों को त्याग करके चला जाएगा। हे प्रभु! देखो, इसीलिए हम पापां भूतं ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, जब देवी ने यह कहा तो यमाचार्य ने कहा-देवी! तुम मानो संकोच न करो, तुम रूधन न करो, मानो देखो, मैं उनको सन्तुष्ट करूंगा। ब्रह्मचारी को मेरे प्यारे! वह द्वार पर जैसे ही पंहुचे तो बालक नाचिकेता ने ब्रह्मचारी ने बेटा! यमाचार्य के चरणों को स्पर्श किया और स्पर्श करके कहा कि-प्रभु! अमृतं ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, यमाचार्य ने कहा हे नाचिकेता! हे उद्दालक गोत्र में जन्म लेने वाले ब्रह्मचारी! आज मैं तुम्हें वर देता हूँ, जो तुम्हारी इच्छा हो वह स्वीकार करो, उन्होंने कहा-प्रभु! आपको धन्य है हे प्रभु! मेरा सबसे प्रथम जो वचन है। मैं यह चाहता हूँ कि मेरे पिता ने जिस भी आशा से सर्व द्रव्य का याग किया है। मानो देखो, ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान की जिस अभिलाषा से वह जिस अभिलाषा से उन्होंने सर्वत्र क्रियाकलाप किया वह मेरे पितर की आशा पूर्ण हो जानी चाहिए। उन्होंने कहा तथास्तु

उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! ऐसा ही होगा मानो तुम्हारे पितरों की इच्छा पूर्ण होगी। तो मुनिवरों! देखो, सबसे प्रथम वचन में उन्होंने यही कहा कि मेरे जो पितर हैं। वह मेरे से सन्तुष्ट हो जाएं। जब मैं पिता के द्वार पर जाऊं तो पिता मेरे से सन्तुष्ट हो करके मेरे से प्रसन्न हो जाएं, और मेरा पितर मानो मोक्ष की अभिलाषा में मोक्ष उनको प्राप्त हो जाएं। क्योंकि उसके चित्त मण्डल में जो नाना प्रकार के जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार हैं। उनके क्रियाकलापों से वह नष्ट हो जाएं। परन्तु देखो, वह उनका चित्त का जो मण्डल है, वह निर संस्कारों वाला बन जाएं जिससे देखो, चित्त का मण्डल जब तक हमारे अन्तःकरण में चित्त में संस्कार विद्यमान रहते हैं। जब तक हमें मोक्ष नहीं प्राप्त होता है, और मोक्ष जब ही प्राप्त होता है, जबकि हमारे चित्त के मण्डल में कोई संस्कार रहेगा न सत रहेगा न रज रहेगा और न मानो यशो प्रमाणं ब्रहे मानो किसी भी प्रकार का संस्कार नही रहेगा। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने तथास्तु कह करके ब्रह्मचारी को सन्तुष्ट किया। उन्होंने कहा-प्रभु! मैं दूसरे वचन मे यह चाहता हूँ कि गार्हपथ्य नाम की अग्नि किसे कहा जाता है? उन्होंने गार्हपथ्य नाम की अग्नि यमाचार्य कहते है कि गार्हपथ्य नाम की अग्नि में ब्रह्मचारी तपता है, अथवा ब्रह्मचारिणी तपती है, जब ब्रह्मचारी देखो, उस अग्नि में तपायमान रहता है। प्रातःकालीन अपने क्रियाकलापों को बनाता रहता है। प्रातःकालीन जब चन्द्रमा की मानो देखो, चन्द्रमा नही होता तो वह तारामण्डलों के प्रकाश में अपने को प्रकाशित करता हुआ वह मानो देखो, भ्रमण करता है, और भ्रमण करता हुआ नाना प्रकार की मानो देखो, समिधाओं के द्वारा वह अपने मानो अपने कक्ष में विद्यमान हो करके वह वेदमन्त्रों का उद्गीत गाता हुआ तीन समिधाओं के द्वारा देखो, याग करता है। वह तीन समिधा क्या हैं? मेरे प्यारे! देखो, वेद का कौतुक यह किसी भी प्रकार का जब पाप नही रहता, तो बेटा! उसको तीन प्रकार की मानो

धाराओं में परिणत माना गया है। वह ब्रह्मचारी जब प्रातःकालीन अग्न्याधान करके और उस अग्नि में मुनिवरों! देखो, वह परमात्मा का दर्शन करता है। मानो प्रकाश में रत्त होता है, तो उसके पश्चात विद्या अध्ययन करता है। और जब विद्या का अध्ययन करता है, वही विद्या अध्ययन करता है, तो बेटा! देखो, बुद्धिमान बन करके वह अपने मस्तिष्क मे देखो, संस्कार को जागरूक करता है जो संस्कार उसके मानो चित्त मण्डल में विद्यमान हैं, उन्हीं संस्कारों को वह जागरूक करता रहता है, और जागरूक करके बेटा! देखो, बुद्धि का परिचय देता है, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा, प्रज्ञावी बन करके विचारने लगता है। विचार आता रहता है बेटा! देखो, उस परमपिता परमात्मा की अनन्तमयी महिमा का वर्णन करता है परन्तु वह ब्रह्मचारी यशोगान गा करके बेटा! देखो, वह अपने में अपनेपन को विचारता रहता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह क्या गार्हपथ्य नाम की अग्नि वह कहलाती है, जिसमें ब्रह्मचारी तपता रहता है, और ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो ब्रह्मवर्चोसि कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, ब्रह्मचर्य की विवेचना करते हुए कहा है, ब्रह्मो चरं बन्दं ब्रह्मं देवत्वां ब्रह्मचरिष्यामि वेद का ऋषि कहता है याज्ञवल्कय मुनि महाराज, शतपथ ब्राह्मण में बेटा! देखो, उसकी आख्यिकाओं की उन्होंने वर्णन की है। क्या ब्रह्मचारी कौन है? वह कहता है ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो एक-एक कण-कण में ब्रह्म का दर्शन करता है मेरे प्यारे! देखो, पुनः यह प्रश्न करता है क्या ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा जो रक्षा करता है और पुनः देखो, जब ये प्रश्न किया गया कि ब्रह्मचारी कौन है? वह कहता है कि ब्रह्मचारी कहते हैं जब ब्रह्म और चरी को दोनों को जानने वाला ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को और चरी कहते हैं प्रकृति को जो दोनो को अंगो और उपांगो से जानने वाला है वही बेटा! ब्रह्मचारी कहलाता है। जब पुनः यह प्रश्न किया

गया कि ब्रह्मचारी कौन है? मेरे प्यारे! देखो, वह श्वास का एक-एक श्वास का मनका बनाता है और मनका बना करके बेटा! जो ब्रह्मसूत्र में पिरोना जानता है, और उसकी माला को धारण करता है, वही बेटा! ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह मनका बनाता है, स्वतः ही श्वास को इसी प्रकार ब्रह्मचारी जो विद्या का अध्ययन करने वाला अपने चित्त मण्डल में जो पुनः संस्कारों को जागरूक बनाता है, और बुद्धिमान बनता है, बेटा! मेधावी बन करके प्रज्ञावी बन करके और ऋतम्भरावी बन करके मुनिवरों! देखो, जो अपनेपन को जानने लगता है। वही ब्रह्मचारी कहलाता है, और वह गार्हपथ्य नाम की अग्नि की पूजा करता है। अग्नि का अभिप्रायः यहाँ ज्ञान को माना गया है। अग्नि का अभिप्रायः यहाँ देखो, प्रतिभा को माना गया है। तो विचार आता है मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणे व्रत्यं देवाः वह गार्हपथ्य नाम की अग्नि कहलाती है, अग्नि में प्रदीप्त होने वाला अग्नि में तपायमान होने वाला तीन प्रकार की विद्या का व्यवधान करता हैं। जिसको ज्ञान, कर्म और उपासना के रूप में वर्णित किया गया है। वह तीन प्रकार की मानो देखो, वह अग्निं ब्रह्मा ज्ञानं ब्रह्मे देखो, देवा देवत्वां विद्या ये तीन प्रकार की विद्याओं में परिणत हो जाता है। तो यह गार्हपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करता है। जो मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक इन्द्रियो को, मृत्यु से उल्लांध जाता है इसे मृत्यु का भय नही रहता बेटा! देखो, वह गार्हपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करता है, तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया, अपनी वर्णनशैली में उन्होंने नाना प्रकार के वाक्यों को प्रगट किया। मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मचारी अपने में देखो, शान्त हो गया, और वह बोला कि-प्रभु! आपको धन्य है। आपने मुझे मानो ज्ञान और विज्ञान में पंहुचा दिया है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा हे प्रभु! ये मानो एक अग्नि है जिसको हम गार्हपथ्य नाम की अग्नि कहते हैं, और द्वितीय अग्नि उसे कहते हैं। जो गृहपथ्य नाम की अग्नि है, हे प्रभु! यह

मोक्ष प्राप्ति का मार्ग

गृहपथ्य नाम की अग्नि क्या जिसको जान करके मैं स्वर्ग को प्राप्त हो जाऊं। मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने गृहपथ्य नाम की अग्नि का वर्णन किया, तो वह गृहपथ्य नाम की गृह कहते हैं, जहाँ गृह स्वामिनी, और गृह स्वामी जहाँ वास करते हैं, उनका नाम गृहपथ्य नाम की अग्नि है। मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक माता ये चाहती है, मेरा पुत्र पुत्रियाँ महान बन जाएं, प्रत्येक मानव ये चाहता है कि मेरा बाल्य समाज पवित्र बन जाएं, मेरी बाल्य प्रजा बन जाएं, पुत्र में रह करके देखो, प्रजामयी हो जाएं। मानो देखो, जिससे मेरा यह गृह पवित्रता को प्राप्त हो जाएं, और मेरे गृह में यह जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है, जिसे हम गृहपथ्य नाम की अग्नि कहते हैं, गृहपथ्य उसे कहते हैं जहाँ माता-पिता के ऊर्ध्वा में विचार होते हैं, जहाँ माता-पिताओं का क्रियाकलाप पवित्र होता है तो वहाँ बाल्य बालिका उसी के अनुसार अपने में बरतने लगते हैं, तो गृह स्वर्ग बन जाता है। यदि माता-पिता देखो, स्वर्ग बनाना चाहते हैं, गृह को तो दर्शनों का अध्ययन करें प्रातःकालीन मानो याग का चयन करें अग्नि को प्रदीप्त करें और अग्नि देखो, विचारों रूपी अग्नि में इन्द्रियों का अध्ययन करते हुएं मेरे प्यारे! इस प्रकार का क्रियाकलाप होता है। तो गृह पवित्र होता है, और गृह में मानो देखो, उनके माता-पिता के आचरणों का चयन करने वाले ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणियां सब पवित्रता को प्राप्त हो जाते हैं। तो गृह देखो, बेटा! स्वर्ग की आभा में रमण करने लगता है। वह गृहपथ्य नाम की अग्नि कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो, जब मातृं ब्रह्मे मातृं भव आचार्य भव इस प्रकार के विचारों में जब संलग्न होते हैं। तो गृह बेटा! देखो, स्वर्ग बन जाता है, और वह गृहपथ्य नाम की अग्नि का चयन करते रहते हैं। हे मानव! यदि तू अपने गृह को स्वर्ग बनाना चाहता है। पवित्रता में ले जाना चाहता है। तो मानो तेरे यहाँ गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन होना चाहिए। गृहपथ्य मानो पवित्रता के परमाणुओं से परिणत होना चाहिए।

तो विचार आता है कि हम गृहपथ्य नाम की अग्नि का चयन करते हैं, तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह विचार देता हुआ कि तीन प्रकार की अग्नियों में यह देखो, तृतीयं अग्निं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, यह गृहपथ्य नाम की अग्नि है, और तृतीय अग्नि का नाम आह्वनीय अग्नि कहा जाता है। मुझे बेटा! स्मरण है इस संसार का विधान जब भगवान मनु ने बेटा! देखो, विधान बनाया तो समाज को मुनिवरों! नाना प्रकार की विभक्ता देते हुए उन्होंने यह वर्णन किया है, कि विद्यालयों में जब ब्रह्मचारियों को देखो, मेरी प्यारी माताएं शिक्षा देती है, और ब्रह्मचारियों को मुनिवरों! वानप्रस्थ बन करके वह शिक्षा देते हैं। राष्ट्र का इस प्रकार का नियम होना चाहिए भगवान मनु ने यह कहा है क्या देखो, नियमन करने वाला शिक्षा का नियमन करने वाला वानप्रस्थ होना चाहिए और वानप्रस्थ ही मेरी पुत्रियाँ माताएं होनी चाहिएं। जो मानो देखो, इस प्रकार का जिनका आत्मा तृप्त हो गया हो संसार के कार्यकलापों से जिनका आत्मा तृप्त हो गया है। जब वह विद्यालयों में बेटा! इस प्रकार अपने अनुभव की चर्चाएं ब्रह्मचारियों को ब्रह्मचारिणयों को प्रदान करेंगे। तो बेटा! विद्यालय पवित्र बनेंगे विद्यालय देखो, शिक्षा प्रणाली ऐसे पवित्र नही बनती है। जब देखो, युवा ब्रह्मचारियों को जब शिक्षा देगा तो इस प्रकार की नही दे सकता। जैसा एक वानप्रस्थ मानो अपनी जीवन के अनुभव और शिक्षा का जो विचार है वह प्रदान करेंगे भगवान मनु ने कहा है कि इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली जिस राजा के राष्ट्र में होती है, वह राजा का वह छात्रवत होता है, वह मानो देखो, राष्ट्र की नाभि कहलाता है। जैसे हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में नाभि का बारम्बार वर्णन आता रहा है। तो देखो, क्षत्रिय क्या छात्र इस संसार की नाभि क्या इस राष्ट्र की नाभि कहलाता है। क्योंकि देखो, राष्ट्र में समाज में देखो, यह जो छात्र प्रवृत्ति यही तो ऊँची बननी चाहिए। जब छात्र प्रवृत्ति में ऊर्ध्वा में गमन करने

वाले छात्र मेरे प्यारे! देखो, अपने में विद्या अध्ययन करने वाले पवित्र होंगे। तो यह राष्ट्र पवित्र बनेगा, शान्ति की स्थापना होगी, और विद्या मुनिवरों! देखो, अपने में पवित्रता को प्राप्त होती रहेगी, तो विचार आता है बेटा! देखो, जब गृह को त्यागने वाले वानप्रस्थ जब अपने जेठे पुत्र को मुनिवरों! जब राज्य स्थापित करके भंयकर वन में क्या वह विद्यालयों में चले जाते हैं। कन्याओं को देवियां शिक्षा देती हैं, और मुनिवरों! देखो, वानप्रस्थी छात्रों को छात्रवृत्ति बना देते हैं। तो दिक्षा देते हैं तो विचार आता है यह विद्यालय पवित्र और राष्ट्र भी पवित्र बनता है, और समाज मेरे प्यारे! देखो, नाना प्रकार की अग्नियों में सजातीय बन जाता है। वही हमारे यहाँ एक अग्नि वह है, जो काष्ठ में रहने वाली है, एक अग्नि वह है जो विचारों में रहती है, जिससे मानव सजातीय बनता है। जिसको बुद्धिमान कहते हैं, इस प्रकार की अग्नि का जो चयन करने वाला है। वही तो बेटा! देखो, राष्ट्र को समाज को ऊँचा बनाता है। तो आज बेटा! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, विचार-विनिमय केवल यह कि जब मानव के वृत्तियाँ देखो, जब परिपक्व बन जाती हैं, और प्रवृत्तियों में महानता आ जाती है। तो उससे दूसरा चरण प्रारम्भ होता है। तो यह ऋषि ने कहा हे ब्रह्मचारी नाचिकेता! यह तीन प्रकार की अग्नि कहलाती हैं। एक अग्नि का नाम देखो, वह अग्नं ब्रह्मा वर्णनं ब्रहे देवां प्रथम अग्नि का गार्हपथ्य है, जिसमें ब्रह्मचारी तपता है, और द्वितीय अग्नि का नाम गृहपथ्य है। जिसमें मुनिवरों! देखो, पति पत्नी तपा करते हैं। अपने विचारों को पवित्र बनाते हैं। अपने आहार और व्यवहार को महान बनाते हैं। जिससे देखो, उनका विचार श्रवण करके बाल्य बालिक स्वर्ग को स्थापित कर सकें और तृतीय अग्नि का नाम आह्वनीय नाम की अग्नि है। जो विद्यालयों में पनपती रहती है। जो शिक्षालयों में पनपती रहती है। जहाँ देखो, ब्रह्मचारियों को शिक्षा देने वाली देखो, देवियाँ रहेंगी और देखो, ब्रह्मचारियों

को शिक्षा देने वाले वानप्रस्थी रहेंगे क्योंकि भोग विलासों से उनकी तृप्ति हो गई हैं। संसार में प्रजा को उत्पन्न करके उनकी तृप्ति हो गई है। उनका मन देखो, निश्चल हो गया है, और वह मानो जब शिक्षा देते हैं। तो उनके अनुभव और शिक्षा का विचार जब मानो देखो, दर्शनों को ले करके दिया जाता है, तो ब्रह्मचारिणी और ब्रह्मचारी सब पवित्रता को प्राप्त हो जाते हैं।

तो विचार आता है बेटा! यह राष्ट्रीय प्रणाली पवित्र होनी चाहिए राष्ट्रीयता मानो देखो, तीन प्रकार की अग्नियों को ले करके अपने राष्ट्र का निर्माण करें जिससे मानो देखो, प्रदूषण आयेगा और वही मुनिवरों! देखो, रक्तभरी क्रांति राजा के राष्ट्र के राष्ट्र में आयेगी अन्य उग्र क्रिया का जन्म हो सकेगा। क्योंकि उग्र क्रिया का जन्म जब होता है जब छात्र और छात्रिका मुनिवरों! देखो, वह अपने विद्यालय में भ्रष्ट हो जाते हैं। अपने गृह में देखो, अपवित्र वह पवित्र हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब बाल्काल से शिक्षा का माध्यम पवित्र होता है। तो माता के गर्भ से ले करके, और विद्यालय तक मुनिवरों! देखो, जब शिक्षार्थी को शिक्षा ही पवित्र प्राप्त होती नही तो उनका अन्तरात्मा तृप्त हो जाएगा और उनका अन्तःकरण पवित्रता को प्राप्त हो जाएगा, तो बेटा! देखो, यह समाज ऊर्ध्वा को प्राप्त हो करके अपने मानवीयता में परिणत हो जाएगा। तो आज मैं बेटा! विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यही कि मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ देखो, नाचिकेता ने कहा हे प्रभु! मैं स्वर्ग में जाना चाहता हूँ। तो ऋषि ने उसका उत्तर दिया क्या स्वर्ग में जाने के लिए मानो देखो, ब्रह्मचारी देखो, गार्हपथ्य नाम की अग्नि की पूजा करो विचारों को अग्नि माना है। परन्तु देखो, गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करो। अग्नि जो काष्ठ में रहने वाली हैं, अग्नि कहते हैं जो तीन समिधाओं में परिणत रहने वाली है। उस अग्नि का चयन करने वाला मानो देखो, बेटा! अपनेपन को प्राप्त हो जाता है। आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट

करने नही आया हूँ। विचार-विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो, पितर भक्ति होनी चाहिए। जैसे पितरो की आज्ञा का पालन करने वाला बालक नाचिकेता बेटा! अपने गृह को त्याग देता है, और वह मृत्यु को विजय करने के लिए चला है। इसीलिए प्रत्येक मानव को मृत्यु से विजय होना चाहिए, विद्या का अभिप्रायः है कि मृत्यु से पार होना है। मृत्यु अज्ञान को कहते हैं, और प्रकाश मेरे प्यारे! ज्ञान को कहा जाता है। जहाँ ज्ञान और अज्ञानं ब्रह्मणे देखो, अन्धकार नष्ट करने का नाम ज्ञान है, और देखो, ज्ञान में रहने का कारण ही बेटा! अन्धकार माना गया है। तो अन्धकार में न जा करके हमें मृत्यु आचार्य के द्वारा मृत्यु को विजय करना चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। याग मेरे प्यारे! मैं याग की चर्चाएं कर रहा था याग में प्रत्येक क्षण वह देवताओं में प्रदान किया जाता है। मानव का जीवन भी इसी प्रकार देवता को प्राप्त होता है। तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा को सर्वत्र स्वीकार करते हुए अपने मानवीय जीवन को स्वर्ग में ले जाएं। अपने मानवीय जीवन को आध्यात्मिकवाद में परिणत करके मृत्यु से पार हो जाएं। मृत्यु हमारे समीप न रह पाए तो यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा मैं तुम्हे शेष चर्चाएं तुम्हें कल प्रगट कर सकूंगा। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां मनु रथं आप्यां देवाः वाचन्नमाः प्राची रथाहम्।

४ मोक्ष प्राप्ति का मार्ग २६ ०२ १९९२

जीते रहो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं, याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है। और प्रायः वह उसी में वास करता रहता है तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन किया करते हैं कि जितना भी यह संसार है यह एक प्रकार की यज्ञशाला है यहाँ प्रत्येक मानव अपने शुभ कर्मों का याग कर रहा है याग कर रहा है नाना वनस्पतियाँ अपने में सुगन्धित करती हुई, मानो वे परमपिता परमात्मा की अनन्मयी जो यज्ञशाला है मानो उसको सुगन्धित करती चली जाती है यदि सुगन्धमयी हो गई, तो यह मानो दुर्गन्ध प्राणी मात्र भी नही रह सकेगा। तो इसीलिए हमारा वेद का मन्त्र कहता है यज्ञनं ब्रह्मा वर्णो वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है, अथवा याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह उसी में निहित रहने वाले हैं। वास्तव में जितना भी जगत हमें दृष्टिपात आता है। मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन करते हुए कहा है, क्या ये परमपिता परमात्मा की यज्ञशाला है, जिस यज्ञशाला में बेटा! आत्मा यज्ञमान है, परमपिता परमात्मा स्वयं ब्रह्मा है, और अग्नि देवताओं का मुख कहा जाता है। वह अध्वर्यु है। मेरे प्यारे! देखो, अग्नं ब्रह्मणा व्रता यह मानो देखो, सर्वत्र देवता, एक याग कर रहे हैं, उनमें से कोई अध्वर्यु है, कोई उद्गाता है, कोई मानो होता बन करके वह अपने में याग कर रहा है। तो यह

परमपिता परमात्मा का रचाया हुआ, एक भव्य भवन है। और यह यज्ञशाला है। जिसके ऊपर विद्यमान हो करके बेटा! ये चारों प्रकार की सृष्टियों का निर्माण होता है, और वही याज्ञिक रूपों में परिणत रहने वाले माने जाते हैं। जैसे बेटा! देखो, अण्डल सृष्टि है, वह भी नाना प्रकार के यागों मे परिणत है स्थावर सृष्टि उसी में वनस्पतियों का व्यवधान होता रहता है। नाना प्रकार की वनस्पतियाँ अपने में, अपनेपन का भान करके, बेटा! देखो, जीवन शक्ति को लिए हुए, वह इस भव्य यज्ञशाला में, अपने रूप में परिणत हो रही हैं। तो विचार आता है बेटा! इसी प्रकार अण्डज सृष्टि है, अण्डज सृष्टि में जैसे सर्प इत्यादि योनियाँ हैं, और भी विषैली योनियाँ हैं, जो बेटा! वायुमण्डल में जो मानो दूषित वायुमण्डल दूषित बह रहा है, उसे वह अपने में धारण करके मानो यज्ञशाला में याग कर रहे हैं। अपना शुद्धिकरण करते हुए अशुद्धियों को निगलते रहते हैं। इसी प्रकार जंगम सृष्टि है, मानो देखो, इसमें मानव से ले करके पशु तक वह सर्वत्र मानो श्वास के द्वारा कोई मानो देखो, अपने में द्रव्य के द्वारा पान करके इस याग में परिणत हो रहे हैं। मेरे प्यारे! प्रभु का कैसा ये अनूठा जगत है, इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, जैसे जल में रहने वाली मानो उदभिज सृष्टि हैं, और उदभिज सृष्टि में जैसे मछली इत्यादि योनियाँ हैं जो जल को विषलेपन को अपने धारण करते रहते हैं, और उसका शुद्धिकरण करते रहते हैं। तो शुद्धिकरण करने का नाम ही याग माना गया है, वैदिक आचार्यों ने कहा यज्ञोमयी विष्णु हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! नाना प्रकार के यागों का व्यवधान होता रहा है अथवा निर्णय होता रहा है, जैसे याज्ञवल्यक मुनि महाराज ने बेटा! अपनी एकान्त स्थलियों में विद्यमान हो करके, नाना प्रकार के यागों का वर्णन किया है, हमारे यहाँ बेटा! यह जैसे यह चारों प्रकार की जो सृष्टियों के द्वारा याग हो रहा है, वह सार्वभौम याग कहलाता है। चाहे वह मानो इस पृथ्वी मण्डल पर हो चाहे वह चन्द्र मण्डल

में हो चाहे वह सूर्य मण्डल में क्यों न हो, चाहे वह मंगल में बेटा! क्यों न हो, जहाँ पृथ्वी जल प्रधानता में रहते हैं, वहीं वनस्पतियों का व्यवधान हो रहा है, और वनस्पतियों में बेटा! चार प्रकार के गुण माने जाते हैं। सबसे प्रथम देखो, मधुपन होता है, मधु और पुष्ट रोगनाशक और सुगन्धित मुनिवरों! देखो, ये चार प्रकार के पदार्थों के द्वारा मुनिवरों! देखो, भव्य जगत मे याग हो रहा है आओ, मेरे प्यारे! इस परमपिता परमात्मा का यह जो अनूठा जगत है यह बड़ा भव्यता में परिणत हो रहा है मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन किया कि हमारे आचार्यों ने एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके बेटा! यह चंहु का विचार-विनिमय करते हुए उन्होंने आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनो मे याग किया है याग में उनको मानो याग की ही प्रधानता रही है।

विचार आता रहता है मेरी प्यारी माता जब प्राणों को जानने लगती है, जब प्राणों का शोधन करती है, तो प्राण और अपान को मिलान करती है, और अपान को मुनिवरों! समान और व्यान में प्रवेश करा देती है और उदान की पुट लगा करके अपने गर्भस्थल के आत्मा को दृष्टिपात करने लगती है। वह भव्य याग कर रही है मानो देखो, अपने गर्भस्थल को ऊँचा बनाना, उनमें भव्य विचार देना, ये भी एक याग है, एक स्थली पर देखो, दार्शनिक विद्यमान है, वह दर्शनों की चर्चा कर रहे हैं, वायुमण्डल को अपनी वाणी का शोधन कर रहे हैं, और वायुमण्डल से ही मानो देखो, वाणी का शोधन होता है, तो वह याग हो रहा है। तो आओ, मेरे प्यारे! हमारे ऋषि-मुनियों ने कहा क्या नाना प्रकार के यागों का चयन, हमारे वैदिक साहित्य में होता रहा है। जैसे बेटा! हमारे यहाँ वाजपेयी याग है, अग्निष्टोम याग है, गो मेध याग है, अश्वमेध याग है, अजामेध याग है, और भी नाना प्रकार के, यागों का वर्णन प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में होता रहा है, जैसे विद्यालयों मे आचार्यजन बेटा! ब्रह्मचारी को कहते हैं चक्षु में शुन्धामि, प्राणं में शुन्धामि हे ब्रह्मचारी!

आओ, तुम गो मेध याग करो तो गो मेध याग का अभिप्रायः ये कि गो कहते इन्द्रियों को और इन्द्रियों का तुम शोधन करो और इन्द्रियों के द्वारा नैतिकवाद को ले करके तुम जगत को ऊँचा बनाओ। तो बेटा! देखो, ये सर्वत्र एक याग माना गया है। हमारे यहाँ वाजपेयी यागों का वर्णन भी होता रहा है। आज मैं भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, जैसे अजामेध याग है अजा बेटा! देखो, हमारे यहाँ बकरी को कहा जाता है। अजा नाम जो किसी से विजय न हो सके, उसका नाम अजय कहा जाता है। अजनं ब्रह्मा वर्णनं ब्रहे सर्वत्रता में मानो रक्षा होनी चाहिए। गो की रक्षा करना ही मेरे प्यारे! देखो, एक याग का व्यवधान माना गया है। तो विचार आता है कि हम अपने में जागरूक बनें, तो परमात्मा का यह जो अनूठा जगत है एक प्रकार की यज्ञशाला है. बेटा! देखो, एक दूसरे का साकल्य बना हुआ, जगत मुनिवरों! देखो, यह पृथ्वियाँ हैं नाना पृथ्वी सूर्य का साकल्य बना हुआ है और नाना सूर्य बेटा! देखो, बृहस्पति का साकल्य बना हुआ है और नाना बृहस्पतियों का ऋषि मण्डलों का साकल्य बना हुआ है और नाना आरुणि मण्डलों का साकल्य बन करके बेटा! देखा साकल्य बन करके ध्रुव का साकल्य बन करके बेटा! देखो, नाना प्रकार का याग हो रहा है।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, यह सौर मण्डलों की आभा मुझे जब स्मरण आने लगती है, तो एक दूसरें मे याग हो रहा है जैसे प्राण को अपान में अपान को व्यान में, व्यान को समान में, समान को उदान में प्रवेश करके योगी जन आध्यात्मिक साकल्य बना करके बेटा! हृदय रूपी यज्ञशाला में बेटा! याग करते हैं। इसी प्रकार मुनिवरों! हमारे आचार्यों ने दोनो प्रकार के यागों का चयन किया है। एक आध्यात्मिकवाद है, और दूसरा मानो देखो, भौतिकवाद है भौतिकवाद को आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करना और आध्यात्मिक और भौतिकवाद को दृष्टिपात करने का नाम, बेटा! साधना और

यौगिकवाद कहा जाता है तो विचार आता रहता है हमारे आचार्यों ने बेटा! आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान को बेटा! एक दूसरे में कटिबद्ध किया। आओ, मैं विशेष चर्चा नही प्रगट करना चाहता हूँ, विचार-विनिमय ये केवल ये कि हम दोनो प्रकार के विज्ञान में रत्त हो जाएं, और परमात्मा का ये जो जगत है, भव्य मानो देखो, वह एक दूसरें में परिणत हो रहा है और यही तो यज्ञशाला है मानो देखो, आत्मा यज्ञमान बन करके परमात्मा ब्रह्मा बन करके और यह अध्वर्यु उद्गाता बन करके बेटा! यह भव्य याग हो रहा है यागं भूतं ब्रह्मणा व्रत्यं देखो, यागा हे याज्ञिक पुरूषों आओ, तुम देखो, विष्णु याग करो। यज्ञोमयी विष्णु मानो देखो, अपने में आध्यात्मिकवाद में प्रवेश हो करके आत्मा को विष्णु बनाने का प्रयास करो। जिससे वह सत्य का ही दर्शन कर सके सत्य में ही रमण करता हुआ, मानो सत्य को अपने में धारण करता रहे, तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, इस सम्बन्ध में मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नही चाहता हूँ। विचार-विनिमय केवलय यह कि बेटा! मैं महर्षि देखो, अमृतं देखो, वाजश्रवा और देखो, उद्दालक गोत्र के ऋषियों की चर्चा कर रहा था, क्या उद्दालक गोत्र में बेटा! देखो, किस प्रकार अग्नि की पूजाओं का उन्होंने वर्णन किया है। बेटा! सबसे प्रथम अग्नि का नाम गार्हपथ्य है, गृहपथ्य और मुनिवरों! देखो, वैश्वानर नाम की अग्नि यहाँ देखो, त्याग और तपस्या में अपने जीवन को व्यतीत करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार जब उन्होंने प्रश्न किए और यमाचार्य ने मृत्यु को विजय करने वाला बेटा! याज्ञिक देखो, याज्ञिक ही मृत्यु को विजय कर लेता है। वह आध्यात्मिक याग और भौतिक याग दोनो का समन्वय कर लेता है तो बेटा! वह मृत्यु से पार हो जाता है। उसके जीवन में मृत्यु नही आती। हे मृत्युंजम ब्रह्मा मृत्यु देवं प्रह्वा एक मृत्यु संसार को रूलाने वाली है। परन्तु जब ज्ञान हो जाता है। तो संसार को तू मग्न कर देती है। इसीलिए बेटा! देखो, ज्ञान की प्रतिभा होनी चाहिए, और

ज्ञान के अनुसार जब मानव क्रियात्मक अपने जीवन को बनाता है। तो वह महान बन जाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, इस सम्बन्ध में कोई चर्चा देने नही आया हूँ, विचार-विनिमय केवल हमारे वाक्यों का यह क्या हम अपने में अपनेपन को ही धारणा करते चले जाएं, और परमात्मा की भव्य यज्ञशाला के ऊपर विचार-विनिमय करें, तो आओ, मेरे प्यारे! यज्ञशाला में विराजमान हो करके वाजश्रवा के पुत्र नाचिकेता मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मचारीं ब्रहे वह यमाचार्य के गृह में यज्ञशाला में विद्यमान है और यज्ञशाला में विद्यमान हो करके प्रश्न कर रहे हैं। हे प्रभु! देखो, मैंने स्वर्ग का मार्ग तो जान लिया है, क्या तीन प्रकार की अग्नियों की पूजा करने का नाम स्वर्ग है। हे प्रभु! मैं एक वाक् और जानना चाहता हूँ क्या जब मानो देखो, भौतिक याग से कोई उपरामता को प्राप्त होता है, और माता वसुन्धरा के द्वार से उपराम होता है। तो मानो देखो, वह मानं ब्रह्म आत्मां भूतं ब्रह्मणा लोकां हे प्रभु! मेरी यह उत्कृष्ट इचछा बनी रहती है कि मैं स्वर्ग को त्याग करके मैं अपरामता को मैं मोक्ष को जाना चाहता हूँ, और मैं आत्मा को जानना चाहता हूँ क्या यह आत्मा शरीर को त्याग करके कहाँ जाता है हे प्रभु! तो मेरे पुत्रों! जब यह वाक् बालक नाचिकेता ने यमाचार्य से प्रश्न किया तो यमाचार्य कहते हैं, हे नाचिकेता! हे ब्रह्मचारी! देखो, पूर्व काल से ही सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तब नाना आचार्य हुए हैं। नाना ब्रह्मवेत्ता हुए हैं परन्तु उन ब्रह्मवेत्ताओं का एक ही मन्तव्य रहा है क्या देखो, आत्मा का प्रसंग बड़ा विचित्र है। इसको जागरूक न करो, क्योंकि आत्मवेत्ता बनते हुए अपने में मौन हो जाते हैं। आत्मा के ऊपर चिन्तन करने वाला चिन्तन करता रहता है। परन्तु अन्त में मौन हो जाता है। हे ब्रह्मचारी! तुम आत्मा के प्रसंग को न लो क्योंकि आत्मा का प्रसंग एक भिन्न देखो, एक विचित्र है तो उस समय बालक

नाचिकेता ने कहा हे प्रभु! मैं उस प्रसंग को लेना चाहता हूँ। जो मानो देखो, इस के आत्मा के साथ में मेरे साथ जाएगा, प्रभु! जब यह आत्मा इस शरीर को त्यागेगा पंच लोकों वाले शरीर को त्यागेगा यह लोक से पृथक हो करके वह देखो, वह ज्ञान की तरंगे वह विज्ञान और विवेक की तरंगे आत्मा के साथ चली जाएगी। हे प्रभु! मैं उसको नही चाहता हूँ। जो प्रभु मेरा कर्म से संस्कार बन करके मेरे चित्त मण्डल में प्रवेश हो करके वह यही रह जाएं, हे प्रभु! मैं ऐसा नही चाहता मेरी उतकृट इच्छा यह बनी हुई है, कि मेरा आत्मा भूतं ब्रह्मा मेरे साथ में जाने वाला जो कर्म है, वह कर्म वह विचारता हूँ तो क्रियाकलाप को मैं जान लूं ज्ञान और विज्ञान में मैं प्रवेश हो जाऊं। मेरे प्यारे! देखो, बालक नाचिकेता ने इनके वाक्यों को पान करने वाल देखो, यमाचार्य ने नाना सुन्दरियाँ और देखो, स्वर्ण से मथे हुए स्वर्ण के रथों को और मुनिवरों! देखो, अश्व का श्रृंगार भी देखो, स्वर्ण के मथे और नाना पशु दुग्ध देने वाले पृथ्वी के राष्ट्र को उन्होंने कहा, हे नाचिकेता! तुम आत्मा के प्रसंग को न लो, तुम इस पृथ्वी के राष्ट्र को भोगो तुम मानो देखो, नाना प्रकार के व्यंजनों में प्रवेश हो करके, तुम अपने जीवन को राष्ट्रीयवत से मनाओ, मेरे प्यारे! देखो, नाचिकेता कहते हैं हे प्रभु! देखो, यदि मैंने किसी सुन्दरी से प्यार स्नेह किया है, और वह देखा आज है कल नही रहेगा, तो मुझे अपार कष्ट होगा। हे प्रभु! दुग्ध देने वाला जो पशु है, वह आज दुग्ध दे रहा है, मुझे स्नेह हो जाएगा परन्तु देखो, दुग्ध नही देगा तो मुझे अपार कष्ट होगा। मृत्यु को प्राप्त हो जाएंगा। हे प्रभु! मुझे यह नही चाहिए यह स्वर्ण है आज कल मेरे द्वार पर नही रहेगा, हे प्रभु! मैं इस स्वर्ण को भी नही चाहता। मैं संसार के राष्ट्र को नही चाहता। क्योंकि यहाँ नाना प्रकार के देखो, भ्रातिन्याँ होती रहती हैं, और रजोगुण में सना हुआ मानो देखो, स्वार्थवश हो करके मानाव नाना प्रकार की अशुद्धियाँ उच्चारण करता रहता है। तो प्रभु! मैं

इस संसार के राष्ट्र को नही चाहता हे प्रभु! मैं यह चाहता हूँ कि आत्मा के साथ में जो मेरा कर्म जाएगा विवेक में युक्त हो करके उस मानो विवेक को मैं चाहता हूँ। हे प्रभु! देखो, आत्मा इस शरीर को त्याग करके कहाँ जाता है। क्योंकि मैं उस प्रसंग को लेना चाहता हूँ, मेरे प्यारे! देखो, जब बालक नाचिकेता ने सब को तिलांजलि दे दी वह मानो देखो, न मानो देखो, सुन्दरी चाहिएं। न राष्ट्र चाहिए। न दुग्ध देने वाला पशु चाहिए। न स्वर्ण से मथे हुए मानो देखो, यह वैभव चाहिएं हे प्रभु! ब्रह्मा वर्णनं देखो, नाचिकेता से यमाचार्य कहता है कि बालक ब्रह्मचारी तुम्हें धन्य है, क्या तुम मानो देखो, तुम दो आभाओं को त्याग करके जा रहे हो जो ब्रह्मचर्य से सीधा आत्म विज्ञान में प्रवेश कर जाता है, और वह मानो देखो, सन्यस्थ को क्या वेद में परिणत हो जाता है। वह महान कहलाता है। बुद्धिमानों की दृष्टि में वेद की दृष्टि में बेटा! वह पवित्र कहलाता है। हे नाचिकेता! तू पवित्र है, उस माता को धन्य है जिस माता अपने गर्भस्थल में ऊर्ध्वा में संस्कार दिए, तू संस्कारित है मानो यह उन्होंने कहा तो आओ, विराजो तुम्हें यह मानो देखो, आत्मा का ज्ञान कराता हूँ। तो मेरे प्यारे! देखा नाचिकेता विद्यमान हो गएं यमाचार्य ने यह जान लिया कि शिक्षा का इसे अधिकार है, तो बेटा! जब आचार्य ब्रह्मचारी को शिक्षा देता है तो आचार्य उसकी परीक्षा लेता है तो मानो देखो, नाना प्रकार के वह अवयों बेटा! परिणत कर देता है और जब वह उनके महान बन जाता है। उनके स्थिर हो जाता है तो उसके पश्चात मानो आचार्य उसे अपनाता है और अपना करके कहो आओ, ब्रह्मचारी! जैसे मुनिवरों! देखो, तुम्हें स्मरण होगा सत्यकाम को देखो, महात्मा गौतम ने कहा था, हे सत्यकाम! जाओ चार सौ गऊएं ले जाओ, और यह जब तक एक सहस्र न हो जाए मेरे द्वार पर न आना। तो मानो देखो, वह सत्यकाम भी इसी प्रकार मानो षोडश कलाओं का ज्ञान उसे गऊओं से हो गया था। जब आत्म ज्ञान

होता है, उसके पश्चात आचार्य विशेष पिपासा उसको उपदेश देना प्रारम्भ करता है। तो बेटा! नाचिकेता से कहता है यमाचार्य आओ, तुम्हें मृत्यु से पार करना चाहता हूँ, मृत्यु से तुम्हें उल्लांघना चाहता हूँ। हे नाचिकेता तुम्हारे शरीर में अग्नि प्रदीप्त हो रही है, और वह अग्नि तुम्हारे शरीर में नेत्र के गोलकने बन करके रहती है। जब नेत्रों के गोकलने स्वतः अग्नि स्वरूप बन जाते हैं। तो यह नेत्रों के द्वारा तुम मृत्यु से पार हो गएं हैं। वाणी के द्वारा नाना प्रकार के वाक् और रसों को स्वादन हो रहा है। उन रसों का समन्वय मुनिवरों! देखो, जल से रहता है जल में नाना प्रकार के गुणाधानम माने गएं हैं, चन्द्रमा का रस आता है, मानो सूर्य की ऊर्ज्वा आती है, और भी नाना प्रकार की रश्मियाँ आती रहती हैं। वह जब तुम्हारा देखो, रसना जल स्वरूप बन जाता है। तो उसमें शून्यवान को मृत्यु से पार कर दिया है, और वाक् शक्ति देखो, जिसका अन्तरिक्ष से समन्वय रहता है। शब्दों से वह शब्द मानो देखो, नेत्रों वह श्रोत्रों का विषय बन करके और स्रोत्रों का विषय बन करके, और श्रोत्रों का विषय बेटा! देखो, वह दिशाएं बन करके बेटा! अन्तरिक्ष बन करके जब वह अन्तरिक्ष बन जाते हैं। तो मृत्यु से पार हो गएं हैं। मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार बेटा! वायु के स्वरूप में विद्यमान रहती हैं। जब त्वचा को जान करके तुम देखो, वायु का स्वरूप बन करके प्राणं ब्रह्मा वर्णनं और यह उदगीत और प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहा कह करके अब मानो देखो, यह प्राण स्वरूप बन करके मुनिवरों! देखो, वायु के स्वरूप में प्रविष्ट हो जाती है। तो वायु का स्वरूप जब वह मानो देखो, मृत्यु से पार हो जाओगे हैं मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार देखो, घ्राणेनिद्रयाँ ये पृथ्वी का रूप बन जाएं और रूप जान करके ही उससे पार हो जाओ, मौन हो जाओ विवेक में परिणत हो जाओ, तो मेरे प्यारे! देखो, वह तुम मृत्यु से पार हो जाओगे और मृत्यु से पार होना ही मानो देखो, आत्मा के रूप को जानना है।

मोक्ष प्राप्ति का मार्ग

मेरे प्यारे! देखो, यह तो आत्मां भूतं ब्रह्मा आत्मां तेजं ब्रह्मे लोकां यह आत्मा ही मेरे प्यारे! देखो, दिव्यता में वृत्तियां हो जाती है। आत्मा जब शरीर को त्यागता है, तो सूक्ष्म शरीर के द्वारा जाता है और मुनिवरों! देखो, वह वायुमण्डल में प्रवेश कर जाता है। वहाँ बेटा! तीन प्रकार की वायु गमन करती है। बेटा! देखो, इन्द्रकेतु नाम की वायु और देखो, मृची नाम की वायु सम्भेतु नाम की वायु और मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्मरण की वायु यह भ्रमण करती रहती है। चारों प्रकार की वायु में मानो रमण करता हुआ इनका मन्थन करते रहते हैं, और वह जो तुम्हारे चित्त मण्डल में जो संस्कार हैं। उन संस्कारों को मानो स्मरण शक्ति को वह मानो समाप्त कर देते हैं, और वह मानो देखो, वह चित्त मण्डल के गर्भ में सूक्ष्म बन करके देखो, निहित हो जाते हैं, और निहित हो करके मुनिवरों! देखो, और निहित हो करके देखो, जैसा जिसका संस्कार अन्त मथे तो मथा जैसे अन्त में संस्कार होते हैं। उसी के अनुसार चित्त के मण्डलों कर्म की मानो देखो, खम्भ से वह किसी माता के गर्भ में प्रवेश कर जाता है, और प्रवेश करके वह पुनः पृथ्वी में प्रवेश हो जाता है, पृथ्वी में गमन करने लगता है। तो यह आत्मा मानं ब्रहे कुछ आत्मा ऐसी होती है। जो मोक्ष के निकट होती हैं, वह मानो देखो, शरीर को त्याग करके यह वायुमण्डल में वायु में गमन करके मेरे प्यारे! मेरे प्यारे! गमनं ब्रह्मा गमनं ब्रहे यह भ्रमण करती रहती है, और भ्रमण करके मानो देखो, भोग के अनुसार उन्हें माता के शरीर में प्रवेश कर जाती हैं। उन्हीं संस्कारों से बेटा! अपने में कुछ योगसिद्ध आत्माएं होती हैं। वह आत्मा देखो, शरीर को त्याग करके मेरे प्यारे! देखो, वह यौगिक पुरूषों के गृह में जन्म ले करके देखो, योगसिद्ध को प्राप्त करने लगती है।

तो विचार-विनिमय यह बेटा! आज आज का हमारा वाक् क्या कि परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणागान

गाते हुए मानो देखो, इस संसार से पार हो सकें हमें मृत्यु से पार होना है। मृत्यु से उल्लांघना है, और जो मृत्यु से मानो पार हो जाता है। ज्ञान और विज्ञान और विवेक के माध्यम से बेटा! वह पार हो जाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं आज इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं प्रगट करूंगा, बालक नाचिकेता को यमाचार्य ने आत्मा का ज्ञान कराया और यह कहा कि आत्मा ब्रह्मणां ब्रह्मे ब्रह्मं देखो, यह जो आत्मा है। यह आत्मा मानो शरीर को त्याग करके अपने जन्म सोत्रं ब्रहे प्रविष्टि हो जाती है। तो उसमें प्रणां ब्रहे देखो, जब तब चित्त में संस्कार रहते हैं। जब तक यह आवागमन बना रहता है, और जब चित्त का मण्डल बेटा! देखो, कर्मों से अथवा चित्त मण्डल में जब कोई संस्कार नही रहेंगे, तो बेटा! उससे वह उपराम हो जाता है। आओ, मेरे प्यारे! मैं आज विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, आज का विचार ये तुम्हें दे रहा हूँ ऊपर ब्रह्मा लोकां वाचसुतं देवो ब्रह्म लोका आओ, मेरे प्यारे! देखो, बालक नाचिकेता को जब यह जान लिया तो नाचिकेता अपने में मौन हो गया। और नाचिकेता ने कहा-प्रभु! आपको धन्य है। आप ने मेरे हृदय में जो नाना प्रकार की ग्रन्थियाँ लगी हुई थी उसका आपने स्पष्टीकरण किया है, उन्हें चित्त के मण्डल में मानो देखो, अपने संस्कारों को वृत करना चाहता हूँ। उनको वृत ही दृष्टिपात करूंगा। तो मेरा जीवन कुछ ऊर्ध्वा में गमन करता रहेगा। तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवां भद्रा मनश्चम आप्यां देवाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद आत्मिक चर्चा कर रहे थे, और आत्मिक चर्चा में गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। जैसे गागर को सागर में सागर को गागर को सागर में भरण कर देते हैं। इस प्रकार उनका उद्गीत चल रहा था, उसी उदगान के साथ में आज

मोक्ष प्राप्ति का मार्ग

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे पुनः से समय दिया इससे मैं इनका बड़ा आभारी रहता हूँ। आज हमारी यह आकाशवाणी जा रही है। जहाँ हमारी वाणी का प्रसारण हो रहा है, वहाँ देखो, एक याग सम्पन्न हुआ है, मैं यागों में मेरा आत्मा रहता है। मानो उससे बड़ा प्रसन्न चित्त हो जाता है। और देखो, यह जो काल चल रहा है। यह काल वार्म मार्ग का काल है, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई समय यह उच्चारण कर गया हूँ कि यह जो काल है, यह वाममार्ग का काल है, और वाममार्ग उसे कहते हैं जो उल्टे मार्ग पर गमन करता है, अथवा उल्टे मार्ग पर चलता है इसी प्रकार आधुनिक काल में राष्ट्रीय वाममार्ग है, और प्रजा भी वाममार्ग है, और मानो देखो, वह सुरा सुप्दरी में सुरा सुन्दरी और देखो, वक्रतं मानो द्रव्य में वह विश्वसनीय बन रहा है। वह आत्मा में आत्मा के उस सरगम को अपने में धारण नही कर रहा है। तो यह मानो देखो, उल्टा मार्ग है, आत्मा के सम्बन्ध में मानो चिन्तन करने लगता है, वह शुद्ध मार्ग है, और जब देखो, यहाँ सुरा और सुन्दरी के चिन्तन में लग जाता है। द्रव्य की लोलुपता में, तो ये मानो देखो, उल्टे मार्ग पर गमन करने लगता है वह गमनं ब्रह्मा गमनं देवाः मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में कहा कि द्रव्य तो मानो कोई सुरक्षा नही है। द्रव्य तो होना चाहिए परन्तु द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। द्रव्य का जब सदुपयोग होता है। वही द्रव्य देखो, ममता में परिणत हो जाता है। वही द्रव्य हमें ममता के लिए प्रेरित करने लगता है। इसी प्रकार जब द्रव्य का दुरूपयोग होता है तो वह द्रव्य उससे चला जाता है। द्रव्य का विनाश ही मृत्यु है। और द्रव्य का सदुपयोग जीवन माना गया है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई कालों में वर्णन कराया है, आज मैं इस सम्बन्ध में चर्चा नही दूंगा केवल यह क्या आधुनिक काल के राष्ट्र का देखो, नाना प्रकार के मानो देखो, अपने में नाना सम्प्रदायों में परिणत हो रहा है, देखो, राजा के राष्ट्र में ज्ञान होना चाहिए

राजा के राष्ट्र में विवेक होना चाहिए राज ब्रह्मज्ञानी होना चाहिए और जब राजा जब ब्रह्मज्ञानी होता है तो प्रजा भी ब्रह्मवादी बन करके राष्ट्र को ऊँचा बना देती है। आज मैं राष्ट्र की चर्चा न देता हुआ, जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है। याग सम्पन्न हुआ है, मैं अपने यज्ञमान को अपनी शुभकामना प्रगट कर रहा हूँ, कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तेरे जीवन में मानो देखो, ऊर्ध्वा में प्रतिभा आती रहे और द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे। द्रव्य का दुरूपयोग, तेरे गृह में नही होना चाहिए, और तेरे गृह में नही होगा तो देखो, द्रव्य तेरा साथी बना रहेगा अमृत को प्राप्त करते रहोगे, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और महानता में तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे ऐसी मेरी कामना रहती है। परन्तु मैं राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में एक ही वाक् कहा करता हूँ कि राजा के राष्ट्र में भिन्न-भिन्न प्रकार की ईश्वर के नाम पर रूढ़ि नही रहनी चाहिए। जब नाना प्रकार की रूढ़ियाँ होती हैं। तो राजा के राष्ट्र में रक्त भरी क्रांति के अवाशेष बने रहते हैं, मानो देखो, जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा कि धर्मं ब्रह्मे देखो, राष्ट्रवाद में धर्म केवल देखो, शब्दों में स्वीकार कर लिया है, धर्म केवल देखो, पृथ्वी तल पर स्वीकार कर लिया अरे, धर्म तो मानो तेरी इन्द्रियों में समाहित रहता है। जब मानो देखो, नेत्रों से सुदृष्टिपान करोगे श्रोत्रों से सु शब्दों को ग्रहण करोगे वाणी से सत्य उच्चारण करोगे, और देखो, मानवीय शब्दों में तुम्हारा मानवीयतव रहेगा। उसका नाम धर्म कहा गया है, और कर्तवय का नाम धर्म है वेद का एक-एक वाक् बेटा! अन्तःकरण में ब्रह्मणो ब्रहे देवत्वाम वनगतप्रीहि कृतो लोकां मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई कालों में वर्णन कराया क्या धर्मं प्रमहण ब्रहे राष्ट्र का जो निर्माण होता है। वह धर्म की रक्षा के लिए होता है, और धर्म मानव की इन्द्रियों में समाहित और कर्तव्यवाद में निहित रहता है। उसी में तेज रहता है, तो इसीलिए राजा के

राष्ट्र राजा को स्वयं ब्रह्मवेत्ता बनना चाहिए, और ब्रह्मवेत्ता बन करके भिन्न-भिन्न प्रकार के जो रूढ़िवादी हैं। सम्प्रदाय है इनके आचार्यों को एकत्रित करके मानो देखो, उनका शास्त्रार्थ हो और राजा की मध्यस्थता में हो और जो कर्तव्य और विज्ञान से और मानवीयता के रह जाए उसी को स्वीकार कर लेना चाहिए। वही कर्तव्यवाद है, और कर्तव्यवाद का नाम ही धर्म है, कर्तव्यवाद में ही मानो देखो, सर्वत्र जगत निहित रहता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में राष्ट्रवाद में शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में भी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अपने उद्गीत गाते रहते हैं। अपनी विचारधाराएं प्रगट करते रहते हैं। तो आज मैं उन विचारों में तो नही जाऊंगा। केवल राजा ब्रह्मवेत्ता हो और ब्रह्मवेत्ता बन करके कोई ईश्वर के नाम पर रूढ़ि नही रहनी चाहिए। यदि रूढ़ि रहेगी तो रक्त भरी क्रान्ति आयेगी एक दूसरे के विचारों का मानो देखो, व्यवधान होगा और उन विचारों में ही मानो रक्तमयी विचार रहेंगे इसीलिए राजा को ब्रह्मवेत्ता बनना चाहिए। अश्वमेधवादी बन करके और राष्ट्र को ऊंचा बनाएं प्रजा अपनी इन्द्रियों का पालन करने वाली हो, और विज्ञान में तत्पर रहना चाहिए। इस प्रकार जब राजा ब्रह्मवेत्ता होगा कर्तव्य परायण होगा तो प्रजा उसके अनुसार बरतने लगेगी। जैसे माता-पिता अपने में सुसज्जित होते हैं। कर्तव्य का पालन करने वाले तो मानो उनके बाल्य बालिका भी उसी प्रकार का क्रियाकलाप करते हैं। इसी प्रकार राजा को ब्रह्मवेत्ता बन करके और याज्ञिक बन करके जब वह विचरण करेगा तो प्रजा उसके अनुसार बरतती रहेगी, प्रजा महान बनेगी राजा ब्रह्मवेत्ता होगा तो मानो देखो, यह समाज अपने में महानता का और अपने धर्म और मानवीयता को कर्तव्य के पालन में ले जाएगा। तो यह आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यही कि राजा के राष्ट्र में रूढ़िवाद नही होना चाहिए। रूढ़िवाद का विनाश होना चाहिए। राजा ज्ञानी होना चाहिए। ब्रह्मवेत्ता जिससे ब्रह्म का बखान करने

वाला राजा हो, और प्रजा उसके साथ स्वतः बरतने लगती है। मानो देखो, इस प्रकार मेरी यह विचारधारा जैसे महाराजा दिलीप का जीवन मुझे स्मरण आता रहता है, मानो देखो, महाराज दिलीप अपने में अपनेपन की धाराओं में रत्त होता रहा है।

तो विचार आता रहता है कि मैं आज विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, केवल यह क्या देखो, यहाँ कर्तव्य परायणता की आवश्यकता है और कर्तव्यवाद ही मानव को ऊँचा बनाता है मानवीयतव पर ले जाता है, और धर्म मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है, उस धर्म को विचार करके धर्मज्ञं ब्रह्मा ज्ञानं ब्रहे ब्रह्मज्ञानी बन करके अपने में वेद रूपी प्रकाश अथवा उसको अपना करके संसार में रमण करना चाहिए। यह आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से उपरामता को प्राप्त होना चाहता हूँ। केचल मेरे विचारों का अभिप्रायः यह है कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, मानो देखो, तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। ऐसी मेरी कामना रहती है ऐसा मेरा विचार रहता है मानो मेरा हृदय यज्ञमान के साथ रहता है तो मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ

पूज्यपाद गुरूदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने विचार दिए और उन विचारों में कितनी मार्मिकता है। उन विचारों में राष्ट्रीयवाद और देखो, द्रव्य का सदुपयोग वेद की प्रतिभा का उन्होंने प्रतिपालन किया है, तो आज का विचार क्या क्या हम मानो देखो, अपने में आत्मवेत्ता बनें ज्ञान और विज्ञान को धारण करते रहें, और परमात्मा का यह जो भव्य संसार है यह एक प्रकार की यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला को चिन्तनीय बनायें अपने जीवन को ऊँचा बनायें। इसके साथ यह हमारा वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मणा गायन्त्वा। ओ३म् यश्शचाहं गायन्त्वाः आ पा रेवाः यम सर्वाः गायन्त्वा रथं मा णा देवां देवत्यां मम प्रजां मम रथा याश्चमां।

५ मोक्ष प्राप्ति का मार्ग २६ ०३ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ हैं, और जितना भी यह जड़ जगत और चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, तो प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहतें हैं। तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महिमा का, सदैव गुणगान गाते रहते हैं। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की एक कुंजी है, जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, प्रायः अपने में अनुसन्धान करता रहा है, और विचार करता रहा है, कि वे परमपिता परमात्मा का एक अनूठा जगत है, जिस जगत में हम सब मानो विद्यमान हैं, और उसके ऊपर अन्वेषण करते रहते हैं।

तो आओ, मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र, हमें कुछ प्रेरित कर रहा है, यूँ तो मानव संसार में प्रेरणा का एक स्रोत माना गया है, प्रेरणा को प्राप्त करता रहता है। अपने क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहता है। तो प्रेरणा का जो स्रोत है वह मानवतव कहलाता है। नाना प्राणियों से प्रेरणा लेता रहता है, और प्रेरणा को प्राप्त करता हुआ, अपने क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहा है। तो आज का हमारा वेदमन्त्र हमें ये प्रेरित कर रहा है, हे मानव! तू अपने में मानवीयता को जानने का प्रयास कर, क्योंकि तेरा जो मानवीयतव मानो एक शरीर है वह एक मननशाला है, उस मननशाला में तुझे मनन करना है, कहीं

ज्ञान और विज्ञान में मननशील होना है, तो कहीं मानो देखो, ब्रह्माग्नि में प्रवेश होना है कहीं तुझे याज्ञिक पुरूष बन करके और ब्रह्मवेत्ता बनना है, कही तुझे दक्षिणायन और उत्तरायण के ऊपर विचार-विनिमय करना है तो ये नाना प्रकार का विचार सर्वत्र तेरे समीप रहता है। और यह भी मानव में एक प्रेरणा होती रहती है, कि यह संसार में एक महानता को प्राप्त होता चला जाऊं। और मैं सर्वत्र विद्याओं को जानने वाला बनूं, और अन्त में मैं आत्मवेत्ता बन करके मोक्ष की शून्य बिन्दु में अपने को ले जाऊं यह प्रत्येक मानव के हृदय में यह नाना प्रकारी की प्रेरणाएं आती रहती हैं, और नाना प्रकार का ये विचार-विनिमय भी करता रहा है। तो इसलिए हमारा आज का वेदमन्त्र यह कहता है हे मानव! तू अपने में मानो जानने के लिए तत्पर हो। क्योंकि जितना भी ये संसार है, यह तुझे जानना है, और जान करके तुझे अपने में अलंकृत होना है, आज का हमारा वेदमन्त्र कह रहा था इन्द्रो समं ब्रह्मा असुते वाचसुतं ब्रह्मा वर्णासुतं वेद का मन्त्र कहता है हे इन्द्र! तू अपने अपने में ही समाहित हो जा, हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में, नाना प्रकार के इन्द्रों की विवेचनाएं होती रही हैं। इन्द्र नाम कही आत्मा को कहा गया है, क्योंकि ये जो शरीर रूपी जो नगरी है, अथवा पुरी है, अथवा राष्ट्र जो इसका स्वामी है, इसका नाम इन्द्र है, तो यहाँ आत्मा का वाची इन्द्र आता रहा है परन्तु देखो, जो एक सौ एक अश्वमेध याग कर लेता है, वह इन्द्र कहलाता है। और वह देवताओं का धिपति है कही परमात्मा का नाम बेटा! उस इन्द्रतव मं इन्द्रतवसुतं ब्रह्मा वह इन्द्र कहलाता है। जो ब्रह्म है, इस संसार रूपी जो यज्ञशाला हैं। संसार रूपी जो मानो यह ब्रह्माण्ड है, इसका जो स्वामी है, अथवा नेतृतव करने वाला है, उसका नाम इन्द्र है। तो इन्द्र के नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द आते रहें हैं। परन्तु राजा का नाम इन्द्र है, जो एक सौ एक अश्वमेध याग करता है। मेरे प्यारे! वह अपनी इन्द्रपुरी में राज्य करता है,

और त्रिपुरी उसका मानो एक साम्राज्य है। जहाँ तीनो गुणो वाले प्राणी अपने में वास करते हो, ऐसा जो नगर है मानो उसका नाम इन्द्रपुरी कहा जाता है। वह त्रिपुरी के नाम से वर्णित किया गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है बहुत-सी वार्त्ताएं बड़ी साहित्यिक बड़ा विचित्रता में परिणत होती रही हैं। जहाँ वेद का मन्त्र यह नाना प्रकार से इस संसार को अलंकृत कर रहा है। हमारे यहाँ देखो, नाना प्रकार के अलंकृतियों में मानव सदैव तत्पर रहा है। तो मेरे प्यारे! यहाँ वैदिक साहित्य में इन्द्र नाम राजा को कहा गया है। इन्द्र परमात्मा का है, तो यह नाना प्रकार के मानो गुण कर्म स्वभाव से उनका नामोकरण और उनकी विचित्रताएं मानो उसमें निहित रहती हैं। तो हमारा यह जो राष्ट्रीयतव है, इसमें जो प्राणी मात्र रहता है, इसमें नाना प्रकार के अलांकरों से अलंकृत रहा है, और यह मुनिवरों! देखो, उनके नाना प्रकार के क्रियाकलापों के आधार पर उनके नामोकरण की जो विभिन्नता प्रायः देखो, इस संसार में आती रही है, और साहित्य भी उन्ही के आधार पर रहता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ इन्द्र जो एक सौ एक अश्वमेध याग करता है, वह मानो सम्बोधित किया जाता है, वह इन्द्र के नाम से सम्बोधित किया जाता है। हे इन्द्र! तू मानो संसार का स्वामी तू राष्ट्र का स्वामी है, और जैसे आत्मा इस शरीर में वास करता है, और आत्मा मानो देखो, इस शरीर का स्वामी है, इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, बाह्य और आन्तरिक दोनो प्रकार के जगत में जो निहित रहने वाला है। उसका नाम आत्मा है। तो यहाँ आत्मा को इन्द्र कहा है, और राजा का नाम भी इन्द्र है। जो मानो देखो, राजाओं के ऊपर धिराज है, जो तपस्वी हो तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था क्या महात्मा भुंजु के दो पुत्र थे, जिनका नाम अश्विनी और

कुमार कहा जाता था अश्विनी कुमार दोनो पुत्र महात्मा भुंजु के बड़े तपश्चर कहलाए जाते थे परन्तु देखो, आयुर्वेद का उन्होंने बहुत अध्ययन किया और आयुर्वेद के ऊपर उनका बड़ा नृत्त होता रहा है। मुझे बेटा! जब उनका काल स्मरण आता रहता है तो बेटा! देखो, आयुर्वेद की औषधियाँ उनको स्वप्नवत में अपने गुणों का वर्णन करती रही हैं, और यह उद्गीत गाती रही है कि अश्विनी देवां भूतं क्या हम देखो, अमुक रूग्ण के लिए मानो देखो, अपने क्रियाकलापों में आते रहे हैं। तो महात्मा अश्विनी कुमार नाना प्रकार के औषधियां के बड़े ऊर्ध्वा में वैद्यराज थे तो मेरे प्यारे! देखो, जब वैद्यराज बनें तो एक सौ पांच वर्ष तक उन्होंने मुनिवरों! देखो, उन औषधियों का अध्ययन किया, और वह आयुर्वेदाचार्य बन गएं, परन्तु देखो, वह अपने पूज्यपाद गुरुदेव के एक समय समीप पंहुचे महात्मा रोहिणी कृतिका के द्वार पर जब पंहुचे, तो रोहिणी ने कहा कहो कहो ब्रह्मचारियों तुम्हारे में क्या सुति हैं? उन्होंने कहा-प्रभु! हमने आयुर्वेद का अध्ययन किया है, उन्होंने कहा जाओ तुम ब्रह्मवेत्ता बनो। उन्होंने कहा-प्रभु! ब्रह्म का उपदेश कौन देगा, उन्होंने कहा ब्रह्म का उपदेश तुम्हें महात्मा दधीचि प्रदान करेंगे। मेरे पुत्रों! देखो, वहाँ से वह गमन करते हैं और गमन करते हुए जब महात्मा दधीचि के द्वार पर पंहुचे तो दधीचि ने उनका स्वागत किया कहा आओ, विराजो उन्होंने कहा हे प्रभु! ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करने के लिए हम आयुर्वेद में तो पारायण हो गएं हैं। औषधि विज्ञान में जितना हम जान सकते हैं उतना जान पायें है। परन्तु हमारी उत्कृष्ट इच्छा यह है कि हम ब्रह्मवेत्ता बनें, और ब्रह्मवेत्ता बनाने के लिए हमें आपका उपदेश चाहिए। महात्मा दधीचि ने कहा क्या तुम ऋषि-मुनियों से इसका परामर्श करो, उन्होंने कहा तो बहुत प्रियतम तो उन्होंने वहाँ से उन्होंने भ्रमण किया और भ्रमण करते हुए वह महात्मा भृगु जी के द्वार पर पंहुचे महर्षि भृगु से कहा कि हे प्रभु! हम ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करने के लिए आए हैं।

तो महाराज इन्द्र को यह प्रतीत हो गया था क्या अश्विनी कुमार मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता बनना चाहते हैं। वह आयुर्वेद में तो पारायण हैं। उन्होंने आयुर्वेद के सोम को अपने में ग्रहण कर लिया है, और सोम उसे कहते हैं, जो नाना प्रकार की औषधियों का सोम बना करके पान कर जाएं और उसके मानवीय जो मस्तिष्क की नाना प्रकार की जो ग्रन्थियाँ लगी हुई हैं। उनका स्पष्टीकरण हो जाएं, सोम को पान करने से तो मुनिवरों! देखो, बुद्धि उसकी प्रखर हो जाती है, और बुद्धि का इतना ऊर्ध्वा में माप दण्ड हो जाता है। क्या मुनिवरों! वह ब्रह्माण्ड को मापने वाले हों तो इस प्रकार अश्विनी कुमारों की बुद्धि मानो सोम को तो प्राप्त हो गई थी। क्योंकि नाना प्रकार की औषधियों का खरल बना करके और जो पान करता है। तो बेटा! वह शान्त मुद्रा में मुद्रित हो करके सौम्यता को प्राप्त हो जाता है, और सोम उसे कहते हैं जिसकी वाणी में मधुरपन आ जाएं। जिसकी वाणी में मानो देखो, उसके क्रियाकलापों में परमात्मा का चिन्तन आ जाएं तो मानो देखो, वह जो चिन्तनीय जो विषय है। वह सोम रस कहा जाता है। हमारे यहाँ सोम की विवेचना करते हुए आचार्यों ने यह कहा है कि सोमरस मानो देखो, वह है जो अध्ययन करता है, और अध्ययन के करने के पश्चात उसका जीवन क्रियात्मक बन जाता है, और आत्मामं ब्रह्मे देखो, मन के द्वारा मानो देखो, मन को आत्मा में दृष्टिपात करने वाला मानो देखो, वह सोम को प्राप्त हो जाता है, और आत्मा को मानो देखो, ब्रह्म में स्वीकार करने वाला सौम्य कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार उन्होंने अपनी वार्त्ताएं जब प्रगट की तो महात्मा भृगु ने कहा भई! ब्रह्मवेत्ता का उपदेश मैं ब्रह्म का उपदेश नही दे सकूंगा। क्या महाराज इन्द्र के यहाँ से एक घोषणा हुई है, अभी-अभी अश्विनी कुमारों को ब्रह्मविद्या का उपदेश देगा मानो उसके कण्ठ के ऊपरले भाग को दूरी कर दिया जाएगा। तो मैं इसमें असमर्थ हूँ, तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने इसका उत्तर जब दिया तो अश्विनी

कुमार बोले कि हे प्रभु! क्या आप इन्द्र के आधीन रहने वाले हैं? उन्होंने कहा नही हमें देखो, अपने धिराज का तो उनके आदेशों का पालन तो अवश्य करना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, वहाँ से उन्होंने गमन किया और भी नाना ऋषियों से वार्त्ता प्रगट की, परन्तु सर्वत्र उन्हें यही उत्तर दिया कि हम तुम्हे हम ब्रह्म विद्या उपदेश नही देंगे। मेरे पुत्रों! देखो, वह भ्रमण करते हुए पुनः महात्मा दधीचि के द्वार पर आए, और दधीचि से कहा हे प्रभु! जो इन ब्रह्मवेत्ताओं ने यह कहा कि हम ब्रह्म का उपदेश नही दे सकेंगे। इन्द्र के यहाँ से घोषणा हुई है क्या जो अश्विनी कुमारों को ब्रह्म विद्या का उपदेश देगा उसके कण्ठ के ऊपरले भाग को दूरी कर दिया जाएगा। तो हे प्रभु! हम ब्रह्मा व्रत्यं देवां हे प्रभु! देखो, हम उस ब्रह्म विद्या को कैसे प्राप्त करें? उन्होंने कहा तुम्हें ब्रह्मविद्या का उपदेश मैं दे सकूंगा। परन्तु तुम क्या सहायता करोगे तुम्हारी आयुर्वेद की कितनी विशाल गति है उन्होंने कहा-प्रभु! हमने सोमरस का पान कर लिया है। उन्होंने कहा सोमता का वर्णन करो उन्होंने कहा-प्रभु! जब देखो, मानव के कण्ठ के ऊपरला भाग दूरी हो जाएगा, तो उसको हम नियुक्त कर सकते हैं और मानो हृदय को शरीर को दोनों को पृथक-पृथक करके औषधियों में नियुक्त कर सकते हैं। और छह माह के पश्चात दोनो का सम्मिलन करा करके साम्य गति आ जाएगी। ऐसा मानो देखो, औषध हमारे द्वारा इसको हमने जाना है। तो मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा तो बहुत प्रिय। तो मैं तुम्हें ब्रह्म का उपदेश दूंगा मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मनां ब्रह्मे वह अगला दिवस आया तो उन्होंने ब्रह्म का उपदेश देना प्रारम्भ किया, और उन्होंने कहा कि ब्रह्म क्या है? यह तुम्हें जानना है मानो देखो, ब्रह्म की प्रतिभा को जानने के लिए प्रायः देखो, तीन प्रकार की आभाएं हमारे यहा नियुक्त की जाती हैं। सबसे प्रथम देखो, आत्मा है, और परमात्मा और प्रकृति है। यह तीनों पदार्थ संसार में देखो, अनादि स्वीकार किए जाते हैं। जब देखो, हम ब्रह्मे देखो, यह

अनादि हैं, तो मानो देखो, एक रचने वाली वस्तु है, उसका नाम प्रकृति है और उस वस्तु का जो उपभोग करता है उसका नाम आत्मा है, और जो उसका निर्माण करने वाला जो शिल्पकार है। जो विचित्र है, वे परमपिता परमात्मा उसका निर्माण करता है। शून्यं बिन्दु में शून्यां भूतं ब्रह्मे वह शून्यता को प्राप्त करके देखो, शून्य को उसमें विकास में ले आता है। वे परमपिता परमात्मा कहा जाता है। तो उस स्वरूप को जानना है क्या आत्मा परमपिता परमात्मा एक-एक कण-कण में व्याप्त है वह आत्मा में भी विद्यमान है और आत्मा का जो क्षेत्र है, जो वह प्रकृति का क्षेत्र कहा जाता है, जिसको हमारे यहाँ देखो, पंचमहाभूतों के रूप में वर्णन किया गया है। तो तुम पंच महाभूतों को जानने का प्रयास करों। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन कराया, तो इतने में मुनिवरों! देखो, इन्द्र के यहाँ यह घोषणा प्राप्त हो गई थी, कि महात्मा दधीचि अश्विनी कुमारों को ब्रह्म का उपदेश दे रहे हैं। तो वह ब्रह्म का जैसे उपदेश दे रहे थे, इतने में मुनिवरों! देखो, महाराज इन्द्र के यहाँ से एक कात्यान नाम का एक यन्त्र मानो गमन करता है और वह यन्त्र गमन करता हुआ, महात्मा दधीचि जैसे ब्रह्म का उपदेश दे रहे थे, उसके कण्ठ के ऊपरले भाग को मानो देखो, उसके भाग कर दिए वह यन्त्र इन्द्र के यहाँ स्वतः गमन करता है। मानो अस्त्रों शस्त्रों के प्रति असुता उनमें व्याप्त हो गया। तो मेरे प्यारे! देखो, अश्विनी कुमारों ने, नाना प्रकार की औषधियों को जान करके, और औषधियों को एकत्रित करके, मेरे प्यारे! अग्नि में तपा करके, खरल करके, और मंगल्य वृत्ते वह जो उनका कण्ठ का भाग औषधियों में नियुक्त कर दिया और मुनिवरों! कहीं से अश्व का कण्ठ वह ला करके मुनिवरों! देखो, महात्मा दधीचि के कण्ठ के ऊपरले भाग में स्थित कर दिया और स्थित करने के पश्चात नाना प्रकार की औषधियों का लेपन जैसे ही किया तो लेपन करने से मुनिवरों! देखो, वह अपनी वाणी का उद्घोष गाने

लगे क्योंकि आत्मा का ब्रह्मणो वर्णा सुतं मानो देखो, आत्मा से ब्रह्म का उपदेश प्रारम्भ हो गया और मुनिवरों! देखो, वह उसमें एक कृतिक नाम की औषध होती है उस औषध का उन्होंने दोनो ने पान किया तो मेरे प्यारे! अश्व के मुखारबिन्दु से वह बैखरी वाणी का उद्घोष होने लगा, तो उसको वह जानने लगे। मानो देखो, मानव बड़ा विचित्र है, परम्परागतों से ये प्रत्येक प्राणी की मानो भाषा को जानने के लिए तत्पर हो जाता है। उनके क्रियाकलापों में तत्पर हो जाता है। जबकि इसके द्वारा तपश्चर होता है वह तपस्या का एक मूल कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, मस्तिष्क का अध्ययन करने वाले, आचार्य जन जब मस्तिष्क का अध्ययन करते हैं, तो मस्तिष्क का अध्ययन करके उसके गुणों को जानने लगते हैं, यह कौन से वरण वाला है? यह कौन इसका वरण बन सकता है। तो मानो देखो, इस प्रकार वह मस्तिष्कों में इस प्रकार की रेखाएं विद्यमान हैं हमारे यहाँ जब भगवान मनु ने जब बेटा! सबसे प्रथम निमार्णित किया जब शिक्षा प्रणाली प्रारम्भ हुई तो मानो देखो, उन्होंने शिक्षा प्रणाली के माध्यम से आचार्यों को यह बोध कराया कि तुम मस्तिष्क का अध्ययन करो इसीलिए देखो, विद्यालयों में जब आयुर्वेदा आचार्य होते हैं और वह देखो, मस्तिष्क का अध्ययन करते हैं निर्णाय कर देते हैं कि ये तो देखो, उसमें ब्राह्मण होता है, और यह मानो वैश्य होता है, और ये मंगलं ब्रह्मे वर्णासुतं मानो देखो, क्षत्रिय दूसरों की रक्षा कर सकता है। मानो देखो, तो उसी प्रकार की विद्या प्रदान कर देता है। आचार्यों का कर्तव्य है, कि जो ब्रह्मविद्या में पारायण हो, वह ब्राह्मण और जो मानो दूसरों की रक्षा करने में क्षात्र बल से वह क्षत्रिय है। और जो देखो, गुणज करने वाला और जो देखो, व्यापार में सुखद हो, कृषि उदगम में कुशल हो, तो वह देखो, वैश्य उपाधि को प्रदान किया जाता है। और जो मेरे प्यारे! तीन वर्णों का वर्ण होता है, मुनिवरों! देखो, अमृतं ब्रह्मा देखो, वह अपने में जो अध्ययन न कर सके

जिसमंक अध्ययन करने की क्षमता नही रहती, वही मुनिवरों! देखो, निष्क्रिया माना जाता है। तो विचार आता है मेरे प्यारे! ये परम्परागतों से, भगवान मनु ने इस प्रकार के मानव की संज्ञा का संगितं ब्रहे व्रतं मानो देखो, इसका उद्बोधन किया और यह कहा कि इस प्रकार देखो, तुम्हारा वरणावृत्ति होना चाहिए।

तो मुनिवरों! देखो, मुझे ऐसा स्मरण आता रहा है कि मुझे महाराज अश्वपति के यहाँ कुछ समय तक देखो, अध्यापन का कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मैं उसमें मानो क्योंकि परम्परागतों से क्योंकि निर्वाचन पद्धति प्रायः देखो, मानवीय मस्तिष्कों में निहित रही है तो आज बेटा! देखो, इस काल में न जाता हुआ, केवल विचार-विनिमय ये देखो, अश्विनी कुमारों को जब ब्रह्मविद्या का उद्घोष आने लगा, तो विचार यह मुनिवरों! देखो, आचार्य और पत्नी की वाणी से मानो उसका उद्बोधन भी वह श्रवण करता रहा है और उसको जानता रहता है कि यह क्या उद्घोष कर रहा है तो मुनिवरों! इसी प्रकार उनका उद्घोष बड़ा विचित्रता में परिणत रहा है, तो विचार आता रहता है बेटा! देखो, जब खेंचरी वाणी प्रारम्भ हुई मानो अश्व के मुखारबिन्दु से अश्विनी कुमार ब्रह्म विद्या के संकेतों को अपने में ग्रहण करते रहे और वह ब्रह्मविद्या को प्राप्त करते रहे। तो मुनिवरों! देखो, वह आत्मं ब्रह्मं आत्मं राजा इन्द्र मानो देखो, द्वितीय मस्तिष्क को दूरी नही कर सकता थे। क्योंकि उनका यह नियम था अस्त्रों से शस्त्रों से इस प्रकार का क्रियाकलाप रहा है, कि जिन्होंने एक समय वह क्रियाकलाप कर लिया है, वह द्वितीय मानो देखो, उसके निर्माण की आभा पुनः से परिणत होती है, तो पुनः से वह क्रियाकलाप कर सकता है। परन्तु देखो, इस प्रकार के यन्त्र महाराज इन्द्र के यहाँ रहे हैं, कि जो मानव के कण्ठ के ऊपरले भाग को मानो देखो, मस्तिष्कं ब्रहा वह कण्ठ से दूरी करता है, और पुनः से तरकश में मानो देखो, वही यन्त्र मानो

देखो, निर्मित हो जाता है। तो विचार आता रहता है कि यह विज्ञान मानवीय मस्तिष्कों में परम्परागतों से ही, निहित रहा है तो हमें विज्ञान में रत्त तो रहना ही चाहिए तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कुछ समय के पश्चात अवधि समाप्त हो गई। तो उन्होंने नाना प्रकार की ऋतिका, त्रिवाणति, नाना प्रकार की देखो, औषधियों को एकत्रित करके और उनको खरल बना करके तपा करके पुनः मानो देखो, अश्व के मस्तिष्क को दूरी किया, और उन्होंने महात्मा दधीचि के मस्तिष्क को ज्यों का त्यों स्थित करके बेटा! देखो, उन्होंने औषधियों का लेपन किया, और लेपन करके पुनः वह दधीचि के स्वरूप में विद्यमान हो गएं। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने ब्रह्म का उपदेश दिया, उस समय से महात्मा दधीचि ने यह निर्णय किया क्या मैं मानो यह ब्रह्म का उपदेश अवश्य दूंगा, और जो भी विद्या मेरे द्वारा मैं इस विद्या का उपभोग करूंगा। मेरे प्यारे! देखो, यह विद्याएं उन्होंने नाना ऋषि-मुनियों को देते रहते और महात्मा अश्विनी कुमार जो मुनिवरों! देखो, आयुर्वेद के पाण्डितव में रमण करते वहाँ वेद में मुनिवरों! देखो, ब्रह्म विद्या में भी पारायण हो गएं, और ब्रह्मविद्या उसे कहते हैं, जहाँ मानव सर्वत्र जानने के पश्चात अपने में मौन हो जाता है, और मौन हो करके अपनी अन्तरात्मा को विचारता है, क्योंकि जिस गृह में यह आत्मा रहता है, मानव उस गृह को नही जानता इसीलिए उस गृह को जानना बहुत अनिवार्य है, वही परमपिता परमात्मा का मानो प्रेरित कहलाता है, जो जिस शरीर में यह वास करता है, आत्मा मानो जिसमें वास करता है, उस शरीर को नही जानता कौन निर्माण करता है, कौन निर्माणवेत्ता है, मेरे प्यारे! कितना व्यख्यान देने वाला प्राणी हो परन्तु देखो, यह साधकों का क्रियाकलाप हैं। क्या वह देखो, अपने उस मानव शरीर को जानने का प्रयास करें। यह पंच महाभौतिक पिण्ड है, और पंच महाभौतिक पिण्ड में मानो देखो, वही देवताओं का आवास रहता है। जिसमें यह आत्मा विद्यमान

है जिसको पंच महाभूत कहा जाता है, एक समय बेटा! महर्षि व्यास जी मुनि से यह प्रश्न किया कि महराजा आत्म का लोक क्या है? लोक कहते हैं गृह को लोक कहते हैं, जहाँ वह वास करता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, महात्मा जालवी ने यह कहा क्या देखो, आत्मा का जो लोक है। वह पंच महाभूतों का लोक है, यह जो पंच महाभूत हैं, यह इसका लोक माना गया है। इसीलिए जो वास करता है, मानो देखो, जैसे मानव इस संसार में आता है, नाना प्रकार के अपने गृहों का निर्माण करता है, इसी प्रकार देखो, आत्मा का जो लोक है। यह मानव शरीर है और शरीर का जो लोक है वह मानो देखो, पृथ्वी के कणों के वह अपने में निर्माणित करता रहता है। तो विचार आता रहता है कि आत्मा का जो पश्च महाभौतिक जो पिण्ड है अथवा देखो, जिसमें आत्मा वास करता है जिसमें ज्ञानी बनता है ब्रह्मज्ञानी बनता है वैद्यराज बनता है, दार्शनिक बनता है। मेरे प्यारे! देखो, धिराज बन जाता है, मन्त्रीगण बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो, विवेकी और देखो, महापुरूष बनता है। तो यह पुच महाभूतों का एक पिण्ड कहलाता है। उस पंच महाभौतिक पिण्ड को भी हमें जानना है। जिसमें आत्मा अपना वास करता है, बेटा! जिसका निर्माण मानो वे परमपिता परमात्मा करता रहता है और ऐसे अन्धकर कूप में इसका निर्माण करता है। माता के गर्भस्थल में इसका निर्माण करता रहता है। माता को उस काल में वसुन्धरा की संज्ञा प्रदान की गई है, क्योंकि यह अपने में बसाने वाली है, और निर्माणवेत्ता वे परमपिता परमात्मा है, जो बेटा! जब निर्माण करता है। तो मुनिवरों! देखो, इस शरीर को निर्माणित करता है। पंच महाभूतों से कण ले करके मेरे पुत्रों! देखो, बहतर करोड़, बहतर लाख, दस हजार दौ सौ दो नस नाड़ियों का निर्माण करता है। मानो देखो, इस प्रकार निर्माणवेत्ता वह चैतन्यदेव ससी प्रकार बेटा! देखो, बुद्धि का निर्माण करता है, बुद्धि कही मानो देखो, सुनीता बुद्धि है कहीं मानो वसुन्धरा है, कही ऋतम्भरा

है, कही प्रज्ञा है, कही मानो देखो, वह मेधावी के नामों से उसका वर्णन किया जाता है। कहीं बुद्धि का रूपान्तर होता रहता है तो उस बुद्धि में अपने में देखो, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा, और प्रज्ञावी जहाँ परमात्मा का चैतन्य देव का दर्शन करके मौन हो जाता है। इसी प्रकार कही बेटा! देखो, हृदय के निर्माण किए गएं हैं, इस हृदय में मानो देखो, एक मध्य में रहता है, शरीर के अन्तर्मध्य में रहने वाला देखो, एक हृदय रहता है, उसी हृदय में चेतना वास करती है, वही एक मानो हृदय लघु मस्तिष्क में रहता है, जहाँ मुनिवरों! देखो, आत्मा अपना वास करता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, यह परमात्मा का अनूठा जगत है, कहीं इसी देखो, मानवीय शरीर में नाना प्रकार की ब्रह्माण्ड की संज्ञा इसमें प्रदान की गई है सर्वत्र ब्रह्माण्ड इसमें निहित रहता है। जैसे मुनिवरों! देखो, पंच महाभूतों को जानने वाला वैज्ञानिकजन पंच महाभूतों को जानने वाला मेरे पुत्रों! देखो, यह मानो ब्रह्माण्ड का दर्शन करता है, जब यह मेधावी में प्रवेश करता है, तो लोक-लोकान्तरों की माला बनाना प्रारम्भ करता है, और जब यह मानो वसुन्धरा में प्रवेश करता है मानो देखो, जैसे मेधावी वसुन्धरं ब्रह्मा वर्णासुते तो मेरे प्यारे! देखो, बुद्धि से संसार को संसार का दृष्टा बनता है और देखो, मेधावी में इसको क्रियात्मकता में दृष्टिपात करता है। और वसुन्धरा में मौन हो जाता है। और प्रज्ञा में बेटा! देखो, परमात्मा को उसमें दृष्टिपात करता रहता है तो मेरे प्यारे! वहाँ वह जो परमात्मा का भक्तजन है वह प्रज्ञावी में जा करके जहाँ वह विराजमान होता है वहीं परमात्मा की चर्चा करता है, जहाँ वह श्वास लेता है वहाँ भी वह परमात्मा की चर्चा करता है, मानो उसी को प्रत्येक श्वास में प्रत्येक वस्तु में उसकी गतियों दृष्टिपात करता रहता है।

तो विचार आता रहता है बेटा! जहाँ भी तो मुनिवरों! विराजमान होता है वही नृत्त करता हुआ वह परमात्मा के दिग्दर्शन करता रहता है। तो विचार

आता रहता है, बेटा! देखो, प्रज्ञावी बन करके जहाँ बेटा! देखो, मेधावी बनता है, वहीं ऋतम्भरावी बनता है, वही प्रज्ञावी बन करके परमात्मा का दर्शन करने लगता है तो विचार आता है तो हमें मुनिवरों! देखो, इस प्रकार जैसे निर्माणवेत्ता प्रभु उसमें मानो प्रभु ने निर्माण किया है और कहाँ निर्माण किया है, माता के गर्भस्थल में माता का गर्भाशय इस प्रकार का है, इसके ऊपर विचार-विनिमय करना चाहिए। जैसे परमपिता परमात्मा का यह अमृतमयी जगत कहलाता है, इसी प्रकार माता का जो गर्भाशय है जीवात्मा शरीर में वास करता है। अपने शरीरों को प्राप्त करता है, तो मेरे पुत्रों! देखो, नाना देवता अपना वास करते रहते हैं। वह देवताओं की सहायता लेता है देवता उसमें वास करते हैं। मेरे प्यारे! देखो, मेरी भोली माता तो जानती नही परन्तु देखो, वेद का मन्त्र कहता है वर्णनं ब्रहा देवां ब्रह्मे वाचसुतं देवत्वाम् लोकां देवत्वाम लोके चन्द्रो समं ब्रह्मा व्रतं सूर्य सुतं देवाः वेद का आचार्य कहता है वेद का मन्त्र कहता है, क्या जब माता के गर्भ में शिशु का प्रवेश होता है, तो शिशु के प्रवेश होते ही तो देवताओं में एक बड़ी विशाल क्रांति आती है, और विशाल क्रांति आ करके वह उन्ही में से सहायता लेना प्रारम्भ करता है। चन्द्रमा में गति आती है। तो अमृत देता है, सूर्य में गति आती है, तो वह प्रकाश देता है, अग्नि में गति आती है, तो वह उष्णा बनाने लगती है, और देखो, जब आपो में गति आती है, तो बेटा! उसका पांशे बन करके वह उसी में वास करता रहता है, और वही मुनिवरों! देखो, जब विशाल गति आती है। तो देवताओं में बेटा! देखो, यन्त्रों से ले करके बेटा! परमाणु अपने में परमाणु उसी प्रतिभा में प्रतिष्ठित हो जाता है। तो विचार आता है वायु प्राण देता है और प्राण भी भागों में परिवर्तित हो जाता है। बेटा! देखो, प्राण, अपान देखो, प्राण जो है ये अरबों खरबों परमाणुओं को ले करके मुनिवरों! देखो, बाह्य जगत से आन्तरिक जगत में प्रवेश करता है, और आन्तरिक जगत से बाह्य

जगत में प्रवेश करता है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, यह प्राण की गति है और अपान की गति होती है उसमें शरीर से जो खेचरी वायु होती है वह सबका निर्माण मानो देखो, क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, वही व्यान है जो शरीर का निरीक्षण किया जाता है सामान्य प्राण में मेरे प्यारे! देखो, सामान्यतव में प्रवेश और देखो, उदान प्राण भी मुनिवरों! देखो, चित्त का मण्डल विराजमान होता है, जहाँ हमारे संस्कार विद्यमान होते हैं, बाल्यकाल में जो सहपाठियों के समीप हमने जो भी क्रियाकलाप किए हैं, परन्तु देखो, वह सब हमारे चित्त में मानो देखो, वह चित्त के मण्डल में निहित हो जाते हैं। और वही चित्त का मण्डल बेटा! बाह्य जगत में प्रवेश हो जाता है। उसी चित्त के मण्डल में जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं। उससे आवागमन की प्रतिभा बन जाती है। यदि संस्कार नही होगे तो आवागमन नही बनेगा माता गर्भाशय नही प्राप्त होगा तो इसीलिए बेटा! देखो, यह बड़ा विचित्र एक नृत्त हो रहा है। तो देवता जन मानो प्राणों के आधार पर प्राण देखो, वही व्यान वही समान और मुनिवरों! देखो, वही उदान के रूप में विद्यमान रहता है। जिसको चित्त का मण्डल कहते हैं, जो मानव उस शरीर को त्यागता है, तो उस समय बेटा! देखो, यह उदान का मण्डल जिसमें बेटा! प्रकृति का सर्वत्र मण्डल रहता है। जिसको त्याग करके चला जाता है, मन इनके साथ रहता है, बुद्धि उसके साथ रहती है, मेरे पुत्रों! देखो, वही आवागमन का मूल बन जाता है और पांच उप प्राण कहलाते हैं बेटा! नाग, देवदत, कुरु, कृकल जिनसे बेटा! संस्कारों की उदबुद्धता होती रहती है। आज मैं बेटा! प्राणों के ऊपर विशेष चर्चा देना नही चाहता हूँ, प्राणों का तो विशाल वन है। इसका बहुत पूर्व काल में बेटा! मैंने तुम्हें वर्णन किया आज मैं इस क्षेत्र में जाना नही चाहता हूँ। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरें देखो, यह पांच प्राण हैं, पांच उप प्राण हैं, पांच ज्ञानेन्द्रियं बेटा! सर्वत्र

जगत समाहित रहता है, और पांच ज्ञानेन्द्रियों में देखो, कर्मकाण्ड की प्रतिभा रहती है चर्चाएं तो बेटा! किसी काल में करूंगा आज इतना समय आज्ञा नही दे रहा है। आज तो केवल परिचय दे रहा हूँ, विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, जैसे वह प्रवेश होता है, माता के गर्भस्थल में बेटा! एक मानो देखो, देवताओं का क्या वह पंच महाभूतों का जगत बेटा! गतिवान हो जाता है। क्रांति युक्त हो जाता है, और क्रान्ति युक्त में बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड का वह दृष्टा बन जाता है, तो विचार आता रहता है जालवी ऋषि ने बेटा! इस प्रकार ऋषियों के प्रश्नों का उत्तर दिया और यह कहा कि आत्मा का जो लोक है, मानो वह पंच महाभूत हैं, उस पंच महाभूतों में जो भी क्रियाकलाप होता है। उसको वह अपने में अपनाने का सदैव प्रयास करता है। तो बेटा! देखो, यह विचार-विनिमय कर रहे थे क्या हमारे यहाँ मेरे प्यारे! देखो, मैं महात्मा दधीचि की चर्चा कर रहा था। महात्मा दधीचि ने बेटा! देखो, ब्रह्मणे ब्रह्मणा व्रत्यं उन्होंने अश्विनी कुमारों को ब्रह्म का उपदेश दिया और ब्रह्म का उपदेश करके बेटा! यह जो इन्द्र है यह मानो देखो, उपाधियों में अलंकृत माना गया है। इन्द्र हमारे यहाँ बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं, देखो, इन्द्र नाम आत्मा का है। इन्द्र नाम राजा का है। इन्द्र नाम परमात्मा का है और इन्द्र नाम मेरे प्यारे! विद्युत को भी कहा जाता है। वायु को भी इसी के नामों से सम्बोधित किया गया है। तो विचार आता रहता है, बेटा! यह उपाधियों से अलंकृत होने वाली जो विचित्र संस्कृति है। इसको अपनाने के लिए मानव को सदैव तत्पर रहना चाहिए।

तो विचार आता रहता है बेटा! अश्विनी कुमानों ने ब्रह्म की विद्या ली और वह ब्रह्म की विद्या को पान करके बेटा! दधीचि से अपं और दधीचि से ब्रह्मणां ब्रहे बेटा! दधीचि के भी बड़े पर्यायवाची शब्द हैं। जैसे नाना पर्यायवाची दधीचि नाम पर्वतों को कहा गया है, और दधीचि नाम के ऋषि हुए हैं, और

दधीचि नाम मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ दधीचि नाम राजा को भी कहा गया है। जो दधीचि ब्रह्मणो ब्रह्मा वर्णं वेद का वाक् कहता है दधि असुतं तो मानो देखो, वह जो इस प्रजा का स्वामी है उसका नाम भी दधीचि के नामों से वर्णन किया गया है आज मैं बेटा! प्रयार्यवाची शब्दों में न जाता हुआ केवल विचार-विनिमय यह बेटा! जब तक इच्छा होती है इन्द्र की राजा की इच्छा होती है कि मैं वज्र को निर्माणित करूं तो उस समय पर्वतों को बेटा! देखो, नाना प्रकार की धातु को ले करके यन्त्रों का निर्माण करता है, और वह मानो दैत्यों का संहार करने लगता है। तो उस समय देखो, दधीचि नाम पर्वतों का है, और जब मुनिवरों! देखो, उपदेश दिए और निर्भयता की आवश्यकता होती है। वहाँ दधीचि नाम ऋषि का वर्णन किया गया है, क्योंकि ऋषि उसी को कहते हैं, जो निर्भय है। जो अपने में आत्मवेत्ता हो जो मानो देखो, मृत्यु से पार हो गया हो जिसे मृत्यु का भय नही रहता हो मृत्युंजय उसका नाम दधीचि कहा गया है। और ब्रह्मज्ञानी हो और ब्रह्म में सदैव विचरण करने वाला हो मेरे प्यारे! देखो, उसका नाम दधीचि है। अमृतं देखो, वहाँ राजा वही दधीचि है जो मृत्युंजय बन गया है जो राजा अपनी क्रियाकलाप में सदैव तत्पर रहता है स्वयं अपने आत्म स्वाभिमान की रक्षा करता है, मेरे प्यारे! देखो, जो राजा अपने में श्रेष्ठ क्रियाकलाप करता हुआ देखो, प्रजा कौतुक करता हुआ देखो, अपने परिश्रम में निहित रहने वाला हो मानो देखो, द्रव्य का उसका पान करने वाला हो जिस अन्न को पृथ्वी में राजा स्वतः अपने में मानो देखो, अन्न को पान करने वाला हो उससे बुद्धि प्रखर रहती है, उससे मानो देखो, अपना ही उसे अधिकार होता है, उस राजा का नाम दधीचि और अश्वपति माना गया है तो विचार आता है कि नाना प्रकार की वार्त्ताएं व्रायः हमारे वैदिक साहित्य में प्राप्त होती रही हैं, और जब हम साहित्य को अपने में धारण करते हैं तो नाना प्रकार की एक से एक विचित्रताएं उत्पन्न होती रही

हैं। तो आज का विचार-विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें विचार-विनिमय यह प्रारम्भ हो रहा था कि वह जो परमपिता परमात्मा जो संसार का नियन्ता है, निर्माण करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, वह एक-एक कण-कण में व्याप्त है। वह ब्रह्म है ब्रह्मणां ब्रह्मणे व्रत्यं मानो देखो, जो ब्रह्म की आभा में निहित रहने वाला ब्रह्म व्रत्यं कहलाया जाता है तो विचार आता है बेटा! ब्रह्मज्ञानी बनों और ब्रह्मज्ञानी बन करके अपने कर्तव्य में निहित हो जाओ, क्योंकि धम जितना भी सब कर्तव्यवाद में निहित रहता है। कर्तव्य का नाम ही धर्म है, और कर्तव्य के विहिन हो जाने का नाम अन्धकार हैं। तो अन्धकार को त्याग करके बेटा! प्रकाश के मार्ग पर चलने का प्रयास करो आज का वाक् अब हमारा सम्पन्न होने जा रहा है आज के विचारों का अभिप्रायः यह क्या परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और यह जो मानवीयतव है, यह नाना प्रकार के अलंकारों से अलंकृत रहा है, और अलंकृत होने से बेटा! देखो, उपाधियों में निहित रहा है और ज्ञान और देखो, ज्ञानी ज्ञान का नाम है जानना मानो देखो, जान करके हम परमात्मा को जान सकेंगे यह आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा तो निर्माण करने वाला प्रभु है मानो शरीर का निर्माण करता है संसार का निर्माणवेत्ता है माता को वसुन्धरा कहते हैं क्योंकि उसी में हम वशीभूत रहते हैं तो यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा, अब वेदों का पठन-पाठन होगा ओ३म् देवाः आभ्यां रथं माणां प्राची रथं मां आ पा रेवं ओ३म् देव देवत्रा माणां आ पा रथं मां प्रजांह भवितन्न वाचश्वा।

६ मोक्ष प्राप्ति का मार्ग २७ ०३ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगाना गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं, और उसका जो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड हैं, वह अनन्तमयी में निहित रहने वाला है। जिस पर मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके और वर्तमान के काल तक नाना प्रकार का विचार-विनिमय करता रहा है, और अन्वेषण करता रहा है, और यह विचारता रहा है, कि यह परमात्मा का अनन्तमयी जगत इसका अन्तिम छोर क्या है? और यह भी विचारता रहा है कि हम इसको जानने के लिए सदैव तत्पर रहें। तो ऐसी विचित्र देव की जो महिमा है, जिसके ऊपर मानव अपने में अन्वेषण करता रहा है, चाहे वह विज्ञानवेत्ता बन करके अपनी उड़ान उड़ने वाला हो, चाहे वह योगेश्वर बन करके अपनी यौगिक प्रतिक्रियाओं में उस परमात्मा का व्यवधान करने वाला हो, तो ऐसे आत्मा और परमात्मा के ऊपर चिन्तन करता हुआ इस संसार को अपना एक विषय बना लेता है। जिसको चिन्तन में विशेष आ जाता है, और वह चिन्तन करने लगता है, कहीं वह मानो मन और प्राण को दोनों को एकाग्र करने का प्रयास करता है, और कहीं लघु मस्तिष्क में अपनी यौगिक क्रियाओं से अपने को तत्पर करने लगता है, और उसके ऊपर अन्वेषण करता है परन्तु कोई इस प्रकार के महान अन्वेषण करता है एक-एक परमाणु के ऊपर विचार-विनिमय करते रहे हैं, और परमाणु को मानो देखो, वह एक ही परमाणु को द्वितीय परमाणु में

और द्वितीय परमाणु को तृतीय परमाणु में सम्मिलान करते हैं और उस परमाणुओं का मानो एकोकीकरण करते हुए, मानो नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते रहे हैं। और वह निर्माणवेत्ता, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में जाने के लिए अपनी पगडण्डी बनाते रहे हैं। परन्तु एक प्रसंग बना रहता है, कि परमात्मा का यह जो अनन्तमयी जो जगत है, इसके ऊपर मानव नाना प्रकार का अनुसन्धान करता रहा है। और सृष्टि के प्रारम्भ से ही इसके ऊपर विचार और अपनी आभा में परिणत करता रहा है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र हमें क्या कह रहा है, वेदमन्त्र कहता है यन्त्रों ब्रह्मण वर्णासुता, क्या वे परमपिता परमात्मा हमारा वरणीय है, और जो भी मानव उसको अपना वरण बना लेता है, अथवा उसको वर लेता है, वह इस संसार सागर से पार हो जाता है। परन्तु देखो, उसको अपना वरणीय न बना करके, मानव नाना प्रकार की प्रतिभाओं में रत्त रहता है, और नाना वर्णों में अपने को वरणीय स्वीकार करता है, और जब परमपिता परमात्मा को अपना वर लेता है, उसे अपना वरणीय बना लेता है, वरण कर लेता है तो बेटा! और द्वितीय की उसे आवश्यकता नही रहती। वह उसी मे रत्त हो जाता है क्योंकि आत्मा के लोक में विद्यमान होने वाला वह प्रभु है तो हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर सदैव अपने में विचार-विनिमय करने का प्रयास करें। और नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों को अपने जीवन को ले जाएं और जो उसमें आलंकारिकता है मानो उसको क्रिया में लाने का प्रयास करें। आओ, मेरे प्यारे! देखो, उसके पश्चात भी हमारा वेद का मन्त्र, हमें अपने में मानो अपने में धारण करने के लिए अपना उद्गीत गा रहा है। वेदमन्त्र कहता है मनं ब्रहे वरूणां मनं सुतं वाचन्नं ब्रह्मा तो ज्ञान को अपना वरणीय बना। कौन सा कहा ज्ञान तो वेदमन्त्रों में निहित है मानो जिसको धारण करने के पश्चात मानो पाण्डितव को प्राप्त हो

जाता है और जिसको धारण करता हुआ मानव आत्मवेत्ता बन जाता है। अथवा विष्णु बन जाता है। हमें विष्णु बनना है, शिव बनना है, और उस संसार को मानो नाना प्रकार की आभाओं में रत्त होना है, यह हमारा जीवन उसमें मानो निहित हो जाए। मैंने बेटा! इससे पूर्व काल में तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था, वर्णन करते हुए कहा था मन्तवं ब्रह्मा क्या वे परमपिता परमात्मा हमारा देव है, और उस देव की हमें उपासना करनी है। जो देव, हमारी अन्तरात्मा में विद्यमान रहता है अन्तरात्मा में जो क्रियाशील बनाता है, वही तो परमदेव है, वही आनन्दमयी मानो देखो, अपनी वृष्टियाँ कर रहा है तो इसीलिए वेद का मन्त्र नाना प्रकार से इस संसार को अपने में अलंकृत कर रहा है, बेटा! मैंने इससे पूर्व काल में, तुम्हें प्रगट करते हुए कहा था, क्या देखो, यहाँ राष्ट्रवाद में भी, नाना प्रकार से मानो राजाओं को अपने में अलंकृत किया है, जैसे हमारे यहाँ जनक की उपाधि मानी जाती है, क्योंकि जनक एक उपाधि है, और उपाधि इसीलिए कि जो राजा अपने राष्ट्र में इतना सुसज्ञित हो, जि मानो नाना ब्रह्मवेत्ताओं की सभाओं में रत्त रहने वाला हो और ब्रह्मज्ञान में मानो रत्त रहने वाला हो। जहाँ नाना ब्राह्मण एकत्रित हो करके ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मजिज्ञासु और ब्रह्मचरिष्यामि का अध्ययन करने वाले अपने में धारयामि बनने वाले इस प्रकार की सभाओं में राजा जनक मानो अपने में मानो ब्रह्मज्ञान को और अज्ञान को अपने राष्ट्र में नष्ट करने वाला हो तो उसका नाम जनक कहा जाता है। और वह राजा जनक मानो जनक की उपाधि से अलंकृत किया जाता है। जनक उसे कहा जाता है, जो मानो उस परमपिता परमात्मा के इस ज्ञान और विज्ञान को और मानो देखो, आध्यात्मिकवाद का इतना विशाल हो जहाँ देखो, उनकी सभाओं में नाना प्रकार का जहाँ राष्ट्रीय करण होता हो, वहाँ मानो देखो, ब्रह्मवेत्ताओं को राष्ट्रीय करण है, और ब्रह्मवेत्ताओं की सभा में मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता अपने मे

ब्रह्म का बखान करते हुए हो और राजा भी उसी प्रकार का प्रश्न करने वाला हो, तो उस राजा का नाम मुनिवरों! देखो, जनक कहा जाता है। जहाँ ब्रह्मज्ञान में तपे हुए राष्ट्र है, और राष्ट्र का उसे मोह नही होना चाहिए। क्योंकि राष्ट्र का जिसे मोह होता है, वह जनक नही बन सकता, वह केवल अपने में ब्रह्मज्ञान का वह अध्ययन करने वाला हो, मेरे प्यारे! यह उपाधियां परम्परागतों से ही, अपने ज्ञान में अलंकृत रही है, इसी प्रकार देखो, राजाओं में एक अश्वपति नाम के राजा हुए हैं अश्वपति उसे कहा जाता है, जैसे मानो देखो, अश्व कहते हैं, घोड़े को अश्व कहते हैं पशु को अश्व नाम राजा का भी है जो मानो अपनी प्रजा को जो मेध के तुल्य स्वीकार करने वाला हो, उसका नाम अश्वमेध है। अश्व नाम का राजा कहा जाता है, जिस राजा के यहाँ मानो देखो, नियमावली उसके यहाँ बनी हुई होती है, क्या सुसज्जित होनी चाहिए, और राजा अपने में स्वयं कला कौशल करके उस अन्न का पान करने वाला हो और वह जब उसको पान करता है। तो उस राजा के हृदय में या राष्ट्र के प्रति राष्ट्र में किसी प्रकार का जन हानि नही हो, उसमे सदैव समय-समय पर वृष्टि होती रहे समय-समय पर नाना प्रकार के यागां का व्यवधान होता रहेगा, क्योंकि हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने नाना प्रकार की चर्चाए होती रही हैं। एक समय बेटा! देखो, महाराज अश्वपति के यहाँ कुछ वैज्ञानिक जन और कुछ मानो देखो, पाण्डितव और कुछ मानो उसमें कर्मकाण्डवादी देखो, ब्रह्मवेत्ताओं का एक समाज एकत्रित हुआ, जब एकत्रित हुआ तो महाराज अश्वपति ने अपने मन्त्रियों से विद्यमान हो करके सभा का नेतृतव किया, और यह कहा कि हे ब्रह्मवेत्ताओं तुम्हें यह प्रतीत है, कि हमने सभाएं क्यों एकत्रित की हैं, तो मुनिवरों! उस समय ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा-प्रभु! हम नही जानते परन्तु इतना जानते हैं, क्या राजाओं का तो यह कर्तव्य है कि मानो सभा एकत्रित करना और वहाँ अश्वमेध यागां का व्यवधान करना

और प्रजा को मानो ज्ञान में परिणत कराने के लिए राजा का यह कर्तव्य है मेरे प्यारे! देखो, पुनः यह प्रश्न किया क्या हे ब्रह्मवेत्ताओं! तुम्हें यह प्रतीत है क्या आज यह सभाएं मानो क्यों एकत्रित की हैं, उनमें एक ब्रह्मवेत्ता ने कहा-प्रभु! मेरे विचार में तो कि राजा जो स्वयं यह सभाएं करते रहे हैं, और इसीलिए करते रहे हैं कि राजा के राष्ट्र में मानो ब्रह्मवेत्ता मानो ब्रह्म के ऊपर क्या-क्या विचार-विनिमय करते हैं। कर्मकाण्डी जन अपने कर्मकाण्ड में अपने जीवन को ले जाते हैं, राजा के राष्ट्र में जो भी प्रतिभा होती है, वह ब्रह्मवेत्ता होते हैं, और एक कर्मकाण्डी मानो जिज्ञासु होते हैं, और वह जिज्ञासु यथार्थी बन करके राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिए मानो सदैव तत्पर रहते हैं। तो यह आप की सभा में ऐसा प्रतीत हमें होता है, परन्तु राजा अश्वपति ने यह प्रश्न किया क्या हे प्रभु! यह क्या तुम्हें यह प्रतीत है क्या हमने जो मानो ब्रह्मवेत्ताओं की सभाएं क्यों एकत्रित की हैं, तो ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा-प्रभु! एक जालवी ऋषि ने कहा हे राजन! हमारे विचार में तो यह आता है कि तुम स्वयं ब्रह्मवेत्ता बनना चाहते हो या अपने राष्ट्र को ब्रह्मवेत्ता बनाना चाहते हो, और कर्मकाण्डी देखो, उस याग का तुम्हारे यहाँ व्यवधान होना चाहिए राजा के राष्ट्र में जब विचारों का प्रदूषण नही होता है, और याग के द्वारा सुगन्धि होती है, तो मानो देखो, राजा के राष्ट्र में प्रदूषण नही रहता है। तो राजा के राष्ट्र में चंहु और सुगन्धि ही सुगन्धि प्रारम्भ होती है। तो मेरे प्यारे! देखो, राजा ने जब भी विचार देते ब्रह्मवेत्ताओं से स्वीकार की उन्होंने कहा क्या हे ब्रह्मवेत्ताओं! हम यह जानना चाहते हैं कि ब्रह्मवेत्ता किसे कहते हैं? उन्होंने कहा हे राजन! ब्रह्मवेत्ता तो उसे कहते हैं, जो मोह से उपरामता को प्राप्त होता हो और मोह नही होता परन्तु संसार के एक-एक कण-कण में देखो, उसकी प्रीति होती है मोह नही होता है क्योंकि मोह में आत्मदाह होता है, और प्रेम में मानो देखो, पुष्पांजलि उपस्थित हो जाती हैं। तो इसीलिए देखो,

ये सभा एकत्रित की है, इससे हम प्रेम से विचार-विनिमय कर सकें, और मोह को तिलांजलि दे सकें ऐसा मानो देखो, हमारा विचार है महाराजा अश्वपति बड़े प्रसन्न हुए, परन्तु देखो, महाराज अश्वपति ने कहा, सम्भवं ब्रह्मे हे ब्रह्मवेत्ताओं! अश्वमेध याग किसे कहते हैं? जो मैंने तुम्हें एकत्रित किया, उसका एक ही अभिप्रायः है क्या मैं अश्वमेध याग को जानने के लिए उपस्थित हुआ हूँ क्या अश्वमेध याग किसे कहते हैं? ब्रह्मवेत्ताओं ने एक प्रकार की मानो क्रांति आई, तो महर्षि जालवी ने यह कहा कि देखो, हे राजाओं! हे अश्वपति! अश्वमेध याग उसे कहते हैं मानो देखो, जिस राजा से सब प्रसन्न रहने वाले हों। और प्रजा में प्रसन्नता हो, और प्रजा मानो देखो, उसका गुणगान गाने वाली हो, और राजा वह प्रजापति अश्वमेध यागी बन कर सकता है जिस राजा के यहाँ मानो सर्व प्राणी एक तुल्य सभी वृत होने वाले हों मानो जिस राजा के राष्ट्र में ज्ञान और विज्ञान और कर्मकाण्ड से देखो, प्रत्येक मानव अलंकृत रहता हो, और राजा प्रजा मेध है। प्रजा मेध को और अश्व को दोनो को ऊर्ध्वा में ले जाने वाला वह अश्वपति हैं, तो हम सब इसीलिए एकत्रित हुए हैं, कि प्रत्येक मानव को अपने-अपने आत्मतव का अधिकार है। आत्मा की वाणी को स्वीकार करते हुए देखो, अश्वमेध याग में परिणत हो जाओ। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार अपना उद्गीत गाया तो राजा ने पुनः ये प्रश्न किया कि मैं अश्वमेध याग कराना चाहता हूँ परन्तु अश्वमेध याग किसे कहते हैं? मेरे पुत्रों! देखो, इतनें में महर्षि प्रवाहण जी उपस्थित हुए, और प्रवाहण जी ने यह कहा कि हे प्रभु! मेरे विचार मे तो यह आता है राजन! क्या तुम अश्वमेध याग इसीलिए करना चाहिए, क्योंकि देखो, जहां मेध नाम ज्ञान को कहा जाता है और वह अश्व नाम आत्मा को कहा गया है। क्योंकि जो आत्मा और मन और मस्तिष्क मानो देखो, जो ज्ञान में रत्त रहने वाला हो, वह अश्वमेध यागी बनते हैं, और तुम इसीलिए राजा

अश्वमेधयागी ही बनना चाहते हो। क्या राजा के राष्ट्र में, एक महानता का प्रतिपादन होना चाहिए जिससे देखो, राष्ट्र अपने में महानता को प्राप्त होता हुआ राजा के राष्ट्र में ब्रह्मरण व्रते मानो देखो, अश्वमेधयागी राजा होना चाहिए तो मेरे प्यारे! देखो, यह उद्गीत गाया उस समय राजा अश्वपति ने कहा-प्रभु! अश्वाम् भूतं ब्रह्मणा अश्व के हमारे यहाँ कितने पर्यायवाची शब्द हैं, तो महर्षि जालवी ने पुनः यह कहा क्या अश्व नाम घोड़े का है, अश्व नाम राजा का है, अश्व नाम आत्मा का है। अश्व नाम परमपिता परमात्मा का है, अश्व नाम सूर्य का है अश्व नाम चन्द्रमा का है, और अश्व नाम मानो देखो, वायु को भी कहा जाता है। और अश्व नाम परमपिता परमात्मा का है, अश्व नाम सूर्य का है, अश्व नाम चन्द्रमा का है, और अश्व नाम मानो देखो, वायु को भी कहा जाता है। जो वायु के वेग वाला जिसको अश्व घोड़े की उपाधि प्रदान की जाती है, जैसे वायु मानो देखो, प्राणों का संचालन करता है, प्राण को प्रदान करने वाला है, और उसी मानो देखो, वायु के भिन्न-भिन्न प्रकार के विभाजन होते रहते हैं। कहीं मानो देखो, प्राण कही अपान में परिणत होता है, कही समान में की उदान में और देवदत में यह परिणत हो जाता है, और यह संसार मानो देखो, इसी से गतिशील हो रहा है। गतिशील का नाम देखो, अश्व कहा जाता है। और जो मानो देखो, गति करने वाले उसका नाम मेध कहा जाता है, तो यहाँ अश्वमेध मानं ब्रह्मे नाना प्रकार के पर्यायवाचियों मे आता रहा है। जैसे सूर्य का नाम अश्वमेध याग है, मानो देखो, उसको अश्व कहा जाता है, वह प्रकाश देता है, ऊर्ज्वा के देने वाला है, उसी को मानो देखो, वह उसका नाम चन्द्रमा अपनी आभा को प्राप्त करके अमृत देता है, सूर्य प्रकाश देता है, तो चन्द्रमा अमृत देता है। अमृत मानो देखो, और अमृत मानो देखो, संसार में नेतृतव करने वाला है। यह अमृत को पान करने वाले योगी जन बेटा! देखो, ब्रह्मरन्ध्र से मूलाधार से ले करके नाना चक्रों में उसका रमण करते रहते हैं।

मूलाधार के नाभिचक्र में, और नाभि चक्र से हृदय चक्र में, और हृदय चक्र से देखो, वह कण्ठ चक्र में, वह त्रिवेणी के स्थान में चले जाते हैं और त्रिवर्धा में रमण करके देखो, कृतिकां में और कृतिकां से देखो, ब्रह्मरन्ध्र में योगी देखो, वह पंखुड़ियों में मुनिवरों! देखो, रसों का स्वादन करता है, वह अमृत को अपने में ग्रहण करता रहता है, बेटा! वह योगेश्वर बन करके, अपने मानवीय जीवन को ला देता है, योगेश्वर बन करके वह मानो देखो, नानाप्रकार के तारामण्डलों की माला बना लेता है। ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाता है। तो आज बेटा! मैं इन वाक्यों को अधिक अमृतं देखो, गम्भीर नही बनाना चाहता हूँ। विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता रहता है, कि अश्वं ब्रह्मा हमारे यहाँ ब्रह्म अश्वं यह आत्मा विष्णु है, आत्मी ही मानो देखो, अश्व कहा जाता है। जो मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र से जिसकी गतियाँ होती हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया जालवी ने कहा हे राजन! इसीलिए तुम्हारा राष्ट्र एक महानता में प्रवेश हो जाना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, राजा उसी को कहा जाता है, जो अश्व मेघं यागं ब्रह्मा अश्वपति नाम का राज जो अश्वमेध में परिणत होने वाला हो तो आओ, बेटा! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना तुम्हें देने नही आया हूँ। विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, वैदिक साहित्य में राष्ट्रवाद की बहुत-सी चर्चाएं की बहुत-सा उसका व्यवधान होता रहा है परन्तु देखो, जहाँ राष्ट्रवाद की चर्चा आती है वहाँ अनुशासन अनिवार्य होता है, जो मानव अपने में अनुशासित रहता है, अथवा अपनी प्रत्येक इन्द्रियों को अनुशासन में धारयामि बनाता है। वह अनुशासित रहने वाले जो अश्वमेध कहा जाता है। वह अश्वपति नाम का राजा है। जिस राजा के राष्ट्र में सुगन्धि ही सुगन्धि चंहु और देने वाला हो वह सुगन्धित करने वाला अपने राजा के राष्ट्र में बेटा! विचारों में क्रियाकलापों में मानो देखो, उसमें प्रदूषण नही होता, वह प्रदूषण को समाप्त कर देते हैं।

इसीलिए नाना प्रकार के क्रियाकलाप किए जाते हैं। आओ, मेरे प्यारे! देखो, इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा अश्वपति की चर्चा कर रहा था, अश्वपति उसी को कहा जाता है, जो अश्वमेध यागों में परिणत होने वाला हो, बेटा! देखो, यहाँ अश्वपति अमृत कहलाया जाता है। तो तो यहाँ अश्वमेध याग करने वालों में एक समय राजा रावण ने भी अश्वमेध याग किया था, और वह यागों का अभिप्रायः यह कि प्रजा को सुखद बनाने के लिए मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम ने अश्वमेध याग किया यहाँ मुनिवरों! देखो, अश्वमेध याग का अभिप्रायः कि प्रजा को सुखद और प्रजा मानो कर्मकाण्डों में परिणत हो जाएं, और महाराज सगर ने भी एक समय अश्वमेध याग किया था बेटा! कपिल मुनि महाराज की अध्यक्षता में याग हुआ मेरे प्यारे! देखो, मैं यागों के सम्बन्ध में मैं देखो, साहित्यों मे तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, हम अपने में ऊर्ध्वा में जाने के लिए सदैव तत्पर रहें, और राजाओं की भिन्न-भिन्न प्रकार की विवेचनाएं हमारे यहां वैदिक साहित्य में आती रही हैं। मानो देखो, जनक उसे कहा जाता है, जो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मज्ञान में, सदैव अपनी प्रतिष्ठा मंस प्रतिष्ठित होने वाला हो, अश्वमेधं ब्रह्मराजा अश्वपति उसे कहा जाता है, जिस राजा के राष्ट्र में किसी प्रकार की भी मानो देखो, अन्धकार ने हो, परन्तु कर्मकाण्ड उसका विचित्र हो और देखो, उसका अन्नाद हो, वह भव्य होना चाहिए। तो विचार-विनियम क्या मुनिवरों! देखो, यहा राजाओं की भिन्न-भिन्न जैसे विवेचना हमारे यहाँ। विष्णु राष्ट्र है और विष्णु राष्ट्र की विवेचना करने वाला बेटा! अपने में देखो, राष्ट्रीयता की प्रतिभा में रत्त होता है।

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस समय बेटा! देखो, भगवान राम महर्षि वशिष्ठ मनि महाराज के द्वारा अध्ययन करते थे, और अध्ययन करते हुए मानो देखो, उस समय वृतिका ब्रह्मचारी और भगवान राम

दोनों ब्रह्मचारियों को उन्होंने एक वेदमन्त्र उद्गीत रूप मे गाया। प्रातःकाल का समय था, प्रातःकाल के समय वशिष्ठ मुनि महाराज देखो, नैतिक शिक्षा देते थे, प्रातःकालीन तो बेटा! उन्होंने एक वेदमन्त्र का उद्गीत गाया, और वेद मन्त्र यह कहा रहा था विष्णु ब्रह्मणा वर्णं ब्रहे देवत्वां वाचन्नमं ब्रह्मे राजन्नसुति देवत्वां मेरे प्यारे! देखो, उन दोनो ब्रह्मचारियों से ऋषि ने कहा जाओ, ब्रह्मचारी इस वेदमन्त्र का अध्ययन करके सांयकाल को इसके अध्ययन की प्रतिक्रिया का उद्गीत गाओ। तो मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम और वृत्तिका ब्रह्मचारी, दोनो अपनी एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके, चिन्तन करने लगे। मेरे प्यारे! देखो, चिन्तन करते-करते कही वह वेदमन्त्र को राजा की संज्ञा में परिणत कर रहे हैं, क्या राजा का नाम विष्णु हैं, कही वह मानो ब्रह्मज्ञान में ले जाते, आभा प्रदान करते रहे हैं, कहीं आत्मा का नाम विष्णु हैं, कही लोक-लोकान्तरों में रमण करने वाले मानो विष्णु की संज्ञा प्रदान कर रहे हैं, कहीं विष्णु नाम राजा का है, जो मानो वह किसी भी लोक का अमृति राजा है। उसका नाम विष्णु हैं। तो वह नाना प्रकार की आख्यिकाओं में वर्णित हो रहे थे। वर्णित होते बेटा! देखो, सांयकाल प्रातःकाल से सांयकाल हो गया उन्हें क्षुधा भी नही प्राप्त हुई मानो देखो, क्षुधा से वंचित हो गएं, और वह अपने में अध्ययन करते रहे। परन्तु वह अपने में निमटारा नही कर सके। जब निमटारा नही कर सके तो बेटा! देखो, वह पुनः सायं काल को वशिष्ठ मुनि महाराज के कक्ष में पंहुचे मानो देखो, उस समय ऋषि ने कहा जाओ अध्ययन करो, पुनः जब अध्ययन करने लगे, रात्रि काल में तो बेटा! वह निमटारा उनसे न हो सका रात्रि का जब अन्तिम चरण हो गया, चरण हो जाने के पश्चात, दोनो ब्रह्मचारी वशिष्ठ मुनि महाराज के कक्ष में पंहुचे, उन्होंने कहा-प्रभु! हम अपने में कोई निमटारा नही कर सकें हैं कही तो हम लोकों में चले जाते हैं। कही राष्ट्र में चले जाते हैं। कही मानो देखा

मानवीयतव में प्रवेश कर जाते हैं, कही परमात्मा की प्रतिभा में रत्त हो जाते हैं। हे प्रभु! हम अपने में एक निश्चय पर नही पंहुच सके हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों को एक पंक्ति में विद्यमान हो करके, प्रातःकालीन, जब वो नैतिक शिक्षा में परिणत हो गएं, और नैतिक शिक्षा में मानो देखो, वह याग करते थे और याग के पश्चात उनकी उपदेश मंजरियां होती, उपदेश देते जिससे मानव में नैतिकवाद आ जाए, क्योंकि संसार में नैतिकवाद बहुत अनिवार्य है, और नैतिकवाद जब आता है मानो जब आचार्य आत्मा का उपदेश देता है, जब वह मानो इन्द्रियों को संयम मे लाने के लिए एक-एक इन्द्रिय को मृत्यु से पार ले जाने के लिए का प्रयास करता है, तो वही मुनिवरों! देखो, नैतिकवाद कहलाता है। यदि विश्वविद्यालय में या विद्यालय में ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी और पुत्रियों को जब तक नैतिकता की शिक्षा नही प्राप्त होती, जब तक समाज ऊंचा नही बनता, और न शिक्षा ही आती है। जब तक आत्मा परमात्मा की चर्चाएं अथवा इन्द्रियां को मृत्यु से पार होने का उपदेश नैतिक संज्ञा में नही दिया जाता, तब तक मुनिवरों! देखो, विद्यालय कदापि सजातीय नही बन पाते।

तो विचार आता है आज मैं विद्यालयों में नही ले जाना चाहता हूँ, केवल विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, जब वशिष्ठ मुनि महाराज ने प्रातःकालीन जब उपदेश देना प्रारम्भ किया उन्होंने कहा हे वृत्तिका ब्रह्मचारी! तुमने क्या जाना उन्होंने कहा-प्रभु! हमने यह जाना है क्या जब हम अध्ययन करने लगे तो हम लोकों में जाने लगे विष्णु लोक हैं, और विष्णु लोकों के साथ-साथ और नाना लोक हैं हमारे यहाँ सूर्य का नाम विष्णु लोक कहा जाता है, और उसके अन्तर्गत मानो नाना प्रकार के लोकों की माला को वह धारण करता रहता है और धारण भी अनुशासिता से रहता है। तो इसका अभिप्रायः हमने तो जान लिया कि अनुशासन का नाम अनुशासन का जो

भरी अधिपति है। उसका नाम विष्णु हैं, तो मानो देखो, वह सत कह देता है। सत का नाम ही देखो, विष्णु कहा जाता है। मेरे प्यारे! राम से कहा राम तुमने क्या जाना उन्होंने कहा-प्रभु! मैंने जो जाना है, क्या विष्णु नाम हमारे यहाँ देखो, आत्मा को कहा जाता है, और आत्मा इस शरीर में विद्यमान है, और आत्मा विष्णु है, जब वह ज्ञान और विज्ञान से उपरामता को प्राप्त होता है, और वह मानो देखो, आत्मा परमात्मा जो विष्णु है। आत्मा भी विष्णु है, परन्तु विष्णु वह महाविष्णु जो परमपिता परमात्मा उसके निकटतम अथवा उसकी प्रतिभा को जान लेता है, आत्मा आत्म देवं ब्रह्मा देखो, जो प्रकृति को नीचे दबा लेता है, उस आत्मा का नाम विष्णु हैं। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा तुम्हारा दोनो का अध्ययन तो बड़ा विचित्र है, परन्तु देखो, वृत्तिका ब्रह्मचारी से कहा हे वृत्तिका ब्रह्मचारी! तुमने क्या जाना है? उन्होंने कहा-प्रभु! मैंने ये जाना है, अमृतां विष्णु देखो, विष्णु नाम राजा का है, और राजा जब अनुशासन में होता है, और मृत्यु से पार होता है, उस राजा का नाम विष्णु है। मेरे प्यारे! उन्होंने देखो, राम से कहा-राम! तुमने विष्णु के रूप में क्या जाना है? उन्होंने कहा-प्रभु! मैं सूर्य को विष्णु कहता रहता हूँ, मैंने इस वेदमन्त्र से यह अनवृत्तं भी किया है कि विष्णु नाम सूर्य नाम प्रह्वे लोकां हे प्रभु! मैंने सूर्य को लोक की आभा संज्ञा प्रदान करते को कहा है, क्या देखो, सूर्यं ब्रह्मा सूर्य विष्णु है और जो ऊर्ज्वा दे करके प्रकाश देता है और वह प्रकाश ही प्रकाश में रत्त रहने वाला है, उसका नाम विष्णु हैं। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा यथार्थम् ब्रह्मचारी से कहा ब्रह्मचारी! तुमने क्या जाना? उन्होंने कहा-प्रभु! मैंने यह जाना है विष्णु रूप में क्या हमारे यहाँ देखो, प्राणों को विष्णु कहते हैं ये प्राण ही मानो देखो, विष्णु हैं जब योगेश्वर अपनी योग शैय्या पर विद्यमान होता है प्राण को अपान में अपान को व्यान में, और व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करता हुआ जब ये चित्त के

मण्डलों के ऊपर चित्त पर अनुशासन करता है और चित्त के मण्डल को साक्षात्कार दृष्टिपात करता है। तो उसका नाम विष्णु है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा यथार्थतं पुनः राम से कहा-राम तुमने क्या जाना है? तो राम ने कहा-प्रभु! मैं इसमें अपना कोई उत्तर नही दे सकूंगा। क्योंकि इसी में देखो, हम दोनो अधूरेपन में रहे हैं, क्या हम विष्णु को नही जान पाएं हैं मेरे प्यारे! देखो, अन्त में उन्होंने ये कहा कि विष्णु नाम मैं तो अनुशासन का नाम विष्णु स्वीकार किया राजा का नाम विष्णु है, उन्होंने कहा कौन-सा राजा है? जो विष्णु की संज्ञा प्रदान करता है। उन्होंने कहा जो कौन विष्णु मानो देखो, अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाता है, अपने राष्ट्र में मानो देखो, सर्वत्रता में दृष्टिपात करता है। मेरे प्यारे! देखो, वहाँ भगवान राम से जब ये कहा गया क्या राजा का नाम विष्णु है। उन्होंने कहा-प्रभु! मैं इसमें अपने में निमटारा नही कर सका हूँ। उन्होंने कहा तो अब तुम और क्या निमटारा कर पाओगे? तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा-प्रभु! हम आपके समीप आएं हैं, और हमे इसका निर्णय दीजिए तो मेरे प्यारे! प्रातःकालीन महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा, क्या तुम्हारा एक-एक निर्णय बड़ा ऊर्ध्वा में गमन कर रहा है, परन्तु देखो, विचार-विनिमय करने का एक विषय है, और विचार जो तुमने किया वह बड़ा पवित्र और भव्य है परन्तु देखो, विष्णु नाम हमारे यहाँ देखो, दो प्रकार से विष्णु की विवेचना होती है, एक विष्णु व्यापक रूप में है, और एक विष्णु मानो देखो, संज्ञा में परिणत रहने वाला है। जैसे विष्णु नाम राजा को कहा गया है, राजा वह विष्णु है, जो चार भुजों वाला है, और चार प्रकार के नियमों में जो निहित रहने वाला है। उसका नाम विष्णु है। मानो देखो, सबसे प्रथम उसके चार प्रकार के नियम होते हैं। देखो, भुज नही होते वह जो परमात्मा के भुज होते हैं, राजा के भुज होते हैं, केवल देखो, उनके जो नियम है। उनकी जो योग की जो विचारधारा है। उसका नाम भुज कहा गया है। मानो देखो, जैसे

राजा के यहाँ चार प्रकार के नियम बनाएं जाते हैं, एक सबसे प्रथम नियम चरित्र में निर्धारित होता है। दूसरा नियम क्या है? चरित्र की कैसे हम पालना करें? तो दूसरा नियम वह होता है और तीसरा नियम यह होता है कि हमारा चक्र होना चाहिए, और चक्र के पश्चात एक ध्वनि होनी चाहिए। यह चार प्रकार के नियम होते है। सबसे प्रथम मानो देखो, भुज नियम में है मानो देखो, धर्मणां ब्रह्वे इस पद की धर्म की संज्ञा देने वाला मानो चरित्र है और मानवता है। मेरे प्यारे! दूसरी जो संज्ञा गदा कही जाती है मानो देखो, क्षत्रिय इतने सुचरित्र और सुविचारक हों जो अपनी गदा से देखो, ज्ञान की गदा लिए होती है और अस्त्रों-शस्त्रों की भी गदा मानी जाती है। जो दोनो प्रकार से प्रजा को अनुशासन में लाने वाले हों, और तृतीय मानो चक्र होता है। इस चक्र से अपनी संस्कृति का प्रसार किया जाता है। मानो जिस भी राष्ट्र में जाओं अपनी संस्कृति का प्रसार करो, और वही संस्कृति देखो, राष्ट्र को मानव समाज को ऊँचा बनाती है। उसके पश्चात देखो, चतुर्थ जो नियम होता है, वह विद्या का नियम है, जिसमें वेद की पवित्र विद्या हो और वह शंख ध्वनि के नाम से वर्णित की जाती हो मानो देखो, ध्वनि होनी चाहिए। चाहे वह ध्वनि मानो देखो, योगेश्वर की हो चाहे वह ध्वनि मानो देखो, वेदमन्त्रों का उद्गीत गाने वाले, ब्राह्मणजनों की होनी चाहिए। राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण हों, ब्रह्मण भी कैसे हो, जो मानो देखो, शंख ध्वनि करने वाले हों, मानो देखो, ध्वनि कहते हैं, जटा पाठ, घन पाठ, माला पाठ, विसर्ग, उदात्त अनुदात्त में वेदों का गान गाने वाले ब्राह्मणतव होते हैं, त्वंगं ब्रहे वेदाः मेरे प्यारे! देखो, वह जो गान गाने वाला है। वही तो राष्ट्र को सजातीय बनाता है, वह ध्वनि कही जाती है, जिस ध्वनि को धारण करने के पश्चात, वेदों का गान गाया जाता है, तो बेटा! विष्णु के चार भुज होते हैं, सबसे प्रथम पदम है, द्वितीय में गदा है, और तृतीय में चक्र, और चतुर्थ में मानो देखो, शंख माना गया है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, यह संज्ञा हमारे यहाँ राष्ट्रीय संज्ञा मानी जाती है, यही तो मानव को सजातीय बनाती है।

तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, यह हमारे यहाँ नाना प्रकार के अधिकारों से अलंकृत होने वाले यह वाक् है जिसके ऊपर मानव को विचार-विनिमय करना है तो आज का हमारा यह वेदमन्त्र यह क्या कह रहा है क्या हम परमपिता परमात्मा की महती और देखो, उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर हम विचार-विनिमय करते चले जाएं मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ देखो, विष्णु राष्ट्र उसे कहा जाता है जिस विष्णु के राष्ट्र में केवल प्रकाश ही प्रकाश हो ज्ञान का प्रकाश कही मानो चरित्र का प्रकाश हो कही मेरे प्यारे! देखो, संस्कृति का प्रकाश हो कही मुनिवरों! देखो, ध्वनि का प्रकाश हो रहा है, वह प्रकाश ही प्रकाश में रत्त रहने वाला राष्ट्र अपने को ऊँचा बनाता रहता है तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, विचार देता हुआ विचार-विनिमय देने का हमारा अभिप्रायः यह कि हमारा वैदिक साहित्य बेटा! इतना महान है इनमें नाना प्रकार की धाराओं को मानव को अलंकृत किया गया है। कही बेटा! देखो, विष्णु से कही प्रजापति से कही जनक से और कही बेटा! देखो, अश्वपति अमृतं ब्रहे नाना प्रकार के मानो देखो, अलंकारों से अलंकृत किया जाता है। तो इन अलंकारों को हमें विचारना चाहिए, जिसके ऊपर बेटा! देखो, हमारा राष्ट्र और समाज अपने से ऊँचा बनता है। जहाँ बेटा! देखो, अपने में ऊँचा बनाया जाता है, वही मुनिवरों! देखो, वैदिक साहित्य में वेदमन्त्र परमात्मा का यशोगान गा रहा है। उसकी महिमा का गान गाता हुआ वह संसार में और वही मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिकवाद में परिणत होने वाला है। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार यह क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते चले जाएं जिससे बेटा! देखो, हमारा जीवन पवित्रता को प्राप्त होता रहे। क्योंकि मानव के जीवन की एक ही संज्ञा मानी जाती है। क्या वह संसार में

अपने कर्तव्य और चरित्र को ऊँचा बनाता हुआ राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाने की सदैव तत्पर लगा रहे, और विद्या इतनी पवित्र इसकी चर्चाएं बेटा! मैं तुम्हे कल प्रगट करूंगा। क्या हमारे आचार्यजन विद्यालयों में देखो, किस प्रकार की शिक्षा देते रहे हैं कल बेटा! देखो, इसके ऊपर विचार कल दे सकूंगा क्योंकि आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनो को बेटा! दोनो को मुनिवरों! एक संग में लाने के लिए किस प्रकार प्रयत्न किया जाता है। यह विचार कल हम प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः हमारा क्या मेरे प्यारे! देखो, राजा अपने यहाँ नाना प्रकार की ब्रह्मवेत्ताओं की सभाएं और ब्रह्मवेत्ता देखो, अपने में विचार-विनिमय करना और आचार्य और ब्रह्मचारी दोनो परस्पर चर्चाएं करना नाना प्रकार के प्रश्नों की झड़ी लगाना उसका उत्तर देना यह सर्वत्र मानो देखो, उनका कर्तव्य रहा है। जिससे मुनिवरों! देखो, मानव के अन्तर्हृदय की नाना प्रकार की जो ग्रन्थियाँ हैं। उनका स्पष्टीकरण हो जाएगा जब मुनिवरों! देखो, प्रश्नकर्त्ता है उत्तर देता है, तो हृदय में जो ग्रन्थियाँ है उनका स्पष्टीकरण हो जाएगा तो विचार आता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस सार सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा, तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां मनो प्राची रथं मानं आ पा। ओ३म् गतौ रेवा गन्धर्वा रथं आ पाहाम् ओ३म् दधिमां प्राची गा ताहाम्।

७ मोक्ष प्राप्ति का मार्ग १० ०७ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी है, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा विद्यमान है, क्योंकि संसार दो रूपों प्रायः दृष्टिपात आता रहता है एक चेतना में द्वितीय जड़वत् में माना गया है। परन्तु वे परमपिता परमात्मा दोनों ही रूपों में विद्यमान हैं, और दोनों का संचालन करने वाले हैं। इसीलिए वे परमपिता परमात्मा नियन्ता है, अथवा निर्माणवेत्ता है, तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहे, जो अनन्तमयी माने गएं हैं।

तो आओ मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा दे रहा है, क्योंकि मानव संसार में प्रेरणा का स्रोत है और प्रेरणा को प्राप्त करता रहता है। प्रेरित होता रहता है, और अपने क्रियाकलापों में सदैव वह निहित रहता है। तो आओ मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र नाना प्रकार की याचनाएं अथवा उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की प्रायः चर्चाएं और वह नियन्ता निर्माणवेत्ता मानो उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जा रहा था, हमारे यहाँ नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द प्रायः आते रहते हैं। आज के हमारे वेदपाठ में जहाँ ज्ञान और विज्ञान की

वार्त्ताएं और विष्णु शब्द का प्रतिपादन हो रहा था क्योंकि वैदिक साहित्य में जब हम प्रवेश करते हैं, तो विष्णु शब्द के नाना पर्यायवाची शब्द हमारे समीप आने प्रारम्भ होते हैं। क्योंकि वेद के वांगमय में नाना पर्यायवाची शब्दों की प्रायः विवेचना होती रही है। तो विष्णु वे परमपिता परमात्मा जो सर्वज्ञ अथवा हमारा पालन करने वाला है अथवा परन्तु जिसने भी पालना के मूल में जो भी आता है। उसी का नाम विष्णु वाची शब्द माना गया है वेद का मन्त्र कहता है विष्णां प्रमाणां ब्रह्मा पालानां वर्णासुतं देवाः वेद का मन्त्र यह कहता है कि जहाँ भी पालना का मूल आता है, अथवा पालना का शब्द आता है। वहीं विष्णु का प्रतिपादन है, क्योंकि हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु है। और पालन करने वाली माता है। उसका नाम भी विष्णु है, और जिस चेतना के रहने से मानव चेतनित बना रहता है। वह आत्मा भी विष्णु रूप से वर्णित की जाती है। परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र यह कहता है, विष्णु ब्रह्मा व्रत्यं देवाः हे विष्णु! तू पालन करने वाला है। सूर्य का नाम भी विष्णु है, और हम उस विष्णु की याचना करते चले जाएं जो विष्णु हमारा स्वामीतव है। और ध्रुवा में गमन करने वाला है। मानो ध्रुवां भूतं ब्रह्मा क्योंकि बिना ध्रुवा के मानव को पालन नही कर सकता इसीलिए हमारे वैदिक साहित्य में माता का नाम विष्णु है। क्योंकि वह जब पालना करने लगती है। तो नमः हो जाती है, मेरे प्यारे! जैसे वृक्ष पर मानो देखो, जैसे उस पर फल आ जाते हैं। तो मुनिवरों! देखो, वह ध्रुवा में प्रवेश कर जाता है, और वह ध्रुवा में ही पालना का मूलक माना गया है। इसीलिए विष्णु ब्रह्मणां ध्रुवं कृते देवाः क्या वह ध्रुवा में गमन करने वाला है। आओ मेरे प्यारे! देखो, जहाँ हम परमपिता परमात्मा विष्णु की याचना कर रहे हैं, और याचनं ब्रहे विष्णु नाम आत्मा का है, क्योंकि आत्मा के रहने से ही यह मानव शरीर चेतनित बना रहता है, आत्मा के न रहने से ही मानो देखो, यह मानव मानव न रह करके चेतना से शून्य

हो जाता है। इसी प्रकार पालना के मूल मे सूर्य भी आता है, सूर्य क्योंकि वह ऊर्ज्वा देता है, प्रकाश देता है, और ऊर्ज्वा और प्रकाश के देने वाला ही मानो देखो, पालना करने वाला है। तो मेरे प्यारे! जहाँ भी पालना का मूलक आता है, वही विष्णु शब्द आता है, और विष्णु शब्द राजा का भी है। क्योंकि राजा अप्रं ब्रह्वा देवत्वां विष्णु वह विष्णु ही हमारा कल्याणकारी है, और वह जो राजा है, वह प्रजा का पालन करने के से ही मानो उसे विष्णु कहा जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की विवेचना होती रही है। आज मैं तुम्हें पर्यायवाची शब्दों में न जाता हुआ केवल यह कि आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है, विष्णुं ब्रह्मां ध्रुवां भूतं ब्रह्मा क्या वह विष्णु ध्रुवा में गमन करने वाला है। क्योंकि जो भी पालना होती है, वह ध्रुवा में नमः हो करके वह पालना कर सकता है। मेरे प्यारे! माता हो पितर हो मेरे प्यारे! आचार्य हो, राजा हो, या परमपिता परमात्मा परन्तु वह ध्रुवा में अकृत कहलाने वाला है। तो मेरे प्यारे! देखो, सूर्य की जब ध्रुवा में मानो कान्तियां हो जाती हैं। तब यह प्रकाश देता है और उसके पश्चात वह ऊर्ज्वा देने वाला है। तो उस परमपिता परमात्मा का नामोकरण विष्णु कहा जाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं आज इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही, आओ बेटा! आज मैं तुम्हें एक ऐसे ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ, मैंने तुम्हें कई कालों में बहुत-सी चर्चाएं प्रगट की हैं। आज भी मुझे स्मरण आता रहता है कि उनका जीवन कितना महान और देखो, मार्मिकता में सदैव रमण करता रहा है। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का जीवन जो सदैव मानो देखो, विद्यालय में भूतं ब्रह्मा वह गमन करके ही मानो ब्रह्म का उपदेश देते रहे, और ब्रह्म की वार्त्ताएं प्रगट कराते रहे हैं। बेटा! मुझे स्मरण है कि वह प्रातःकालीन अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को नैतिक शिक्षा

देते, तो वह जब ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हो जाते, तो वह प्रातःकालीन मानो एक पंक्ति में मं ब्रह्वा भूतं वह न्यौदा में वेदमन्त्रों को ले करके अपना उद्गीत गाते रहे हैं। ओर उद्गीतां तपस्या ब्रह्मणां वर्णासुतं अप्रतं देवाः आज के हमारे वेदमन्त्रों में भी इस प्रकार की विवेचनाएं प्रायः आ रही थी कि मानव को तपस्वी बनना चाहिए। इसी प्रकार महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों! न्यौदा में वेदमन्त्र कहता है, तपं ब्रह्मा तपं देवत्वां लोक प्रह्वा क्या तुम तपस्वी बनो ओर प्रत्येक मानव को तपस्या करनी चाहिए। क्योंकि बिना तप के यह संसार कदापि भी ऊँचा नही बनता क्योंकि जब ग्रीष्म ऋतु आती है, तो यह पृथ्वी तपती रहती है, और तपने के पश्चात नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है। इसी प्रकार माता बाल्यकाल में ब्रह्मचर्य अपने में तपायमान होता है, और ब्रह्म में अपने को जीवन बनाता है। तो वही ब्रह्मवर्चसुतम कहलाता है, और ब्रह्मवर्चोसि बन करके वही मुनिवरों! देखो, आचार्य बनता है। इसी प्रकार माता जब तपा करती है, तो माता तपने के पश्चात ममतामयी को प्राप्त हो जाती है। इसी प्रकार बिना तप के यह संसार कदापि ऊँचा नही बनता, तो मानव को तपस्वी होना चाहिए। परन्तु वैदिक आचार्यों ने कहा तपश्चं ब्रह्मा लोकां वाचसुतं मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ तप कहा जाता है। जो मानव अपनी इन्द्रियों को तपायमान करता है, अथवा इन्द्रियो के विषयों को जान करके अथवा उनका साकल्य बना करके, जो आत्मिक हूत करना जानता है। वही तपस्वी कहलाता है। जैसे ब्रह्मचारी गार्हपथ्य नाम की अग्नि में जब वह तपायमान होता है, तो तपता रहता है, तो वही मेरे प्यारे! अपने में ब्रह्मवर्चोसि अपने में ब्रह्म को अपने में ही अपने को ब्रह्म में चलायमान कर देता है। अथवा उसकी महिमा ओर उसकी वृत्तियों को जानने के लिए वह ब्रह्मचारी तत्पर हो जाता है तो वह गार्हपथ्य नाम की अग्नि में तपता रहता है ओर वह अपने को तपाता रहता है प्रत्येक इन्द्रिय

तपाता रहता है तो बेटा! देखो, तप की महिमा का उद्गीत गाते हुए याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों! आओ तुम तपस्वी बनो और तप कि बिना यह संसार मानो देखो, शून्यवत् को प्राप्त होता है राजा जब अपनी बाल्य स्थली पर तपता है तो तपायमान होता तो प्रजा उसकी तपस्वी होती है और यदि देखो, आचार्य विद्यालय में कुल में तपायमान होता है तो ब्रह्मचारी तपायमान हो जाता है मेरे प्यारे! देखो, गृह में माता-पिता तपस्वी होते हैं तो बाल्य बालिका तपों में परिणत हो जाते हैं विचार-विनिमय यह कि बेटा! मानव को तपना चाहिए वेदमन्त्र कहता है, तपं तपप्रवाहणां ब्रहे देवां भूतं ब्रह्मा सूर्या यह सूर्य प्रातःकाल से सांय काल तपता रहता है बेटा! नाना पृथ्वियों को धारण करता रहता है और उनको ओजस्वी बनाता है, तो इसी प्रकार प्रत्येक मानव को तपस्वी बनना है। तप के पश्चात मानव को जीवन पवित्रता को प्राप्त होता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, इतने में ब्रह्मा यह उपदेश दे रहे थे, परन्तु यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! तपं ब्रह्मे वर्णासुतं उन्होंने कहा कि भगवन! तप किसे कहा जाता है? तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा तप कहते हैं, जो इन्द्रियों के साकल्य को जानता है, अथवा इन्द्रियों की पांच ज्ञानेन्द्रियां है। इनका जो विषय है। इनकी जो जानने के पश्चात इनका साकल्य बना करके जो हूत करना जानता है, वह तपस्वी कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, यह वार्त्ता ही चल रही थी परन्तु उनका काल विचार का समाप्त हो गया। परन्तु न्यौदा में वेदमन्त्रों का अध्ययन करते हुए याज्ञवल्क्य ने कहा ब्रह्मचारियों से कहा हे ब्रह्मचारियों! मैं तप करने जा रहा हूँ। मेरे प्यारे! ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! यह तो हमारा बड़ा सौभाग्य है, यदि मानो देखो, आप जैसे महापुरूष तपस्वी बन करके तपों में निष्ठ हो जाएंगें। तो हमारा विद्यालय पवित्र बनेगा। क्योंकि जिस विद्यालय में तपा हुआ आचार्य होता है, वह विद्यालय पवित्र होता है भगवन! आप तप करने जाईएं।

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि विद्यं तपं ब्रह्मा ब्रह्मचारियों से बोले कि तुम कैसे अध्ययन करोगे? उन्होंने कहा कि हम परस्पर देखो, विचार-विनिमय करते रहेंगें। परन्तु आप तप करने जाईएं। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने विद्यालय को त्याग दिया, और तप करने के लिए न्यौदा में क्योंकि वेदमन्त्र आ रहे थे और वह उद्याम कर रहे थे, उद्गीत गा रहे थे, तपं ब्रह्मा तपं देवत्वां आत्मां भूतं ब्रह्मा तपं देवां भूतं प्रह्वा लोकां वेद का ये मन्त्र कहता है, कि पंच महाभूतों के लोक में रहने वाला, आत्मा है, और आत्मा को तपायमान करना ही मेरा कर्तव्य है। तो बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने विद्यालय को त्याग दिया। और त्याग देने के पश्चात वह अपने गृह में उन्होंने प्रवेश किया, उनकी तो पत्नियां थी, एक का नाम कात्यायनी था, और द्वितीय का नाम मैत्रयी था, तो बेटा! देखो, मैत्रयी के समीप पंहुचे और मैत्रयी ने उनका स्वागत किया, उनके चरणों की वन्दना की और चरणों की वन्दना करते हुए, उन्होंने कहा आईए। स्वामिन्! विराजिए वह विराजमान हो गएं। उन्होंने कहा प्रभु! आप बिना सूचना के गृह में आने का कारण क्या है? उन्होंने कहा कि हे देवी! मैं आज न्यौदा में वेदमन्त्रों का अध्ययन कर रहा था, परन्तु न्यौदा में मन्त्र आ रहा था, तपं ब्रह्मे व्रतं देवत्वां तपाः हे देवी! मैं तप करने के लिए मैंने अपने जीवन का अपना वृत बनाया है, और ब्रह्मचारियों से आज्ञा पा करके मैं मानो देखो, अपने में तपस्वी बनना चाहता हूँ। मेरे मस्तिष्क में नाना वेदमन्त्र आए और वेदमन्त्र आते ही मानो नाना प्रकार के प्रेरित करने लगे मेरी दो पत्नियां हैं, एक तुम हो कात्यायनी और एक मानो मैत्रयी हैं मैं दोनों को सन्तुष्ट करना मेरा कर्तव्य है और मैं तप करने जा रहा हूँ। मेरे पुत्रों! जब उन्होंने यह कहा तो कात्यायनी ने कहा प्रभु! आप तप करने के लिए जा रहे है, यह तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। मेरे पुत्रों! देखो, कात्यायनी ने जब ये कहा कि बडा सौभाग्य है कहा कि जब यह वाक् कहा

तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, ऋषि ने कहा धन्य है, देवी तो मेरे पुत्रों! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है क्या कात्यायनी ने जब ये कहा उन्होंने कहा तो देवी! मैं तप करने जा रहा हूँ उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। मेरे प्यारे! देखो, वह उनको त्याग करके मैत्रयी के द्वार पर पंहुची मैत्रयी ने उनका इसी प्रकार स्वागत किया और वह विराजमान हो गई। उन्होंने कहा देवां भूतं ब्रह्मा अज्ञानं ब्रीहि देवत्वां मेरे पुत्रों! देखो, जब मैत्रयी ने ऐसा कहा तो ऋषि बोले कि देवी मैं तप करने जा रहा हूँ। तुम्हारी क्या इच्छा है? उन्होंने कहा प्रभु! यह हमारा बड़ा सौभाग्य है, परन्तु आप तप करने के लिए तो जा रहे हैं, परन्तु मेरा क्या बनेगा भगवन! मैं मानो देखो, अमृतं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा-देवी! आज तुम उस दिवस को अपने सू दूरी कर रही हो, जब तुम्हारा मेरा शास्त्रार्थ हुआ था, आत्मा के ऊपर और देखो, तुमने यह कहा था कि मैं तपस्या के लिए आपको वरण चाहती हूँ। आज मानो देखो, अज्ञानता तुममें आ गई है, तुम यह उच्चारण कर रही हो, तपां ब्रहे देवत्वां अस्सुतं ममं ब्रह्वा तुम्हें ममता कैसे आई। मेरे प्यारे! देखो, मैत्रयी ने कहा प्रभु! ममतां भूतं उन्होंने कहा तो देवी तुम्हें यह प्रतीत है। क्या पत्नी जो होती है, पति तक सीमित होती है। यदि वह अपने लिए पत्नी हो जाएं, तो उसका कल्याण हो जाएं, क्योंकि पत्नी उसे कहते हैं जो अपनी इन्द्रियों पर अधिपथ्य करने वाली हो और इन्द्रियों पर संयमी हो वही तो पत्नी कहलाती है जो मनं ब्रहे देवत्वं अपने से जिसका अधिपथ्य हो जाएं। तो हे देवी! देखो, वही तो मानो देखो, पत्नी तक सीमित रहने वाली, यदि अपने लिए वह सीमितता को त्याग करके, और अपने लिए स्वयं पत्नी बन जाएं, तो उसका कल्याण हो जाएं। हे देवी! पर वह पत्नी पति तक होती है वह परन्तु वह यदि पत्नं ब्रह्मा देवत्वां ब्रह्मे यदि वह देखो, पति पत्नी तक सीमित न रह करके, और वह स्वयं मानो देखो, अपने लिए अधिपथ्य हो जाएं पति वह होता है जो अपनी

इन्द्रियो पर संयम करने वाला हो मानो देखो, पतितव होता है तो हे दिव्यां भूतं मानो अमृतं देखो, जो भी कुछ कर रहा है, वह अपनी आत्मा की तृप्ति के लिए कर रहा है। हे देवी! पुत्र जो होता है, वह माता तक सीमित है, यदि वह स्वयं अपने लिए पुत्र बन जाएं तो नमः प्रभु का पुत्र हूँ, तो वही मुझे सहायता देने वाला है और वही मुझे अग्नि को देने वाला वही जल पदार्थ देता है तरलतव देता है गुरूतव देता है, और तेजोमयी मानो देखो, वही बनाने वाला है, जब इस प्रकार का ज्ञान उसे हो जाता है। तो मानो देखो, वह अपने लिए पिता के लिए माता के लिए पुत्र तक सीमित रह करके वह स्वयं को अपने प्रभु का पुत्र स्वीकार कर ले, तो उसका कल्याण हो जाएं। हे दिव्यां भूतं ब्रहे मानो ये तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, मानो देखो, पुत्री पिता तक सीमित रहती है, यदि अपने लिए वह पुत्री बन जाएं क्या, मैं प्रभु की पुत्री हूँ। परन्तु देखो, ये संसार तो एक पंच महाभौतिक पिण्ड कहलाता है। अमृतां कहलाता है परन्तु देखो, उसका कल्याण हो जाएं हे देवी! इसी प्रकार वह पुत्री पिता तक सीमित है। पुत्र माता तक सीमित रहता है परन्तु इसी प्रकार अमृतां भूतं ब्रहे वह अमृत बन जाता है। तो विचार-विनिमय जो भी मानव नाना प्रकार के वित्त में लगा हुआ है, वह केवल अपनी आत्मा को तृप्त करना चाहता है। आत्मा उसका जब ज्ञान सीमित रहता है इसी प्रकार देखो, जो भी मानव, संसार में कर्म कर रहा है, वह अपने लिए कर रहा है, मानो देखो, अपने तक सीमित रहता है। इसी प्रकार जो भी मानव देखो, पुत्रैष्णा में, वितैष्णा में और भी लोकैष्णा में लगा हुआ है, वह लोकेष्णा में लगा हुआ प्राणी बेटा! देखो, अपने में सीमित होना चाहता है। परन्तु वह अपनी आत्मा को तृप्त करना चाहता है। अपने में तृप्त होता नही, परन्तु देखो, करना चाहता है। परन्तु हे देवी! वह मानव अपने में कर्म करना चाहता है, अपने लिए कर रहा है। एक मानव तपस्या में परिणत होना चाहता है, और तप करना चाहता

है। परन्तु आत्मां भूतं विष्णु वह देखो, अपनी आत्मा को विष्णु बनाता है अपनी आत्मा को अक्षय क्षीर सागर में ले जाता है। परन्तु देखो, वह नाना प्रकार के जो उसके संगृतियां वृतं मानो देखो, वह सब पृथक-पृथक हो जाती है। तो मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार जब ऋषि ने अपना वर्णन किया, तो मैत्रयी बेटा! मौन हो गई। तो मैत्रयी ने कहा धन्य है देवी तुम मानो मेरे अज्ञान को नष्ट किया है, तुमने मुझे प्रकाश में पंहुचाया है। आपको धन्य है। तो देखो, यह मधु विद्या उन्होंने बहुत-सी वार्त्ताएं प्रगट कराई। तो देखो, हे देवी! एक मानव भयंकर वन में तप करने जा रह है, वह अपनी आत्मा को तृप्त करना चाहता है मानो देखो, अंग संग रहने वाला जो समूह है। उसको शान्त करना चाहता है। अन्धकार में नही रहना चाहता, प्रकाश में जाना चाहता है। मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया तो मैत्रयी उनके चरणों की वन्दना की, तो उन्होंने कहा धन्य है प्रभु तो मुनिवरों! देखो, जब निमटारा हो गया, और मैत्रयी प्रसन्न हो गई, मैत्रयी ने कहा जाईएं भगवन! तप करने जाईएं, आप तो जब तक करने के लिए जाने लगे तो ऋषि ने कहा हे देवी! मैं तुम्हारे द्रव्य का बंटवारा किए देता हूँ, उन्होंने कहा प्रभु! आप तप करने जाईएं हम स्वयं अपना बंटवारा कर सकेंगें, कात्यायनी ने भी यही कहा मैत्रयी ने भी यही कहा बेटा! देखो, मुझे ऐसा कुछ ऐसा स्मरण है क्या याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने गृह को त्याग करके बेटा! देखो, भयंकर वनों में पंहुचे और वन में जा करके वह चिन्तन करने लगे एक वेदमन्त्र उनके स्मरण आया और वेदमन्त्र कह रहा था, मनं ब्रह्वा वृतं मनं ब्रह्मे कृतं देवाः असुतं तपाः तपं ब्रहे कृतं वेद का मन्त्र यह कह रहा था कि मन को पवित्र बनाना है, और मन के बिना पवित्र देखो, यह इन्द्रियां पवित्र नही होंगी, अब मैं मन को कैसे पवित्र बनाऊं तो ऋषि मानो शान्त मुद्रा में विद्यमान हो गएं और शान्त मुद्रा में मुद्रित हो करके विचारने लगे एक

वेदमन्त्र न्यौदा में से मन्त्र स्मरण आया क्या अन्नादाम् भूतप्रह्वा लोकां वृत्ति देवाः वेदमन्त्र यह कह रहा था आख्यिका वर्णन कर रही है, क्या जब तक अन्न पवित्र नही होगा, तो मन पवित्र नही बनेगा। इसीलिए वह अन्न पवित्र होना चाहिए। जब ऋषि ने यह विचारा कि अन्न पवित्र होना चाहिए तब चिन्तन करने लगा कि अन्न कैसा हो तो वेदमन्त्र कहता है, कि देवं धन्नं ब्रहे अन्तं ब्रह्वा पृथ्वी यह पृथ्वी के वसुन्धरा के गर्भ से जो अन्न उत्पन्न होता है परन्तु जिस पर किसी प्राणी का अधिकार न हो उस अन्न को एकत्रित करके उसको पान करना वही मानव का तप कहा जाता है। बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! देखो, उस अन्न को एकत्रित करना प्रारम्भ किया जिससे जो भूमि में से अन्न कृषक ले जाता है, जो अन्न रह जाता है उसको शिलस्थ अन्न कहते हैं। उसको ऋषि ने एकत्रित किया और उसको मुनिवरों! देखो, वह जल में जल में वृत करके उसको बेटा! तपा करके उसका पान करते थे, मुझे स्मरण है बेटा! देखो, बारह वर्ष तक ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस प्रकार अपना तप किया बाहर वर्ष के पश्चात बेटा! उनकी बुद्धि मानो पवित्र हो गई। मन पवित्र हो गया, और गतं ब्रह्मा गतं देवत्वां मेरे प्यारे! देखो, चरेसुतं क्रियां ब्रह्मा वह चरेवेति का शब्द उन्हें स्मरण आ गया वेदमन्त्र कहता है चरं ब्रहे कृते है मानव तू सदैव गति करता रह अपने जीवन में गतिवान होता रहे। तो अपने मन क्रिया और देखो, वचनं ब्रहे इन सबको अपने में क्रियाशील बना जिससे तेरा मन मस्तिष्क एकाग्र हो करके, और तेरे में विचारों की प्रतिभा का जन्म हो जाएं। तो मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ ऋषि ने ऐसा ही किया तो उन्होंने जब बारह वर्ष का जब तप किया तप करने के पश्चात उन्होंने एक पोथी का निर्माण किया। मेरे प्यारे! उस पोथी का नाम शतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। उस पोथी का जब ऋषि ने निर्माण किया तो निर्माणवेत्ता ने मानो पोथी को वंचं देखो, उन्होंने सबसे प्रथम

उस पोथी में एक शब्द लिया और शब्दं ब्रह्मा उन्होंने एक आख्यिका का वर्णन किया उन्होंने कहा सहस्त्राणि ब्रह्मा देवासुर संग्रामा भूतं उन्होंने बेटा! उस पोथी में सबसे प्रथम देवासुर संग्राम की वार्त्ता को लिया। क्या देवासुर संग्राम होता रहता है। अब उन्होंने उसी को बाह्य जगत में न ले करके आध्यात्मिक जगत में ले गएं, और आध्यात्मिक जगत में ले जा करके उन्होंने कहा देवासुर संग्राम होता रहता है। देवताओं का और असुरों का दोनों का वर्षों तक संग्राम होता रहा है। परन्तु जब संग्राम होता रहा तो उन्होंने एक आख्यिका प्रगट की उन्होंने कहा एक समय मानो देखो, देवतां ब्रह्मे जब वह संग्राम होता रहा तो देवता विजय हो गएं ओर देवताओं ने दैत्यों को जब विजय कर लिया तो देवताओं की सभा में मानो जब एक आनन्दवत् होने लगा, तो उनकी सभा में एक वृषभ का जन्म हुआ, और वृषभ का जन्म जिसको वृख भी कहते हैं। जब जन्म हुआ, तो उसके मुखारबिन्दु से एक ध्वनि उत्पन्न होने लगी। जिस ध्वनि को जो भी श्रवण करता वही देवता बन जाता था, जब यह संसार देवताओं का बनने लगा तो बेटा! देखो, दैत्यराजों की एक सभा हुई जिसमें शुम्भ निशुम्भ रक्त बीज ओर केतव इत्यादि एकत्रित हो करके बेटा! उन्होने बेटा! अपने सभापति विरोचन को एकत्रित किया, और विरोचन से कहा कि महाराज! हम दैत्यों का क्या बनेगा जब यहाँ देवासुर संग्राम हो रहा है। और देवताओं ने हमको विजय कर लिया ओर उनकी सभा में एक कैसे ऐसे देव का जन्म हुआ है, जो भी उस ध्वनि को श्रवण करता है, वही देवता बन जाता है। तो हे प्रभु! हम दैत्यों का क्या बनेगा जब संसार देवताओं का बन जाएगा, तो महाराजा विरोचन ने कहा जाओ देखो, उस वृख को छलों जो देवतां ध्रुवा में से जन्म लिया है। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने ऐसा कहा तो अमृतं देखो, शुम्भ निशुम्भ, रक्तबीज यह तीनों दैत्य अपने-अपने आज्ञा पा करके सभापति की देखो, मध्य रात्रि में उन्होंने बेटा! विषर्भ को छल लिया

मोक्ष प्राप्ति का मार्ग

जब विषर्भ को छला तो वह वह ध्वनं ब्रह्मा वर्णनं ब्रहे बेटा! वह ध्वनि से शून्य हो गया, और वह ध्वनि रेणुका में समाहित हो गई देवताओं की जो धरोहर थी। वही तो रेणुका में चली गई परन्तु वृषभ छला गया छलने के पश्चात देखो, जब महाराजा विरोचन के द्वारा लाया गया तो विरोचन ने जब मन्थन किया तो वह ध्वनि नही थी, वह ध्वनि तो रेणुका में समाहित हो गई थी। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा हे दैत्यों! वह ध्वनि तो देखो, रेणुका में समाहित हो गई, उन्होंने कहा प्रभु! उसे भी छलेंगें और जब रेणुका को अगले दिवस मध्यरात्रि में उसको छलने का उन्होंने विचार बनाया, तो बेटा! देखो, उन्होंने धरोहर को देवताओं की धरोहर को रेणुका ने मेरे प्यारे! यज्ञ के दस पात्रों में समाहित कर दिया। वह तो यज्ञ के दस पात्र में चली गई परन्तु देखो, जब उसको मन्थन किया गया तो उसमें वह ध्वनि नही थी। महाराजा विरोचन ने कहा हे दैत्यराजों! अब ध्वनि तुम ध्वनि को नही ला सकोगे क्योंकि वह ध्वनि तो रेणुका से जब पात्रों में चली गई है, और तुम यज्ञ के दस पात्रों में उसको नही ला सकोगे तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा तो प्रभु! अमृतं अम्रहे वह शान्त हो गएं तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा है याज्ञवल्क्य मनि महाराज ने शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी में उन्होंने वर्णन जहाँ उन्होंने कर्मकाण्ड को नियुक्त किया है। जहाँ चरेवेति शब्द की विवेचना की है, वहाँ उन्होंने बेटा! इस प्रकार का वर्णन किया है क्या देखो, वृषभ क्या है हमारे यहाँ वृख नाम परमपिता परमात्मा को भी माना गया है। उसे विषर्भ कहते हैं, और देखो, वृख नाम सूर्य का भी है। जो प्रकाश देने वाला है। और यहाँ बेटा! देखो, प्रकरण के आधार पर यह विषर्भ नाम मन को माना गया है। क्योंकि गऊ के बछड़े का नाम भी देखो, वृषभ माना गया है परन्तु यहाँ मन को माना गया है, जब देवता देव प्रवृत्ति होती है तो यह मन पवित्र बन जाता है क्योंकि मन आत्मा का प्रतिनिधि है, आत्मा के

यह प्रकाश ले करके संसार के क्रियाकलापों में परिणत होता है, यही मानो देखो, मन के कारण ही जागरूकता आती है। परन्तु देखो, यह आत्मा के प्रकाश में अपने नाना अवयवों में प्रवेश करता रहता है। तो यह मन जब पवित्र हो जाता है, तो यह धर्म ध्वनि को अपनाता है, और जो भी धर्म ध्वनि को श्रवण करने लगता है। वही देवता बन जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब यह देवताओं का संसार बनने लगा, तो वह देखो, शुम्भ, निशुम्भ रक्त बीज देखो, यह दैत्य जनों ने उनको छला तो शुम्भ निशुम्भ बेटा! देखो, रक्त बीज, नाम तृष्णा का है। शुम्भ, निशुम्भ नाम मानो देखो, उसको छला और छल करके जब उसको लाया गया अमृतां भू वृतां देवत्वां वेद की आख्यिका कहती है, जब विषर्भ को छला गया छलने के पश्चात पुत्रों! उन्होंने रेणुका नाम बुद्धि का है। जब यह बुद्धि में प्रवेश हो जाता है। बुद्धि में मानो अमृता को प्राप्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब बुद्धि को उन्होंने छलने का क्योंकि हमारे वैदिक साहित्य में बुद्धि के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। जैसे रेणुका नाम बुद्धि को कहा है, और बुद्धि अमृतं देखो, बेटा! बुद्धि मेधा को कहते हैं, ऋतम्भरा, प्रज्ञा नाना प्रकार के बुद्धि नामोकरणों में आता रहता है। परन्तु यहाँ रेणुका नाम बुद्धि का है, जब रेणुका ने उस देवताओं की धर्म ध्वनि को यज्ञ के दस पात्रों में समाहित कर दिया। तो मेरे प्यारे! देखो, यज्ञ के दस पात्र क्या हैं? मुनिवरों! देखो, हमारा जो मानव का शरीर है, जब परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का प्रारम्भ किया तो यह मानो शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया, और इसमें मानो देखो, यह दस पात्र कहलाते हैं। पांच ज्ञानेन्द्रिया हैं, पांच कर्मेन्द्रियां कहलाती है यह मानो देखो, यज्ञ के दस पात्र है। मेरे प्यारे! देखो, इनको देवता छल नही सकेंगें, इनको नही ले जा सकेंगें, इन्हें किसी न किसी में धर्म समाहित रहता है। हमारे यहाँ धर्म की विवेचना करने वाला मानव कहता है, धर्मणां ब्रह्मे धर्म असुतं ब्रहे व्रताः हम

आचार्यों के समीप जब अध्ययन करते रहे, तो आचार्यों से यह कहा करते कि प्रभु धर्म क्या है? तो वह कहते धारणां ब्रह्मे देवत्वां जो धारण किया जाता है। उन्होंने कहा क्या धारण किया जाता है, नाना प्रकार के प्रसंग को ले करके अन्त में यहाँ आते क्या यह जो इन्द्रियों का जो विषय है, उसको जानने का नाम ही धर्म है। मानो उसको सुयोग्य में लाना क्योंकि देखो, वाणी को जो धर्म है, वह सत्य उच्चारण करना है। नेत्रों का जो धर्म है, वह सुदृष्टिपात करना है, और सु सगन्ध देना है, सु स्पर्श करना है, और सु रसों का पान करना है। मानो देखो, जो अपनी-अपनी इन्द्रियां अपनी क्रियाकलापों में विशुद्ध रूप से वह रहती है। उसी का नाम धर्म है। तो धर्म कहाँ रहता है। धर्म मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, धर्माणां ब्रह्मा रोवसुतं देवाः मुनिवरों! देखो, जो इन्द्रियों के धर्मों को जानता है, वह संसार में विचलित नही होता। वह धर्म के सम्बन्ध में मेरे प्यारे! देखो, रूढ़िवाद को अपने से दूरी कर देता है। वह रूढ़ि न रह करके धर्म और धारण को जानने के लिए सदैव तत्पर हो जाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना नही प्रगट करूंगा, केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी में इस प्रकार उन्होंने अपने तप के पश्चात बाहर वर्ष तप के पश्चात उन्होंने अपना मन्तव्य दिया ओर उन्होंने कर्मकाण्ड के लिए उन्होंने बड़ा बल दिया और यह कहा कि मानव को कर्मकाण्डी बनना चाहिए। कर्म में निष्ठा होनी चाहिए, और कर्म में सात्विकता होनी चाहिए। कर्तव्यवाद ही मानव का जीवन है, उसी के आधार पर मानव को अपने जीवन को व्यतीत करना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय करने वाला अपने में कर रहा है, धर्मणां ब्रह्मे धर्मसुतं हे मानव! तू धार्मिक बन और धर्म को अपना क्योंकि धर्म मानव की प्रत्येक इन्द्रियों में समाहित रहता है, और वह

जो धर्म होता है धार्मिक प्राणी कदापि रूढ़ि में परिणात नही होता। देखो, धर्म एक होता रूढ़ि अनेक होती है, तो रूढ़ियों में परिणात न होता हुआ, वह केवल धर्म और मानवीयता को अपना करके विज्ञान के वांगमय में प्रत्येक प्रवेश कर जाता है। वेद के अमूल्य प्रकाश में रत्त हो जाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा यह वाक् क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। आज के हमारे वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! बाहर वर्ष की अमृतं तप करने के पश्चात उन्होंने एक पोथी का निर्माण किया, तो जिसका नाम शतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। तो बेटा! उस पोथी को ले करके याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने भयंकर वन को त्याग दिया, और वह तपस्या की स्थली को त्याग करके अपने विद्यालय में प्रवेश किया। तो विद्यालय में ब्रह्मचारियों ने उसी प्रकार उनके चरणों की वन्दना की और वन्दना करके उनसे यह कहा गया है, कि प्रभु आपने तप के पश्चात क्या लाए, जो उन्होंने शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी को उन्होंने प्रकाशित किया उन्होंने कहा यह मैंने लेखनियां बद्ध की है। तो बेटा! ब्रह्मचारी जो उन्हें स्पर्श करने लगा, वह ब्रह्मचारी बेटा! देखो, अपने कर्म में प्रवृत हो गया। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, आज का हमारा वाक् कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा को अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान को जानने का प्रयास करें, और ऋषि-मुनियों ने जो तप किया है, उस तप के ऊपर देखो, हमारा नित्य प्रति हमारा भी देखो, तपों में जीवन रहना चाहिए, और मुनिवरों! देखो, विष्णु ब्रह्मण ब्रहे ओर विष्णु हमारे वैदिक साहित्य में विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। जो पालना के मूल में वही विष्णु है, तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट

करूंगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा को जानने वाले बनें और परमात्मा की महिमा को जानते हुए सागर से पार होने का प्रयास करें। और प्रयत्नशील होते रहें। यह है बेटा! आज का वाक् आज वाक् हमारा क्या कह रहा है क्या जितना भी यह जड़ जगत और चैतन्य जगत है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में वे परमपिता परमात्मा विद्यमान है। हम सदैव उसकी आराधना करते रहें, और देवतव को अपने को जान करके अपने को अपने में समाहित करते रहें यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों के मन्त्रों का पठन-पाठन होगा ओ३म् देवाः आभ्यां रथाः मायु रथं आ पाहाम्। ओ३म् यशश्चाहम् गाता मनो वायुरथं आ पाहाम्। ननौता, सहारनपुर। १० - ७ ८ १९९२

८ मोक्ष प्राप्ति का मार्ग ११ ०७ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं, और वह अनन्तवान हैं, और वह विज्ञानमयी ओर श्रोत्रोमयी कहलाते हैं क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं, परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके, क्योंकि उसका ज्ञान और विज्ञान सीमा से रहित है। और वह सीमा में आने वाला नही हैं। क्योंकि मानव इस संसार में विद्यमान रहता है, और वह नाना प्रकार की कल्पना करता रहता है। और विचार-विनिमय में अपने को ले जाता है। परन्तु विचार-विनिमय करता हुआ, बहुत दूरी चला जाता है। अनन्तमयी सृष्टि में रमण करने लगता है। अन्त में बेटा! वह मौन हो जाता है। परन्तु परमपिता परमात्मा का यह ज्ञान और विज्ञान में वह ज्यों का त्यां बना रहता है तो विचारवेत्ताओं ने कहा कि परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान ओर विज्ञान है वह प्रायः अनन्तमयी माना गया है। और परमपिता परमात्मा अनन्तवान है, तो हम उस परमपिता परमात्मा जो सर्वज्ञ है, और एक-एक प्रकृति के कण-कण में विद्यमान हैं। हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव चिन्तन करते रहें, और मनन करते रहें, तो हम उस परमपिता परमात्मा का जो वेद का जो प्रकाश है, वह मानो अपने अन्तःकरण को प्रकाशित करता रहे। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश,

मानव के नेत्रों का प्रकाशक बन करके आता है, इसी प्रकार वेद का जो ज्ञान प्रकाश है, वह मानव के अन्तःकरण को प्रकाशमान बनाता है। तो अन्तःकरण जब मानव का प्रकाश में रत्त हो जाता है, तो मानव बेटा! अनन्तवान प्रभु की लोरियों का पान करने लगता है। उसका ज्ञान और विज्ञान को वह अपने में धारण करने लगता है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा और वेदज्ञ उस प्रकाश को अपनाते रहे, जिस प्रकाश में जाने के पश्चात, मानो हमारा जीवन प्रकाश में रत्त हो जाएं, और हम अन्धकार में न जाएं, अज्ञान में न जाएं। ऐसी अपने प्रभु से हम सदैव याचना करते रहें।

तो आओ मुनिवरों! हमारा वेद का मन्त्र हमें क्या कह रहा है वेद का मन्त्र ये कहता है कि परमपिता परमात्मा महान अव्रतं देवत्वां ब्रह्मा वह देवता है, और यह जो जगत है यह एक प्रकार का देवयान है। जहाँ देवताजन वास करते है। उसका नाम यान कहलाता है। जैसा बेटा! इसके पूर्व काल में महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की चर्चा कर रहे थे, तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने इस संसार को यज्ञशाला के रूप में वर्णित किया है, और मानव के शरीर में जो पात्र है। क्योंकि हमारे ऋषि-मुनियों ने अनुसन्धान वेत्ताओं ने और बाह्य और आन्तरिक जगत को ले करके उन्होंने बहुत-सी अपनी लेखनियां बद्ध की हैं। और उन्होंने ऋषि-मुनियों ने यह कहा व्रते क्या परमपिता परमात्मा का जो परमात्मा ने जो शरीर को रचा है। इसमें दस पात्र हैं, पांच ज्ञानेन्द्रियां पांच कमेन्द्रियां हैं, और पांच कर्मेन्द्रियों के विषयों को ही जान करके मानो अपने प्रभु को प्राप्त कर सकता है। और इन्द्रियों के ऊपर जब संयमी जय हो जाता है। तो जय और विजय की भांति अपने में अपनेपन में ही समाहित हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपना मन्तव्य ऋषि-मुनियों की एक बड़ी विचित्र देन रही है। क्या उन्होने आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों को एक दूसरे में कटिबद्ध किया है

जहाँ से मुनिवरों! देखो, भौतिक विज्ञान अणु और परमाणुवाद जहाँ समापन होता है। वहाँ से आगे चल करके आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ होता है। आध्यात्मिकवाद अपने में इतना प्रिय है। और इतना महान है, कि उसका प्रारम्भ होता है। जहाँ अणुवाद परमाणुवाद विज्ञानवाद जहाँ वह सम्पन्न हो जाता है। तो मेरे प्यारे! परमात्मा का रचाया हुआ, ऋषि-मुनियों ने विचारा क्या आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान का दोनों का समन्वय होना चाहिए। आज कोई भी विज्ञान हो बेटा! जब आध्यात्मिकवाद का उसमें समन्वय करने लगता है। तो बेटा! वही विज्ञान हमारे सुखद बन जाता है और यदि उस विज्ञान में आध्यात्मिकवाद का मिश्रण नही हैं। तो वह विज्ञान अपंग बन जाता है, और समाज में क्रान्ति अथवा देखो, समाज में अज्ञानता का साम्राज्य हो जाता है। तो इसीलिए विज्ञान अपने में महान बना रहे और विज्ञान का जहाँ दुरूपयोग प्रारम्भ हुआ, वह विज्ञान मानो समाज को अन्धकार में परिणत कर देता है। राष्ट्रवाद को अन्धकार में ले जाता है। तो इस सम्बन्ध में बेटा! मैं विशेष चर्चा नही केवल यह कि परमात्मा और ऋषि-मुनियों के विचार-विनिमय करने की बड़ी शैली रही है। क्या उन्होंने आध्यात्मिक विज्ञान को ज्ञान और विज्ञान को आध्यात्मिकवाद में मिश्रण किया है।

तो आओ बेटा! मैं इस विज्ञान की चर्चाएं नही करूंगा, केवल विचार-विनिमय यह कि आज का वाक् क्या कह रहा है, वेदमन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है। इसके पूर्वकाल में हम उच्चारण कर रहे थे कि जब शुम्भ, निशुम्भ और रक्तबीज की चर्चा हो रही थी। तो यह मुनिवरों! देवासुर संग्राम उस मानव के शरीर में होता रहता है। कहीं देव प्रवृत्ति है, कहीं असुर प्रवृत्ति है, तो इसीलिए बेटा! देखो, उन ऋषि-मुनियों ने यह विचारा कि देवासुर संग्राम को शान्त किया जाएं, और देखो, यह जो रक्तबीज है, इसका नाम तृष्णा है। एक तृष्णा पूर्ण नही होगी, तो द्वितीय उत्पन्न हो जाती है। जहाँ

एक कामना का जन्म हुआ, परन्तु उसका नाम रक्तबीज कहलाता है। क्योंकि वह एक तरंग से दूसरी का प्रारम्भ उसको पूर्ण नही कर सकता। वह तृष्णा है, और काम, क्रोध, लोभ, मोह बेटा! मान और अपमान में परिवर्तित हो जाते हैं। मानो देखो, काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि कैसे मुनिवरों! देखो, विरोचनं अभिमानं ब्रह्वा कृति को कहते हैं। जो इनका सभापति है। तो मेरे प्यारे! देखो, एक दूसरे के पश्चात उत्पन्न होते हैं। विशेष कामना जब परिवर्तित होती है। उसका नाम तृष्णा है, और देखो, इच्छाओं की पूर्ति न होना उसका नाम निराशा में जीवन परिवर्तित हो जाता है। और यदि इच्छाओं की पूर्तियां होती रहती है। तो वही उसका जीवन अभिमान में परिवर्तित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार मानव को सदैव सम रहना चाहिए। अपने में मानो देखो, ऊर्ध्वा गति में ध्रुवा गति वह अपने में मानो देखो, समाहित होता है। क्रोध के पश्चात मोह इसी प्रकार एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। तो मानव को जीवन इस संसार इस प्रकृतिवाद में मानो इसका विभाजन हो जाता है। तो आज मैं बेटा! इसके विभाजन की चर्चा न करता हुआ केवल यह कि हम उन दैत्यों के प्रति अपने में उज्ज्वलता का देखो, ज्ञान के प्रकाश में चले जाएं, जहाँ यह अन्धकार का जन्म न हो जहाँ द्वेष भावना उत्पन्न न हो, जिससे मानव देखो, अपनी मानवीयता में सदैव परिवर्तित होता रहे।

तो आओ बेटा! देखो, मैं इस सम्बन्ध में तुम्हें विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नही चाहता हूँ, आज का हमारा यह वाक् यह कह रहा था यम ब्रह्मा यमं ब्रह्वा देवाः वह बेटा! यम की चर्चा करता रहता हूँ। प्रत्येक मानव यम को नही चाहता है, प्रत्येक मानव यह चाहता है कि मेरा जीवन प्रकाश में बना रहे, कोई मानव बेटा! मृत्यु को नही चाहता, कि मेरी मृत्यु आ जाएं। वह सदैव अपने जीवन को चाहता रहता है। मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है, ऋषि-मुनियों की जब नाना सभाएं एकत्रित होती रही हैं। और उन नाना

सभाओं में नाना ऋषि-मुनियों का विचार-विनिमय होता रहा है। बेटा! देखो, विज्ञान के वांगमय में भी वैदिक साहित्य में भी इस प्रकार की चर्चाएं आती रही हैं। परन्तु देखो, उसमें ब्रहा जब वह उपनयन के पश्चात भी ब्रह्मचारियों से वार्त्ताएं प्रगट करते हैं। तो वहाँ भी इसी प्रकार की चर्चाएं होती रही हैं मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में बेटा! देखो, महात्मा जमदग्नि के यहाँ बेटा! एक सभा हुई थी, जिसमें बेटा! देखो, महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलभ, महर्षि दालभ्य, और महर्षि रेवक और महर्षि रेवक और भी नाना ऋषि-मुनि और भी बेटा! देखो, जिसमें विभाण्डक और सोमकेतु ऋषि महाराज देवर्षि नारद चाक्राणी गार्गी और भी नाना बेटा! देखो, इसमें महर्षि पिप्लाद जी विद्यमान थे, तो महात्मा जमदग्नि और पारेतवर ऋषि महाराज ने एक वेदमन्त्र का उद्गीत गाया तो वेदमन्त्र यह था जो आज भी हमारे वेदमन्त्र के पठन-पाठन में आ रहा था मृत्युंजम् ब्रह्मा मृत्यु वर्णनं ब्रहे जहाँ वेद का मन्त्र कह रहा था हे ब्रहे वेद का मन्त्र कहता है कि यह मृत्यु क्या है? संसार में जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, मानो दुखित हो रहा है, प्रत्येक मेरी प्यारी माता अपने में दुखित हो रही है, कि मृत्यु क्या है, माता कहती है कि मेरा पुत्र मृत्यु को चला गया पितर कहता है, कि मेरा पुत्र चला गया यह संसार मानो देखो, मृत्यु की अग्नि में प्रदीप्त हो रहा है। तो विचार वेत्ताओं ने जब इसमें विचार करने लगे तो ऋषि-मुनि उस वेदमन्त्र को श्रवण करके अपने में मौन हो गएं। जब मौन होने लगे तो मुनिवरों! देखो, अमृतं ब्रह्मा चाक्राणी उपस्थित हुई। और चाक्राणी ने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं ऋषि के प्रश्नों का उत्तर दे संकू। उन्होंने कहा अवश्य दीजिए। तो उन्होंने कहा कि शरीर और आत्मा का दोनों का पृथक हो जाना ही यह मृत्यु का सूचक है, अथवा इनकी कोई मृत्यु स्वीकार करते हैं। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि पिप्लाद ने और देखो, महर्षि श्वेतकेतु ने कहा नही यह मृत्यु हमें

सिद्ध नही होता, जो तुम उच्चारण कर रहे हो, परन्तु देवर्षि नारद ने भी ऐसा ही कहा गाड़ीवान रेवक भी वहाँ भ्रमण करते हुए आ गएं। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज जो एक सौ पांच वर्ष तक अपने मानो कुटी में रहते और गाड़ी के नीचे उनका कुटीर था। मानो देखो, स्थान था देखो, जिसमें वह वास करते थे तो मेरे प्यारे! देखो, पिप्लाद जी ने कहा कि नही इसका नाम मृत्यु नही हैं मेरे प्यारे! देखो, अमृतं ब्रह्मा लोकं वृतं जब ऐसा उन्होंने कहा यह नही है। तो और क्या है, तो मेरे प्यारे! देखो, पिप्लाद जी उपस्थित हुए और पिप्लाद जी ने वेदमन्त्र का उद्गीत गाया आभां ब्रह्मे अमृतं देवां मृत्यु ब्रहा व्रती अभागा वेदमन्त्र का उद्गीत गा करके वह मृत्यु तो अभाव में रहता है। मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नही कहलाता है। इसका तो अभाव है। मेरे प्यारे! जब उन्होंने मृत्यु का अभाव कहा, तो नाना प्रश्न उत्पन्न होने लगे, उन्होंने कहा ऋषिवर! मृत्यु शब्द का जन्म कैसे होता है? उन्होंने कहा कि जन्म जब सृष्टि का प्रारम्भ होता है। तो मानो देखो, चेतना का जड़ का मिलान होता है। तो तीसरी वस्तु की उत्पति हो जाती है, और उसको सृष्टि कहते हैं। सृष्टि अपने में कोई सृष्टि नहीं मिलान के पश्चात तीसरा शब्द का जन्म हो जाता है। जैसे मानव देखो, माता-पिता हैं, माता और पिता का दोनों का संकल्प ही तीसरा शब्द ही मानो पुत्र कहलाता है। इसी प्रकार यह मानो देखो, रचना की कृतियां कहलाती हैं। परन्तु देखो, मृत्यु शब्द इसीलिए ज्ञान और अज्ञान और जहाँ अज्ञान में देखो, अप्रतं अज्ञान, ज्ञान में जहाँ परिवर्तिन हो जाता है। तो वहीं और जहाँ ज्ञान में अज्ञान परिवर्तित हो जाता है। तो वहीं मृत्यु शब्द बन जाता है, मेरे प्यारे! जहाँ अग्नं ब्रह्मा व्रतं देवाः जहाँ मुनिवरों! देखो, यह अज्ञान ज्ञान में परिवर्तित हो जाता है। वहाँ जीवन कहते हैं, इसी प्रकार ऋषि ने कहा कि हमारे यहाँ यह माना है कि हम अपने को ज्ञान में ले जाएं तो प्रकाश है, और अज्ञान में ले जाएं, तो अज्ञानां मृत्युं ब्रहे वह रात्रि कहलाती है। मृत्यु कहलाती है। तो

मेरे प्यारे! देखो, यह विचार-विनिमय हो रहा था संध्या काल हो गया, ऋषि-मुनियों ने अपना वरण लिया, कि अब संध्या काल हो गया यह विचार-विनिमय पुनः काल में करेंगें। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि-मुनि अपने कक्ष में जा पंहुचे रात्रि का समय हो गया। महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज का आश्रम निकटतम में था, तो पिप्लाद जी ने यह विचारा कि मैं अपने गृह में प्रवेश करूं तो बेटा! वहाँ से वह कुछ दूरी पर उनका आश्रम था, अपने आश्रम में पंहुचे आश्रम में उनकी पत्नी शकुंतका विद्यमान थी। और शकुंतका ने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया, और उन्होंने कहा कहो देवी! वह अपने में व्याकुल हो गई, उन्होंने कहा-देवी! व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होनें कहा मेरा सात वर्षीय पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है। मेरे प्यारे! जब उन्होंने यह कहा कि मृत्यु को प्राप्त हो गया तो पिप्लाद जी ने एक वेदमन्त्र का उच्चारण करते हुए कहा भावां भूतं ब्रह्मा वाचं नमं ब्रहे देवत्वां अभावं ब्रीहि देवत्वां हे देवी! मैं मृत्यु को अभाव में परिवर्तित करने वाला हूँ और वह मानो सदैव वाक् उच्चारण करता रहता हूँ। परन्तु मैं उसको मृत्यु ही शब्द कहता हूँ, परन्तु देखो, उसका अभाव है। संसार में मानो देखो, तुम्हार पुत्र चला गया, परन्तु इसकी यह चला नही गया इसका परिवर्तन हो गया है। मेरे प्यारे! देखो, देवी ने जब यह श्रवण किया तो उन्होंने कहा यह आप यथार्थ उच्चारण कर रहे हैं। परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ, यह शरीर है क्या? उन्होंने कहा सम्भूतं ब्रह्मा लोकां उन्होंने कहा कि यह हमारा जो शरीर है। यह परमाणुओं का संघात कहलाता है। परमाणुओं से मानो देखो, इसका उदय होता है, और परमाणु से इसकी बलवती होती है। देखो, यह परमाणुओं का संघात है, मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा बाल्यकाल से माता के गर्भ से ले करके और युवा काल आ जाता है। तो यह परमाणुओं का संघात है बलवती होता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, पिप्लाद जी की पत्नी ने कहा प्रभु! यह भी यथार्थ है परन्तु मैं जानना चाहती हूँ

कि जब मानं ब्रहे यह परमाणु अमृतं ब्रहा जब मेरा इस शरीर इस रूप में नही था, तो यह परमाणुवाद कहां रहता था। उन्होंने कहा कहा कि यही परमाणुवाद माता के गर्भस्थल में विद्यमान था कुछ मानो देखो, वीरतव में कुछ रजत्व में विद्यमान हो करके और हमारे इस मानव शरीर का निर्माण हो रहा था और निर्माणवेत्ता निर्माण करता है, और कैसे अन्धकार कुप में निर्माण कर रहा है। तो बेटा! देखो, निर्माणवेत्ता कैसा प्रिय निर्माण बहतर करोड़, बहतर लाख, दस हजार, दौ सौ दौ, नाड़ियों का निर्माण किया गया है। मानो इसी के मध्य में एक हृदय का निर्माण किया हृदय की मानो देखो, एक लघु मस्तिष्क में होता है। एक शरीर के मध्य के ऊर्ध्वा भाग में होता है। परन्तु देखो, उसका निर्माणवेत्ता और मेरे प्रभु ने जब निर्माण किया। तो मनस्तव और मानो देखो, बुद्धि यह चार प्रकार की बुद्धि का निर्माण किया बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा, प्रज्ञावी कहलाता है। तो मुनिवरों! देखो, उस प्रभु ने इस शरीर का निर्माण किया लघु मस्तिष्क में सर्वत्र ब्रह्माण्ड क्या लोक-लोकान्तर परमात्मा का जगत विद्यमान रहता है। परन्तु देखो, उसी प्रकार लघु मस्तिष्क में बेटा! एक-एक मण्डल की गणना कर सकता है। जब योगी अपनी साधना में प्रवेश करता है, तो और प्राणों को अपना में और व्यान को समान और उदान में प्रवेश करता हुआ और वह जब इन प्राणों का एकाग्र करके लघु मस्तिष्क में ले जाता है। और लघु मस्तिष्क में मानो देखो, चित्त का मण्डल है। उसमें जो जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार है। उनको वह निहारने लगता है, और निहारता हुआ वह मेरे प्यारे! देखो, वह अपनेपन में ही मानो दृष्टिपात करता रहता है। और नाना जो ब्रह्माण्ड है, यह लोक-लोकान्तरों वाला जो मानो जो एक-एक मण्डल में नाना पृथ्वियां और नाना मण्डल विद्यमान रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, उनको लाना प्रारम्भ करता है। उनको साक्षात्कार दृष्टिपात करता है, यह लघु मस्तिष्क में सर्वत्र प्रतिक्रियाएं होती रहती हैं। इसका रचनाकार

कौन है? वह देखो, मनस्तव की यह जो निर्माण कर रहा है, वह प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है। कितना महान है। जब हम उस विज्ञानवेत्ता की महानता पर विचार-विनिमय करते हैं, तो वह इतना अनन्तमयी दृष्टिपात आता है, कि मानव बेटा! अन्त में मौन हो जाता है।

तो आओ बेटा! देखो, ऋषि ने कहा हे ब्रह्मणां ब्रहे ब्रहा देखो, देवी से कहा हे देवी! माता के गर्भस्थल में निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है, परन्तु कैसा आश्चर्य है, कि निर्माण हो रहा है मेरी भोली माता को यह वह ज्ञान नही होता कौन निर्माणवेत्ता है। वह प्रभु कितना निकटतम रहता है। कितना निकट है। माता के तो बेटा! देखो, माता उससे वंचित रहती है, मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो देवी ने शकुन्तका ने कहा प्रभु! चलों यह भी मैंने स्वीकार कर लिया। परन्तु जब माता का गर्भाशय नही था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? उन्होंने कहा-देवी! जब माता का गर्भाशय नही था, तो यही परमाणुवाद कुछ वीरतव में था, कुछ वीरांगना तव में मेरी पुत्री वीरांगना बन जाती है। परमाणु की रक्षा करने वाली और मानव जब उनकी रक्षा करता है। तो बेटा! पुरूष बन जाता है। और वह ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है, और वह ब्रह्मवर्चोसि बन करके देखो, ब्रह्म में अपने को देवताओं की सभा में सुशोभनीय स्वीकार करता है। तो विचार आता रहता है वह बेटा! कहाँ रहता है ब्रह्मणे व्रतं वही देखो, वही परमाणुवाद है जिनकी हमें रक्षा करनी है, वह वीरांगना जब रक्षा करती है, तो वेदमन्त्रों का उद्गीत गाती है और सिंह और सर्पराज उनके चरणों की वन्दना करने लगते हैं मेरे प्यारे! देखो, उसकी रक्षां ब्रह्मे ब्रह्म वर्चस बन जाता है। तो विचार आता है बेटा! देखो, वीरांगना जब मेरी पुत्री रक्षा करती है, तो वीरांगना बन जाती है। तपों में परिणत हो जाती है। मानो देखो, वीरतव की रक्षा करना देवताओं की सभा में वह सुशोभनीय हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा-देवी! इन

परमाणुओं की रक्षा करने वाला देवता है। मुनिवरों! देखो, जब भी प्रश्न किया जाता है कि वीरतव यह मानो देखो, वर्चस क्या है, तो उन्होंने कहा कि ब्रह्म वर्चस उसे कहते हैं जहाँ परमाणुओं की रक्षा करता हुआ मानवतव बेटा! देखो, ब्रह्म ब्रहे ब्रह्म का ध्यान करता है, और देखो, अपने प्रत्येक श्वास का मनका बना करके जो ब्रह्मसूत्र में पिरोता है। बेटा! वही तो साधक है। वही तो साधना में ब्रह्मचारी है, वह ब्रह्मवर्चस कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया तो उन्होंने कहा प्रभु! चलों मैंने यह स्वीकार कर लिया। परन्तु जब वीरतव और वीरांगनातव नही होता, तो यह परमाणुवाद कहाँ से उत्पन्न होता है? यह परमाणुवाद कहाँ रहता है? उन्होंने कहा-देवी! जब यह नही होता, तो मेरे परमदेव ने संसार का सृजन किया तो परमपिता परमात्मा ने सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। वह सात प्रकार का अन्न बड़ा विचित्र अन्न है, एक पौधा उस पर दो प्रकार का अन्न है, एक को मानव पान करता है। तो एक को पशु पान करता है। पशु पान करता है, तो वह दुग्ध दे रहा है, पय दे रहा है, मानो पान करता है वह मानव देखो, वीरतव और वह ओजस्वी बन रहा है। तेज को उत्पन्न कर रहा है, तो वही अन्न है बेटा! उस प्रभु का एक पौधा है, और एक पौधे पर दो प्रकार का अन्न है। बेटा! उसमें दो प्रकार के अन्नं है। एक पशु का अन्न है। तो एक मानव का अन्न है। एक मनुष्यां भूतं ब्रह्मे वह मानो देखो, एक मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपा रही है, और एक को मुनिवरों! गो पशु इत्यादि पान करके पय दे रहे हैं। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना ओजस है। मानो रचनाकार है एक ही पौधे पर दो प्रकार का अन्न है, दूसरा जो अन्न है, वह प्रहूत कहलाता है। और प्रहूत उसे कहा जाता है, जो बेटा! पुरोहित जन बेटा! यज्ञमान गृह में याग करता है, और वह नाना प्रकार का साकल्य के द्वारा याग करता हुआ कहता है। स्वाहा प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय

समानाय स्वाहा कह करके हूत करता है। बेटा! देखो, वह हूत देवताओं को जाता है। अग्नि देवताओं का मुख कहा जाता है। और अग्नि के मुखारबिन्दु में जो साकल्य दे दिया जाता है वह देवताजन उससे तृप्त होते हैं। और तृप्त हो करके उसी से देखो, वायुमण्डल पवित्र होता है। मेघमण्डल की उत्पति होती है, और उससे धीमी-धीमी वृष्टि प्रारम्भ होती है। मेरे प्यारे! देखो, यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है। हमारे यहाँ साहित्यकारों ने और शतपथ ब्राह्मण की वृत्तियों में बेटा! एक विचार आया कि उन्होंने कहा कि यह उस समय याग को काला हिरण ले गया और जब काला हिरण ले गया तो सम्भूति ब्रह्मणा लोकां वाचसुतं और जब वह काला हिरण ले गया, तो उसी में याग को वत्रासुर को प्रदान कर दिया, और वत्रासुर ने देखो, वह अमृतं देखो, मुनिवरों! वह शचि को अमृतं देखो, जब वत्रासुर छा गया तो देवताओं ने प्रार्थना की कि हमारा याग चला गया। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने प्रार्थना हिरण को जानं ब्रहे जानने की इच्छा की, वह उन्होंने उस याग को वत्रासुर को दे दिया था मेरे प्यारे! देखो, देवताजनों ने शचि से कहा हे शचि! तुम इन्द्र से कहो, क्या हमारे यहाँ से हमारा याग चला गया तो कहते हैं कि शचि ने इन्द्र से कहा कि हे इन्द्र! तुम मानो देखो, वज्र से विनाश करो मेरे प्यारे! कहा जाता है कि इन्द्र ने अपने वज्र को ले करके और प्राण रूपी वज्र को ले करके बेटा! वत्रासुर का हनन किया, मेरे प्यारे! देखो, वैदिक साहित्य में आया है कि यह आलांकारिक भाषाओं में परिवर्तित हो जाता है, हिरण कहते हैं, बेटा! धुम्र को धुएं को बेटा! हिरण कहते हैं। उसमें याग चला गया मेरे प्यारे! उन्होंने वत्रासुर को दे दिया परमाणुवाद को दिया तो उससे मेघमण्डलों की उत्पति हो गई। समुद्रों से जलों का उत्थान हो गया, और उन्होंने देखो, अमृतं ब्रह्मा वर्णं मेरे प्यारे! देखो, जब वह छायामान हो गया, इन्द्र और शचि नाम विद्युत का है। और इन्द्र नाम वायु का है, बेटा! उन्होंने अपने वज्र से

वत्रासुर को छिन्न भिन्न किया तो जब वह विभक्तं ब्रहे जब विभक्तता में परिणत हो गया। तो धीमी-धीमी वृष्टि हो गई। तो यहाँ गऊ के बछड़े की बलि का वर्णन आता है। मानो गऊ के बछड़े की बलि का जब वर्णन आया तो मेरे प्यारे! यह बलि क्या है? बलि कहते हैं पुरूषार्थ को हमारे जितना मानव पुरूषार्थ कर जाता है। उतना ही वह बलि देता है, बलि का अभिप्रायः है कर्तव्य का पालन करना, बलि का अभिप्रायः यह है कि गऊ के बछड़ों को मानो देखो, कृषक ने पृथ्वी की चमड़ी को उधेड़ करके और उसके गर्भ में बीज की स्थापना कर दी, तो मानो यह पृथ्वी नाना व्यंजनों वाली बन गई। मेरे प्यारे! देखो, वह अमृत वह पुरूषार्थ और पुरूषार्थ का नाम ही बलि कहा जाता है, बलि का अभिप्रायः यह नही कि उसके शरीर का हनन किया जाएं नहीं बलियां ब्रह्मे व्रतं वह तो ज्यों का त्यों परन्तु देखो, उसमें क्रियाकलाप भी आता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह महर्षि अमृतां देवत्वां याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने विचारों में व्यक्त किया, तो आज मैं बेटा! इन विचारों में नही जाता हुआ केवल यह कि हमारे यहाँ सृष्टि के पिता ने देखो, तीसरे अन्न की उत्पति की हूत करना, प्रत्येक गृह में जब हूत होता है, तो सुगन्ध होती है, और वहाँ मानो देखो, यह प्रदूषण प्रणाली समाप्त हो जाती है। शुद्ध पवित्रता आ जाती है, प्रत्येक गृह में विचारों से सुगन्ध से वेदमन्त्रों की ध्वनि से बेटा! देखो, यह मानव शब्दायमान हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया उन्होंने कहा चतुर्थ जो अन्न है, वह पुरोहित कहलाता है। प्रत्येक गृह में बुद्धिमान पुरोहित होने चाहिए, और पुरोहित ही मुनिवरों! देखो, राष्ट्र और समाज का कल्याण करते हैं। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब मैं त्रेता के काल में जाता हूँ। तो मुनिवरों! देखो, राजा दशरथ के यहाँ पुरोहितों ने अपना क्रियाकलाप किया, तो उन्होंने

महाराजा वशिष्ठ ने महर्षि विश्वामित्र से कहा कि तुम धनुर्याग करो। मेरे प्यारे! उन्होंने धनुर्याग दण्डक वनों में किया और जब दण्डक वनों में जब याग सम्पन्न हुआ, जब राजकुमार भी वहाँ विद्या अध्ययन करते थे, मेरे प्यारे! वहाँ अपने याग की रक्षा करने के लिए वह वहाँ से गमन करते हैं, और भ्रमण करते हुए जब अयोध्या में आए तो राजा को यह प्रतीत हुआ कि आज तो ऋषि का आगमन हो रहा है। राजा ने अपने स्थान को त्याग दिया। आईए भगवन! विराजिए वह विराजमान हो गएं उन्होंने नतमस्तिष्क हो करके कहा कहो भगवन! आज बिना सूचना के कैसे आगमन हुआ है आज तो पुरोहितां भूतं आप तो राष्ट्र के पुरोहित हैं ओर आप तो पराविद्या को लिए हुए रहते हैं बिना सूचना के मुझे आज्ञा देते मैं वाहन में आपका आगमन कराता उन्होंने कहा नही कोई वाकं ब्रहे तो वह प्रणाम् कार्य महाराज! उन्होंने कहा मैं राजकुमारों को चाहता हूँ। और मैं एक धनुर्याग कर रहा हूँ, और मेरे एक धनुर्याग की रक्षा होनी चाहिए। और रक्षा जब होगी जब धनुर्याग में ब्रह्मचारी देखो, अध्ययनशील बनेंगें। मेरे प्यारे! देखो, राजा ने कहा प्रभु! बाल्य तो किशोर हैं, और मैं आपकी याग की रक्षा करूंगा, मैं अध्ययन नही करूंगा, उन्होंने कहा नही भगवन! मेरे प्यारे! देखो, जब राजलक्ष्मियों को यह प्रतीत हुआ क्या आज तो विश्वामित्र का आगमन हो रहा है, तो बारी-बारी मुनिवरों! देखो, वह ऋषि के चरणों की वन्दना करने के लिए, जब मुनिवरों! देखो, उनकी राजलक्ष्मियां एकत्रित हो गईं। उन्होंने कहा कि राजं ब्रह्वे क्या ऋषि का आगमन कैसे हुआ है, राजन! जब कौशल्या जी ने यह कहा तो उन्होंने कहा क्या राजकुमारों को चाहते हैं तो कौशल्या ने कहा राजकुमारों को प्रदान कीजिए उन्होंने कहा हे देवी! यह बाल्य किशोर हैं उन्होंने कहा किशोर नही होता देखो, ऋषि की सेवा में ऋषियों को प्रदान करो मेरे प्यारे! देखो, अब मेरे प्यारे! देखो, कौशल्या ने कहा यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाला बाल्य

यदि ऋषि की सेवा नही कर सकता तो हमारा गर्भाशय दूषित हो जाएगा मेरे प्यारे! जब यह वाक् उन्होंने कहा तो राजा शान्त हो गएं और ऋषि प्रसन्न हो गएं और तब मुनिवरों! देखो, चारों राजकुमारों को ऋषि को प्रदान कर दिया। उन्होंने कहा जाओ भगवन! आप अपने याग को पूर्ण करो। मेरे प्यारे! देखो, उस समय मुझे प्रतीत है कि महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में दो सौ चौरासी ब्रह्मचारी बेटा! ज्ञान, विज्ञान की शिक्षा ग्रहण करते थे। तो मेरे प्यारे! देखो, वह धनुर्याग तो वह पुरोहित कहलाता है। पुरोहित उसे कहा जाता है जो राष्ट्र और समाज को देखो, शुद्ध और पवित्र मार्ग पर लगा दे। और राष्ट्र के लिए सदैव विचार-विनिमय करता रहे और निस्वार्थ को मुनिवरों! देखो, पुरोहित कहा जाता है। जो पराविद्या में जिसकी निष्ठा हो और पराविद्या को ग्रहण करने वाला वह भी पराविद्या पुरोहित कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा-देवी! वह भी अन्न है, जिस अन्न के द्वारा मानो हमारे जीवन की रक्षा होती हो देखो, विज्ञान के द्वारा भी रक्षा होती है। और ज्ञान के द्वारा रक्षा होती है। क्योंकि वह पुरोहित जन हैं। जो हमारे जीवन को ऊँचा बनाते हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, यह चार प्रकार का जो अन्न है। यह समाज का साझा अन्न कहलाता है। यह सबके लिए होता है परन्तु तीन प्रकार का अन्न है, जो आत्म कल्याण के लिए होता है। वह देखो, मन, कर्म और विचार यह तीन प्रकार का अन्न है। जो सृष्टि के पिता ने बेटा! आत्म कल्याण के लिए ऋषि-मुनियों कों दिया था, उन्होंने कहा सबसे प्रथम देखो, विचार होना चाहिए। विचार के पश्चात कर्म होना चाहिए। देखो, मन से विचार करो और शरीर से क्रियात्मक क्रियाकलाप करो, और उसके पश्चात मेरे प्यारे! देखो, मन, कर्म और विचार इन विचारों से ही मुनिवरों! देखो, मानव अपने जीवन को योगेश्वर बना लेता है। और इनका तीनों का साकल्य बना करके मन, कर्म, वचन का साकल्य बना करके और विचार बिन्दु में ले जाता है। और विचार

बिन्दु में ले जा करके जो हमारे यहाँ ज्ञान रूपी जो इस मानो शरीर मे याग हो रहा है। उस याग में जब आहुति प्रदान करता है, तो वह मुनिवरों! देखो, अपने में मौन हो करके और आत्मवत में रमण कर जाता है। तो आत्मवेत्ता बेटा! लोक-लोकान्तरों का भ्रमण करता हुआ, अन्त विचार में भी देखो, वह लोक में परिणत हो करके भी मौन हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, परमात्मा के हृदय से और हृदय का हृदय से जब समन्वय हो जाता है। तो बेटा! देखो, उसको विचार बिन्दु कहते हैं, और विचार जहाँ समाहित हो जाएं। और हृदय, हृदय का समन्वय हो जाएं। तो मेरे प्यारे! परमात्मा का हृदय यह जगत है और मानव का हृदय जब जगत में मानो एक रस हो जाता है। तो उसका नाम ब्रह्मवेत्ता कहा जाता है। वह मुनिवरों! देखो, लोक-लोकान्तर उसके लिए खिलवाड़ बन जाते हैं। आचार्यों ने अपनी वर्णन शैली में कहा है, क्या सबसे प्रथम देखो, मानव का हृदय है और जब मानव के हृदय का और परमात्मा के हृदय का समन्वय हो जाता है, तो बेटा! देखो, वह विचार बिन्दु में प्रवेश हो करके अपने में मौन हो जाता है।

तो विचार आता है यह तीन प्रकार का जो अन्न है, मन, कर्म और विचार यह मुनिवरों! देखो, आत्मा की धरोहर है, और इस धरोहर को जो शून्य बिन्दु से चेतन में प्रवेश हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह सात प्रकार के अन्न को सिद्ध कर लेता है। तो विचार वेत्ता कहते हैं कि यह संसारं ब्रहे तो परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के पिता ने जब सृष्टि का प्रारम्भ हुआ, तो यह सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न करने वाला मेरा देव है, जिसके आधार पर यह संसार अपने में गतिवान हो रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो वर्णन करते हुए, देवी ने कहा प्रभु! यह मैंने स्वीकार कर लिया है, और मेरे पूज्यपाद गुरुदेव भी मुझे इसी प्रकार विद्यालय में निर्णय कराते रहते रहे हैं। परन्तु मैं

जानना चाहती हूँ कि जब यह अन्न भी नही तो यह परमाणुवाद कहां रहता था? उन्होंने कहा-देवी! जब अन्न नही था तो यही परमाणुवाद मानो देखो, अपने-अपने रूप में विद्यमान था। अमृतं ब्रह्मा वर्णासुतं देवत्वां वर्णा श्वंधनं अग्नं ब्रह्मा आपां देव वृतं देवाः हे देवी! देखो, जब यह आत्मा इस शरीर को संस्कारों को ले करके शरीर को त्याग देता है। तो उस समय मानो देखो, अग्नि का भाग अग्नि में प्रवेश हो जाता है, जल का भाग जल में प्रवेश हो जाता है। गुरूतव पृथ्वी में क्या गुरूतव में प्रवेश कर जाता है। और अवकाश मानो देखो, अन्तरिक्ष में प्रवेश कर जाता है। और यह अमृतं ब्रह्मा अव्रहे वायु प्राणों के रूप में रहता है। परन्तु अपने में लय हो जाता है। हे देवी! देखो, यह चित्त के मण्डल को ले करके आत्मा यह अपने शरीर को त्याग देता है सूक्ष्मतम में प्रवेश कर जाता है। तो देवी मैं जानना चाहता हूँ संसार में मृत्यु क्या है यह तो सभी वस्तुओं का रूपान्तर हो गया है, और चित्त में मानो देखो, चित्त के मण्डल को ले करके आत्मा किसी माता के गर्भ में चला गया है या कुछ मानो देखो, कुछ समय तक भ्रमण करता है। या उसके ऊर्ध्वा में कर्म जब चित्त का मण्डल भी नही होता तो यह मोक्ष को प्राप्त हो जाता है। तो हे देवी! मैं जानना चाहता हूँ, मृत्यु है क्या? संसार में मेरे प्यारे! देवी निरूतर हो गई और उन्होने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और यह कहा कि प्रभु आपको धन्य है, आपने मुझे अन्धकार से प्रकाश में पंहुचाया है। आपने मुझे प्रकाश से अवृत में परिणत कर दिया है हे प्रभु! आपको धन्य है, मेरे प्यारे! जब वह मौन हो गई, शकुन्तका जब मौन होने लगा तो ऋषि कहता है शान्त हो करके देवी! मृत्यु भी है। ऋषि ने अमृतं ब्रहे व्रतां देवी ने कहा प्रभु! मैं तो यही शान्त हो गई। उन्होंने कहा-देवी! तुम्हें प्रतीत है कि जब राजा जनक की सभा में महात्मा अर्द्धभाग ने याज्ञवल्क्य मुनि से कहा था, कि हे प्रभु! मृत्यु की मृत्यु क्या है? तो उस समय याज्ञवल्क्य ने कहा था कि

अर्द्धभाग! मत कहो कि मृत्यु की मृत्यु नही होती। अरे, मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है। ब्रह्म को जानने वाले की मृत्यु नही होती। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने इस प्रकार उत्तर दे करके मौन हो गएं, और उन्होंने कहा-देवी! जो ब्रह्म में जब परिणत हो जाता है तो उसकी मृत्यु नही होती अन्धकार नही रहता है, वह प्रकाश ही प्रकाश में ओत-प्रोत हो जाता है। जहाँ मानो देखो, व्रतां ब्रह्मा मानो अपने में यह स्वीकार करता है मैं प्रभु के राष्ट्र में हू। बेटा! प्रभु के राष्ट्र में रात्रि नही होती, प्रभु के राष्ट्र में आलस्य और प्रमाद नही होता, और जहाँ आलस्य ओर प्रमाद नही होता, वहाँ रात्रि नही होती और जहाँ रात्रि ओर आलस्य प्रमाद नही होता वहाँ मृत्यु भी नही हुआ करती है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने इस प्रकार देखो, अपनी देवी का समाधान करते हुए, उन्होंने कहा-देवी! मृत्यु कोई वस्तु नही परन्तु यह यमां यम कहते हैं। जो मृत्यु को विजय कर लेता है। तो मानो देखो, इस प्रकार अपना मन्तव्य दे करके ऋषि अपने में मौन हो गएं देवी ने कहा धन्य है प्रभु आपने मुझे अन्धकार से प्रकाश में पंहुचाया है। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा यह विचार क्या है, क्या अज्ञान का नाम मृत्यु है। इसीलिए अज्ञान को त्यागों परमात्मा देखो, अज्ञानी नही है, वह देखो, सब एक रस रहने वाला है परमात्मा अमृतं ब्रह्मे वह अमृत है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा मानव को एक रस रहना चाहिए। अज्ञान को त्याग करके अज्ञान ही आज्ञन प्रभु के राष्ट्र में हम विद्यमान हैं, और प्रभु का राष्ट्र बड़ा अनन्तमयी है। तो बेटा! यह आज का वाक् हमारा सम्पन्न होने जा रहा है आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या बेटा! देखो मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नही होती, इसका अभाव है संसार में, और ऋषि-मुनि बेटा! इसका प्रयत्न करते रहे हैं। योगाभ्यास साधना जितनी भी होती हैं। यह अज्ञान को त्यागने में लग रहते हैं। परन्तु प्रकाश में जाने का प्रयास करते रहते हैं। तो मुनिवरों! देखो, मृत्यु

को त्यागना सर्वत्र अपने में निहित कहलाता है। तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा। ननौता, सहारनपुर ओ३म् देवाः यम मां रथं आभ्यां मनु गायन्त्वा रथं आ पाहम्। ओ३म् यशश्चां ब्रह्मणा...।

९ मोक्ष प्राप्ति का मार्ग १६ ०७ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का पठन-पाठन करते चले जा रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, ये पाठयक्रम परम्परागतों से ही विचित्र माना गया है क्योंकि हो वेद का पठन पाठन करने वाला वेदमन्त्रों का उदगीत गाता है तो, कही माला पाठ में गाता है, कही जटा पाठ में गाता है, कही उदात्त और अनुदात्त में गान गाता रहता है। जब वह माला पाठ में गाता है, तो गायन की स्वर ध्वनि बन जाती है। तो विचार आता है कि यह पाठयक्रम परम्परागतों से ऋषि-मुनियों के मस्तिष्क में सदेव रत्त रहा है, जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण करता रहा है, और नाना प्रकार का अन्वेषण और नाना प्रकार की धाराएं मे सदैव रत्त रहा है। तो हमारा वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! तू इस पाठयक्रम को अपने में लाने का प्रयास कर। क्योंकि तेरा यह पाठयक्रम पवित्र होना चाहिए, और राष्ट्र को अपने में यह उपदेश देना चाहिए, कि हे राजन! तेरे राष्ट्र में यह पाठयक्रम विचित्र होना चाहिए। जिससे ब्रह्मचारी अपने में ब्रह्मवर्चोसि बन सकें, और वह ब्रह्मचारी छात्र की अपने में अपनी छात्र की प्रवृत्तियों को प्राप्त होता रहे। तो ऐसा मुनिवरों! वेद का वाक् कहता है कि हे मानव! तू अपने में अपनेपन की धारा को जानने का प्रयास कर, परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र ये कह रहा है वहाँ ये उद्गीत गा रहा है यज्ञनं ब्रह्मं ब्रहे देवत्वां, कहीं से मुझे ये प्रेरणा आ रही है, प्रेरणा का स्रोत तो यह मानव बना ही हुआ है। और ये प्रेरणा आ रही है, कि हमारे यहाँ यज्ञनं ब्रह्मा यज्ञनंतव नाना प्रकार के यागों का वर्णन प्रायः वैदिक साहित्य में आता रहा है कही मानो देखो, याग को विष्णु के रूप में वर्णन किया। कही यही याग मानो

वाजपेयी याग है कही यही याग मानो वृष्टि याग में परिणात रहा है कही मानो देखो, ये याग अग्निष्टोम याग में और भी नाना प्रकार के यागों का वर्णन जैसे ब्रह्मयाग है, रूद्र याग है, जैसे विष्णु याग का वर्णन तो प्रायः आता ही रहता है तो देवी याग का भी वर्णन आता रहा है यह याग नाना प्रकार के रूपों में रत्त रह है, तो वेद का मन्त्र कहता है, यज्ञनं ब्रह्मा यज्ञनं ब्रहे कृतं जहाँ ब्रह्मज्ञानी अपने में ब्रह्म का चिन्तन करता है तो वह ब्रह्म में ज्ञान की विवेचना अपने में धारणा कर रहा है। तो विचार आता है, कि जैसे पुत्रेष्टि यागों का प्रायः बेटा! वर्णन आता रहा है। पुत्रेष्टि याग का अभिप्रायः ये है क्या माता अपने में पालन कर रही है, और माता जब पुत्र को जन्म देती है, तो उसे गर्भावर्णसुतं देखो, वह गर्भ में महान बना देती है। मानो देखो, इस प्रकार की वह शिक्षा प्रदान करती है जिस शिक्षा के द्वारा मानं ब्रहे माता के गर्भस्थल में महानता को प्राप्त हो जाता है तो उसका नाम मानो पुत्रेष्टि याग कहा जाता है। मुझे नाना प्रकार के यागों का जब वर्णन आता रहता है, तो मैं बेटा! पुत्रेष्टि यागों में भी प्रायः प्रवेश करता रहा हूँ। तो विचार आता रहा है कि हम पुत्रेष्टि याग में परिणात हो जाएं, और पुत्रेष्टि याग उसे कहा जाता है, जहाँ माता अपने में अनुसन्धान करती है।

मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहा है, जिस काल में द्वापर के काल में माता कौशल्या के मन में, मानो ये धारणा उत्पन्न हुई, कि मानो मुझे सन्तान को जन्म देना है, और मैं पुत्रेष्टि यागों में परिणात हो जाऊं। तो मेरे प्यारे! जबे देखो, त्रेता काल में राजा दशरथ के कोई सन्तान का जन्म नही हुआ तो एक समय महर्षि अमृतं वशिष्ठ मुनि महाराज विद्यमान थे और राजा दशरथ महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वार पर पंहुचे जब वह द्वार पर पंहुचे तो माता अरूणधती और वशिष्ठ मुनि महाराज प्रातःकालीन याग करके अपने ब्रह्मचारियों के मध्य में उपदेश दे रहे थे। जब राजा उनके समीप पंहुचे तो

ऋषि ने स्वागत किया विराजमान हो गएं, राजा से ऋषि ने कहा कहो राजन! कैसे आगमन हुआ है? उन्होंने कहा-प्रभु! ये अयोध्या राष्ट्र चला जा रहा है, और ये मानो ऋषि-मुनियों की अनुपम कृपा से ये अयोध्या का राष्ट्र ऊर्ध्वा में गमन करता रहा है। मानो देखो, जब महाराज दिलीप के, कोई सन्तान उपार्जन नही हुआ, तो वहाँ ऋषि-मुनियों ने ही मानो उसका वृत किया और जब राजा दिलीप के द्वारा रघु का जन्म हुआ इसी प्रकार भगवन! अब यह पुनः से देखो, धर्म संकट आ गया है, तो इसका उद्धार कीजिए तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज और अरूणधती ने दोनो ने अपनी-अपनी वार्त्ताएं प्रगट की, तो महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले कि जाओं, तुम महर्षि श्रृङ्गी जी जाओ दो सौ चौरासी वर्ष के ब्रह्मचारी हैं, जो भयंकर वन में रहते हैं। उनके द्वारा तुम पुत्रेष्टि याग करो। तो तुम्हें पुनः से मानो तुम्हारे राष्ट्र की आभा का जन्म हो सकता है तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने बेटा! भयंकर वन को अपना गमन किया और भ्रमण करते हुए कजली वनों में पंहुचे और कजली वनों में उन्होंने ऋषि को अपना निमन्त्रण दिया और निमन्त्रण देने के पश्चात मानो निमन्त्रण के कथनानुसार वह मानो देखो, अयोध्या में उनका आगमन हुआ, मैं विशेषता में जाना नही चाहता हूँ केवल यह क्या वह जब अयोध्या में उनका आगमन हुआ, तो यज्ञशाला की रचना हुई, जहाँ बेटा! महर्षि वायु मुनि महाराज और अंगिरस, वह सब मानो विद्यमान थे, और श्रृङ्गी जी ने मेरे प्यारे! देखो, शनै-शनै मुझे देखो, स्मरण आ रहा है उन्होंने मुनिवरों! देखो, याग का व्यवधान किया, और पुत्रेष्टि याग की रचना की, मुनिवरों! देखो, पुत्रेष्टि याग का, उन्होने एक चरू बनाया, नाना प्रकार की वनस्पतियों को ले करके, उनका चरू बनाया और चरू मुनिवरों! देखो, गो रस में और गो दुग्ध को ले करके और उन्होंने मानो कुछ वृक्षों का रस ले करके मानो एक मानो प्रसाद का निर्मित किया और उन्होंने एक याग का निर्माण किया, यागाम् भूतं

ब्रह्मे व्रत्यं मेरे प्यारे! देखो, जहाँ वह याग का प्रारम्भ हुआ तो कुछ समय तक याग चलता रहा क्योंकि वह ब्रह्मवर्चोसि थे, और ब्रह्मवर्चोसि मुनिवरों! देखो, पुत्रेष्टि याग का वर्णन कर सकता है। अथवा उसको रचा सकता है। उन्होंने नाना प्रकार की वनस्पतियों के द्वारा साकल्य का निर्माण अथवा चरू का निर्माण किया, तो वह चरू के निर्माण के द्वारा निर्माण प्रारम्भ हुआ, जब याग प्रारम्भ हुआ तो मुनिवरों! देखो, जब याग सम्पन्न हो गया, सम्पन्न होने के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, वह उनका स्वागत करने लगे। अंगिरस ऋषि और शृङ्गी जी से मेरे प्यारे! कौशल्या जी ने कहा-प्रभु! मैं आपको दक्षिणा देना चाहती हूँ, और वह दक्षिणा में क्या चाहते हैं आप? उन्होंने कहा-देवी! मैं दक्षिणा में क्या चाहता हूँ? ये मेरा हृदयं ब्रह्मा वेदमन्त्र कहता है दक्षिणां ब्रह्मे व्रतां दक्षिणा देवां हृदयानि गच्छतं मनं ब्रह्मे अन्नादं भूते मैं यह चाहता हूँ कि तुम अपने गर्भ से ऐसी सन्तान को जन्म दो, जो मानो देखो, ये जो नाना प्रकार का ये जो अनुशासन कृति प्रदूषण वाद आ रहा है यह समाप्त हो जाएं। तो मेरी इच्छा ये है देवी! तुम ऐसा तप करो जिससे तुम्हारे गर्भ से, एक महान पुत्र का जन्म हो। उन्होंने कहा प्रभु! मेरे लिए कोई कार्यवाहक उदगीत गाईए। उन्होंने कहा-देवी! जिस क्रियाकलाप को करके अपने मानो अपने को संयम में कर सकूं। तो उन्होंने कहा मेरा एक नृत्त होगा, क्या एक वेद का मन्त्र आता है यज्ञनं ब्रहे कृतं देवं ब्रह्मा विश्वं ब्रह्मा देवं ब्रीहि लोकाः तो मानो देखो, मेरी इच्छा ये है कि तुम अपने में सन्तान को जन्म दो, परन्तु तुम राष्ट्रं ब्रहे अन्ना क्योंकि देखो, राष्ट्र का जो अन्न होता है वह रजोगुण और तमोगुण से सना हुआ अन्न होता है। इसीलिए तुम्हें उस अन्न को ग्रहण नही करना है, सात्विक जन्म देना है। देवी! तो उन्होंने कहा तो बहुत प्रिय। तो माता कौशल्या ने बेटा! मुझे स्मरण आता रहा है, क्या कौशल्या जी ने उसी समय अपना एक संकल्प किया, और संकल्प मात्र से अपने में स्वयं कला कौशल

करती, और कला कौशल करके मुनिवरों! देखो, यागां ब्रह्मा देवतवां प्रातःकालीन याग भी किया करती और वह स्वयं कला कौशल करती जिसके बदले जो द्रव्य आता वह उसको ग्रहण करती रहती, और मेरे प्यारे! देखो, तपों में निष्ठ रहती। तो मुझे स्मरण है उनके गर्भस्थल में जब आत्मा का प्रवेश हो गया, आत्मा मानो देखो, ब्रह्मे जब वह प्रवेश हो गई, तो वह सदैव अपने में गायत्री छन्दों में प्रवेश करती, और गायत्री छन्दों में प्रवेश करके मानो देखो, वह उद्गीत गाती रहती थी। तो मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्र का कोई अन्न जब ग्रहण नही करती, तो राजा को यह प्रतीत हुआ कि कौशल्या जी राष्ट्र को कोई अन्न ग्रहण नही कर रही है। एक समय बेटा! वह अपने गृह में राज गृह में पंहुचे, और राष्ट्र गृह में राजा ने कहा-देवी! मैने यह श्रवण किया है क्या तुम राष्ट्र का अन्न ग्रहण नही कर रही हो, उन्होंने कहा हाँ देव! उन्होंने कहा क्यों नही कर रही हो उन्होंने कहा राष्ट्र का जो अन्न होता है वह रजोगुण और तमोगुण से सना हुआ अन्न होता है उन्होंने कहा मैं इसको ग्रहण नही करूंगी। मेरे प्यारे! मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह संकल्प कर दिया है, और मैं जब बाल्य काल में जब विद्यालय में प्रवेश करती थी तो विद्यालय में भी मेरे आचार्य तत्त्व मुनि महाराज के द्वारा मैंने यह संकल्प किया था, और याग में मैं दक्षिणा में प्रदान कर सकती हूँ। तो मेरे पुत्रों! देखो, वह बड़े खिन्न हुए, और वहाँ से मुनिवरों! बहुत प्रार्थना की, तो उन्होंने अन्न कर ग्रहण करें। उन्होंने स्वीकार नही किया वह भ्रमण करते हुए वह महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वार पर पंहुचे महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज बेटा! रात्रि सांय काल का समय था, उनकी वाटिका में शान्त हो करके राजा विद्यमान हो गएं, माता अरून्धती और वशिष्ठ मुनि महाराज की कुछ चर्चाएं हो रही थी। वह बेटा! लोक-लोकान्तरों की चर्चा किया करते क्योंकि माता-पिता का कर्तव्य है। क्या वह प्रभु के सृष्टि विज्ञान को अपने में धारण करते

हुए उनका बखान करते रहें, जिससे देखो, उनके गृह में उनके आश्रम में रहने वाले मानो धन्यं ब्रह्वे जितने प्राणी वह सब प्रसन्न हो जाते और ज्ञान को पा करके ज्ञानी बन जाएं। तो मुनिवरों! देखो, वह वार्त्ता प्रगट करने के लिए अरूणधती मंगल ब्रहे तो यह वशिष्ठ उनके ऊर्ध्वा भाग में मानो देखो, यह वृत्तिका मण्डल है। तो नाना मण्डलों की वह चर्चाएं कर रहे थे, मानो देखो, विज्ञान में रत्त हो रहे थे तो मुनिवरों! देखो, वह वार्त्ता ग्रहण करते रहे। उन्हीं चर्चाओं को बेटा! देखो, सांयकाल से प्रातः काल हो गया, और प्रातः काल होते ही देखो, अपनी क्रियाओं से जैसे निवृत्त होने लगे तो राजा उनके मध्य में पंहुचे ऋषिवर बोले आईए राजन्! विराजिए तुम्हारा आगमन किस काल में हुआ उन्होंने कहा-प्रभु! मैं प्रातः काल को नही सांय काल में तुम्हारे आश्रम में मेरा पर्दापण हो गया था, परन्तु मैं तुम्हारी वार्त्ताओं में मेरा अन्तर्हृदय मन मग्न हो गया। तो मैं यह श्रवण करता रहा हे प्रभु! देखो, मेरी दो इच्छाएं हैं, ऋषि ने कहा बोलो, उन्होंने कहा कौशल्या जी राष्ट्र का अन्न ग्रहण नही कर रही हैं। मेरी इच्छा यह है कि देखो, उन्हें राष्ट्र का अन्न ग्रहण कराओ। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा यह राष्ट्र के लिए कलंक है, वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा यह कलंक तो नही हैं, परन्तु उनसे वार्त्ता प्रगट करते हैं। तो बेटा! माता अरूणधती और वशिष्ठ मुनि महाराज अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके और उन्होंने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए देखो, मुनिवरों! अयोध्या में उनका आगमन हुआ, और वह राष्ट्र गृह में पंहुचे। जहाँ कौशल्या जी मेरे प्यारे! देखो, विद्यमान हैं अमृतं ब्रह्मा वर्णासुते उन्होंने देव को दृष्टिपात करके उन्होंने तीन आसनों को प्रदान किया तीन आसनों पर देखो, राजा भी विद्यमान हो गएं, और वशिष्ठ और महर्षि अमृतं माता अरूणधती भी विद्यमान हो गईं। तो मेरे प्यारे! देखो, राजा ने कहा सम्भूति ब्रह्मा सम्भूति लोकां वाचसुतं देवं ब्रह्मा लोकां मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा हे देवी! अमृतं तुम्हें

यह प्रतीत है कि हम तुम्हारे आश्रम में क्यों पधारें हैं। उन्होंने कहा मैं नही जानती उन्होंने कहा हे देवं ब्रह्मा! हे देवी! देखो, हम इसीलिए आयें हैं, कि तुम राष्ट्र का अन्न ग्रहण करने लगो, राजा की यह इच्छा है कि राष्ट्र का अन्न ग्रहण होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि मैं राष्ट्र का अन्न ग्रहण नही करूंगी। मैंने यह प्रतिज्ञा की है, और प्रतिज्ञा में संकल्प में सर्वत्र जगत विद्यमान रहता है। क्योंकि संकल्प में यह ब्रह्माण्ड भी विद्यमान रहता है। तो हे देव! मैं इस अन्न को ग्रहण नही करूंगी मेरे प्यारे! देखो, वह मौन हो गई। राजा ने तो वहाँ से अपना प्रस्थान किया और दोनो माता अरूणधती और वशिष्ठ मुनि महाराज ने पुनः कहा हे पुत्री! तुम अन्न को ग्रहण करने लगो तो कौशल्या ने कहा कि हे प्रभु! मैं जब बाल्यकाल में अध्ययन करती थी तो एक समय मेरे मन मस्तिष्क में यह वाक् आया कि मैं गृह में प्रवेश करना नही चाहती। परन्तु कुछ युवा हुई तो यह संकल्प जागरूक हुआ कि गृह में जाना कोई अपराध नही है। परन्तु अमृतं ब्रह्मा मैं अमृत को प्राप्त हूँगी। तो मैं देखो, राष्ट्रीय अन्न को ग्रहण नही करूंगी। तो मैंने यह प्रतिज्ञा उस समय की और मैंने याग किया ऋषि-मुनियों के द्वारा तो मैंने यह प्रतिज्ञा की है, और मैं प्रतिज्ञा बद्ध हूँ, देखो, अन्न ग्रहण नही करूंगी। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने ऐसा कहा तो उन्होंने कहा पुत्री वाक् तो तुम्हारा यथार्थ है, परन्तु हमारी इच्छा यह है कि तुम अन्न को ग्रहण करने लगो। उन्होंने कहा-प्रभु! आप यह स्वीकार करते हैं, क्या यह देखो, यह संकल्प में ही सर्वत्र जगत है। जैसे पति और पत्नी का दोनो का संकल्प होता है। संकल्प् छिन्न हो जाता है, या संकल्प नष्ट हो जाता है। तो उनकी क्या गति बनती है, परन्तु यह तो आप जानते हैं। मानो देखो, एक प्रकार का वहाँ देखो, खिन्नता आ जाती है। हे प्रभु! मैं अपने जीवन में खिन्नता नही चाहती। परन्तु उन्होंने कहा सम्भवं ब्रह्मा लोकां वाचसुतं देवाः तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार जब उन्होंने अपना वर्णन

किया तो वर्णन शैली में उन्होंने कहा ब्रह्मे हे प्रभु! मैंने यह संकल्प किया है, मैं संकल्पबद्ध हूँ। तो इसी संकल्प के द्वारा मुनिवरों! देखो, ऋषि अपने में मौन हो गएं। माता अरूणधती ने पुनः कहा हे पुत्री! तुम अन्न को ग्रहण अवश्य करना होगा, उन्होंने कहा हे माते! मैं इस अन्न को ग्रहण नही करूंगी। क्योंकि यह परमात्मा का जगत एक संकल्प है, और संकल्प मात्र से मानो देखो, सूर्य अपने संकल्प से उदय होता है, और संकल्प में चन्द्रमा उदय होता है, और यह सर्वत्र जगत मानो अपने-अपने संकल्प मात्र से गमन कर रहा है। तो हे माते! मैं मानो इस अमृत को नही शान्त कर पाऊंगी। मेरे प्यारे! मेरे प्यारे! देखो, जब वशिष्ठ ने पुनः कहा तो वशिष्ठ से कहा, हे भगवन! मैं इस संकल्प को त्याग सकती हूँ। यदि तुम दोनो पति और पत्नी दोनो अपने संकल्प को नष्ट कर दो तो मैं भी कर सकती हूँ। तो महर्षि वषिष्ठ मुनि महाराज ने अरूणधती से कहा, हे देवी! तुम क्या उत्तर देना चाहती हो, वह बोली कि-प्रभु! मैं कोई इसका उत्तर नही मेरे से बन पाएगा। तो इसीलिए इसका संकल्प तो अचूक है, उसे रहने दिया जाएं। तो वह मेरे प्यारे! वह संकल्प में सर्वत्र जगत कह करके और परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड भी संकल्प में है। तो संकल्प ब्रह्मणो देवाः तो यह संकल्प मात्र में अपना यह गति कर रहा है।

तो विचार आता है मुनिवरों! वह मौन हो गएं, और माता अरूणधती और वशिष्ठ मुनि महाराज राजस्थली तक पंहुचे तो राजा ने स्थान त्याग दिया आओ, भगवन! विराजो वह विराजमान हो गएं। राजा दशरथ ने कहा कहो भगवन! उन्होंने कहा संकल्प ब्रह्मा देवतवां राजं ब्रह्मे राजा और प्रजा का संकल्प मात्र से राजा होता है, और राजा के लिए प्रजा संकल्प है, माता के लिए पुत्र संकल्प है, पिता के लिए पुत्री संकल्प है, यह सर्वत्र जगत मानो संकल्प में तो उनका संकल्प नष्ट नही कर सकते, तो मेरे प्यारे! देखो, जब

उन्होंने ऐसा कहा कि संकल्प मात्र से इस प्रकार का यह जगत चल रहा है। तू अपने में मौन हो जा। तो मेरे प्यारे! देखो, माता कौशल्या ने अपने गर्भ में अपने में तप किया और माता कौशल्या के राम जैसे महान पुत्रों! का जन्म हुआ तो बेटा! देखो, उसी पुत्रेष्टि याग में परिणत माना गया है। तो यहाँ नाना प्रकार के यागों का व्यवधान होता रहा है, जैसे पुत्रेष्टि याग है, इसी प्रकार वाजपेयी याग है, अग्निष्टोम याग है, विष्णु याग है, नाना प्रकार के यागों में बेटा! सदैव अपने में परिणत रहा है तो मुनिवरों! देखो, याग अपने में मानो याग में परिणत होने वाला यह जगत माना गया है। तो इसीलिए मानव को अपने में संकल्पवादी बनना चाहिए, और नाना प्रकार के यागों में परिणत रहना चाहिए। आज बेटा! मैं कुछ वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रहा था मैं साहित्य में चला गया मैं त्रेता के काल में चला गया। परन्तु देखो, विचार क्या प्रत्येक मानव को याग में परिणत रहना चाहिए। यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है, और यज्ञशाला में मानो देखो, याग हो रहा है, आत्मा यज्ञमान है, परमात्मा ब्रह्मा है। पंच महाभूत मानो कोई उदगाता है, कोई अध्वर्यु है, और कोई होता बन करके बेटा! आहुति दे रहा है। तो यह प्रिय याग हो रहा है, तो याग यज्ञशाला को हमें अपने चिन्तन में लाना चाहिए, तो मेरे प्यारे! देखो, यह उच्चारण करके ऋषि अपने में अमृतं मौनं ब्रह्मा देवतवां तो आज का वाक् बेटा! मैं विशेष चर्चा नही अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवां भूतं भवि वर्णं देवं सर्वाणि गतं मां रथा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे, एक संकल्प की चर्चा कर रहे थे, और पुत्रेष्टि याग और भी नाना प्रकार के यागों का व्यवधान हो रहा था। क्योंकि इनका जो चिन्तन है, वह बड़ा गम्भीर रहा है, और हम इनके चरणों में विद्यमान हो करके प्रायः इस विद्या को पान करते रहे हैं। तो

विचार आता रहता है मैं विशेषता में नही जहाँ यह हमारी आकाशवाणी जा रही है। मृत मण्डल में वहाँ एक याग सम्पन्न हुआ है, मेरा अन्तरात्मा मानो देखो, यज्ञमान के साथ रहता है। हे यज्ञमान! तुम्हारे जीव का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। क्योंकि तुम ब्रह्मे वाममार्ग काल में जहाँ सुरा और सुन्दरी और द्रव्य की लोलुपता में मानो एक लोलुप कर रहा है। वहाँ एक मानो द्रव्य का सदुपयोग कर रहा है। हे यज्ञमान! मेरी सदैव यह कामाना रहती है, कि तुम्हारे गृह में तुम्हारे द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे, और वह सदुपयोग ही मानव का जीवन माना गया है। तो इसीलिए तुम्हारा ब्रह्मणां यागाम भूतं याग तुम्हारा देखो, भव्यता को प्राप्त होता है, तो आज मैं विशेष चर्चा ने देता हुआ, केवल यह कि यह जो आधुनिक काल का जगत है। यह एक वाममार्ग का जगत है, और वाममार्ग उसे कहा जाता है। जो उल्टे मार्ग पर गमन करने वाला है, वह शुद्धिकरण न करता हुआ, उल्टे मार्ग पर गमन करता है, और वह देखो, यह नाना मैं यह कहा करता हूँ। अपने पूज्यपाद गुरुदेव से हे पूज्यपाद! यह जो आधुनिक काल है राष्ट्र है यह मानो देखो, रूढ़िवाद के आँगन में रमण कर रहा है, और रूढ़िवाद मानो देखो, इस समाज को नष्ट करता चला जा रहा है, और राष्ट्रीयता को अग्नि के मुखारबिन्दु में परिणत कर रहा है। वह मानो देखो, यदि राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनायें तो उसके बहुत से प्रकार हैं। ऊँचा बनाने के क्योंकि शिक्षा प्रणाली मानवीय प्रणाली और देखो, यह जो राष्ट्रीय प्रणाली अशुद्धता को प्राप्त हो रही है। यह मानो ब्रह्मणो व्रत्यं देवतवां निकृष्टता में नही जाना चाहिए, राजा को चाहिए कि राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाएं, परन्तु राजा तो यह चाहता ही नही राजा चाहता कि पद की लोलुपता बनी रहे, और पदों की लोलुपता में वह अपने को गमन कराता रहे। परन्तु यह जो नाना प्रकार के ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बनी हुई हैं, इन रूढ़ियों को राजा को नष्ट करना चाहिए, और जब

तक यह रूढ़ियाँ बनी रहेंगी तो रक्त भरी क्रांति बनी रहेंगी, और रक्त में जीवन कहता रहेगा, परन्तु देखो, ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ हैं। धर्म एक है। रूढ़ि अनेक मानी गई हैं। तो इसीलिए राजा को चाहिए कि देखो, रूढ़ियों को नष्ट करना चाहिए। तो इस प्रकार देखो, मैं अपने विचारों को पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराना चाहता हूँ, कि यह राष्ट्र का कर्तव्य है कि प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित किया जाएं उनका सम्पूर्ण देखो, वेद के आधार देखो, ज्ञान और विज्ञान के आधार पर उनका शास्त्रार्थ होना चाहिए, और विचार-विनिमय होना चाहिए। परन्तु देखो, जो ज्ञान और विज्ञान में दर्शनों में मानवता में घटित हो जाएं। उसको स्वीकार कर लेना चाहिए और वही धर्म है। वही मानवता है, और वही विज्ञान है, परन्तु उसे राजा को चाहिए, कि अपनी मध्यस्ता में इस प्रकार की सभाएं होनी चाहिएं। तो आज मैं विशेष चर्चा नहीं प्रगट कर रहा हूँ। परन्तु राजा के राष्ट्र से रूढ़ियाँ नष्ट हो सकती हैं। और प्रजा अपने में प्रजामयी बन सकती है। तो विचार-विनिमय यह कि हे पूज्यपाद गुरुदेव! यह जो आधुनिक काल है, यह वाममार्ग का काल है उल्टे मार्ग पर यह मानव गति कर रहा है। यह वेदां भूतं देखो, ज्ञान में नही जाना चाहता अज्ञान की चर्चाएं करते रहते हैं। कहीं मृत्यु से पार होना चाहते हैं, कही ये संसार मृत्यु के आँगन में सदैव रमण कर रहा है। जब सुरापान करता है तो इसकी मृत्यु हो जाती है जब यह मानो अप्रिय क्रियाकलाप करता है। तो मृत्यु हो जाती है, हे राजन्! तेरे राष्ट्र में प्रजा की मृत्यु नही होनी चाहिए। राजा भी मृतक नही बनना चाहिए, क्योंकि अज्ञान है और अज्ञान को मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मृत्यु कहा है, परन्तु देखो, आज विशेष चर्चा न देता हुआ मेरा सदैव यज्ञमान के साथ अन्तर्हृदय रहता है। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तेरे जीवन में सदैव देखो, द्रव्य का सदुपयोग होता रहे द्रव्य का दुरूपयोग नही

होना चाहिए। क्योंकि द्रव्य ममता है, द्रव्य का दुरूपयोग होगा तो द्रव्य तुम्हें त्याग देगा और द्रव्य का सदुपयोग होगा। तो द्रव्य मानो देखो, तुम्हें कण्ठ से आलिंगन कर लेगा और तुम्हारे यहाँ द्रव्य की बलवती होती चली जाएगी और दुरूपयोग में यह द्रव्य तुमसे दूरी चला जाएगा। तो यह आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ। हे यज्ञमान! तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे अपने में सदैव सदुपयोगिता के ऊपर विचार-विनिमय करना चाहिए तो आज का वाक् यह सम्पन्न होने जा रहा है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदवे से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरूदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने दो शब्दों में अपनी बड़ी विचित्रता उन्होंने राष्ट्रीयता और रूढ़िवाद के विनाश के लिए अपना एक मन्तव्य दिया, और यह कहा कि राजा की मध्यस्थता में सभाएं हो, और नाना प्रकार के रूढ़ियों के आचार्य एकत्रित हो करके धर्म की स्थापना करें, और धर्मज्ञ देखो, धर्म विज्ञान मानवता दर्शन पर जो स्थिर हो जाएं। उसी का नाम धर्म है। जो धारण किया जाएं, जिससे राष्ट्र और समाज और विज्ञान ऊँचा बनता है, और विज्ञान का सदुपयोग होता रहे, यह मेरे प्यारे महानन्द जी ने अभी-अभी कहा तो विज्ञान का दुरूपयोग और द्रव्य का दुरुपयोग नही होना चाहिए। इसके साथ यह वाक् सम्पन्न होने जा रहा है। समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं माहं प्राची रथं मा नाः। ओ३म् यशश्चां ब्रह्मणा रथं आ पाहाम्। ओ३म् सर्व भविता मा णा वसु आ पाहाम्।

१० मोक्ष प्राप्ति का मार्ग १९ ०७ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा, अनन्तमयी माने गएं हैं, और जितना भी ये जड़ जगत, अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि हमारे यहां जब भी ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर एकत्रित हुए हैं। तो वह मन और प्राण और मस्तिष्क को एकाग्र करते हुए, उस परमपिता परमात्मा के अनन्तमयी जगत के ऊपर विचार-विनिमय करते रहे हैं। वह अपने-अपने अनुभव अपनी-अपनी वार्त्ताएं सदैव प्रगट करते रहे हैं। क्योंकि दार्शनिक अपनी दार्शनिक वार्त्ताओं में उस परमपिता परमात्मा के जगत का नियन्त्रण करते रहे हैं, और योगी जन अपने प्राणों की प्रतिष्ठा को ले करके और परमात्मा के उस मानो गम्भीरतम् अणु और परमाणु और विभु के ऊपर विचार विनिमय करते रहे हैं। परन्तु विज्ञानवेत्ता जब भी अपनी स्थलियों पर एकत्रित हुए है। वह तरंगवाद को ले करके और तरंगो के ऊपर अनुसन्धान करते रहे हैं। कहीं मानो उन तरंगो का व्यवधान करते हुए वह नाना प्रकार के यन्त्रों का वास्तव में निर्माण करते रहे हैं, और नाना प्रकार की चित्रावलियों का प्रायः वह निरूपण और परमाणुओं का सुगठित करके उसका निर्माण करते रहे हैं। परन्तु वह जो तरंगवाद पृथ्वी के गर्भ में हैं। वही तरंगेवाद मानो देखो, एक-दूसरे लोक-लोकान्तरों के मध्य में विराजमान रहते हैं। तो इसके

ऊपर योगीजन और वैज्ञानिकजन इसके ऊपर निरूपण और इसके ऊपर विचार-विनिमय करते रहे हैं।

तो आओ, बेटा! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा तो नही प्रगट करने आया हूँ, केवल ये कि तीन प्रकार के विचारक इस संसार में प्रायः सृष्टि के प्रारम्भ से होते रहे हैं। सबसे प्रथम मानो दार्शनिक है, और दार्शनिकों के पश्चात विज्ञानवेत्ता हैं, और विज्ञानवेत्ताओं के पश्चात वह यौगिकवाद को अपने में ले गएं हैं। तो बेटा! मुझे नाना प्रकार की सभाएं, प्रायः स्मरण आती रहती हैं, हमारे यहाँ राजा भी इस प्रकार के रहे हैं। जिनमें अपनी राज्य सभा में, जहां वह प्रजा के सुखद के लिए प्रायः अपनी सभाएं करते रहे हैं। वही मुनिवरों! देखो, राज सभा में एक विचारक विद्यमान हो करके दार्शनिक और विज्ञान को अपने में लाने का प्रयास करते रहे हैं। और कहीं बेटा! देखो, साधक जन योगीजन विद्यमान हो करके राज्यसभा में पुरोहित बन करके और राष्ट्रवाद को यौगिक वाद में ले जाने का प्रयास करते रहे हैं। तो प्रायः मुनिवरों! देखो, साधारण समाज और राज सभा सर्वत्रता में मुनिवरों! देखो, ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने प्रायः होती रही हैं, और उड़ाने उडी गई हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और भी नाना ऋषियों के मध्य में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ प्रायः राजा जनक के यहाँ नाना प्रकार की सभाएं होती रही हैं, और ऋषि-मुनियों का जीवन प्रायः उनमें रत्त रहा है, जहाँ मेरी पुत्रियाँ नाना प्रकार की उड़ाने उड़ने वाली रही हैं। वहाँ वीरांगना बन करके चाक्राणी जैसी विदुषी राजा जनक की सभा में ऋषि-मुनियों से नाना प्रकार की वार्ताएं प्रायः वार्त्ताएं प्रगट करती रही हैं। आओ, मेरे प्यारे! आज मैं इस सन्दर्भ में विशेष चर्चाएं नही केवल यह कि राजा जनक के यहाँ नाना ऋषिवर विद्यमान थे। क्योंकि वहाँ तीन प्रकार के यथार्थी प्राणी उपस्थित होते हैं। मुझे बेटा! वह काल स्मरण है एक तो

ब्रह्मवेत्ता जो ब्रह्म का प्रायः बखान करते रहे हैं, एक वह जो ब्रह्मजिज्ञासु हैं, परन्तु ब्रह्म को जान तो लिया है, परन्तु उसकी जिज्ञासा में अपने ब्रह्म का अपने में चर्य करते रहे हैं, और एक वह है जो दार्शनिक रूप में रत्त हो करके मुनिवरों! देखो, वह धर्म और मानवता को वह दर्शन के रूप में दृष्टिपात करना चाहते हैं। तो मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहा है, जब राजा जनक के यहाँ, नाना ऋषि मुनि विद्यमान हैं, और उनके यहाँ समय-समय पर नाना सभाओं का आयोजन होता रहा है। कहीं उनकी सभा में बेटा! ब्रह्मजिज्ञासु कहीं ब्रह्मचारी एकत्रित हो जाते, और कोई मेरे प्यारे! कोई ऐसी वार्त्ता अवश्य वर्णन करते रहते। तो राजा जनक ने एक समय रात्रि काल में अपनी देवन रम्भेश्वरी से कहा-देवी! कल, आगे आने वाला जो समय है, उसमें में एक ब्रह्मवेत्ताओं का समाज एकत्रित कर रहा हूँ, और उस ब्रह्मवेत्ताओं में, मैं नाना प्रकार के क्या ऐसे प्रसंग को ले करे ब्रह्मजिज्ञासुओं में देखो, अपनी वार्त्ता प्रगट कराना चाहता हूँ। तो रम्भेश्वरी ने कहा हे प्रभु! आप ये तो कर रहे हैं, परन्तु राजा हो, आपको अभिमान न हो जाएं क्योंकि राजा राज सभाओं में ब्रह्मवेत्ताओं की सभा में जब राजा इस प्रकार की सभाएं करता है, तो उसको अभिमान की मात्रा उत्पन्न हो जाती है, और अभिमान ही मानो देखो, उसकी मृत्यु मानी गई है। तो हे राजन! तुम्हारी मृत्यु न हो जाएं। ऐसा मानो देखो, हम अपने में स्वीकार करते रहे हैं, और हमारे मनों की यह भावना रहती है, हे राजन्! तुम्हारे यहाँ नाना प्रकार की सभाएं तो होनी चाहिएं। परन्तु राजा में अभिमान की मात्रा न हो जाएं। जिससे मृत्यु को प्राप्त हो जाएं राजा जनक ने कहा नही देवी! ऐसा नही होगा क्योंकि ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मज्ञान में अभिमान नही होता, यदि वह जिज्ञासा वाला है और जिज्ञासा में जो प्रसंग करता है, उसको अभिमान नही होना चाहिए। परन्तु अभिमान उनको होता है जो परीक्षार्थी के लिए परीक्षा में परिणत होते हैं, मैं परीक्षा

नही दे रहा हूँ, मैं तो जिज्ञासु बनूंगा और राजा देखो, संसार में मानो नाना प्रकार के जन्म-जन्मान्तरों में भी मानो जिज्ञासु बना रहता है, क्योंकि कर्म का जो ज्ञान और विज्ञान है, वह बड़ा अनन्तमयी हैं और उसके ज्ञान और विज्ञान में अन्धकार में ही एक प्रकाश रहता है। तो इसीलिए प्रकाश होने से मानव प्रकाश में रत्त रहता है। मेरे प्यारे! देवी ने कहा बहुत प्रियतम अगला दिवस हुआ प्रातःकालीन अपने पुरोहित अश्वल से बोले राजन! हे पुरोहितों! आज ब्रह्मवेत्ताओं का समाज एकत्रित होना है, परन्तु यह जो गऊ हैं, एक सौ एक गऊ इनके सींगों पर स्वर्ण मंढ़ा हुआ होना चाहिए। महाराज अश्वल उनके पुरोहित थे, परन्तु ब्रह्मवेत्ता भी थें, राजा ने कहा-प्रभु! ऐसा क्यों कर रहे हों? उन्होंने कहा राजन्! गऊओं को मैं दान देना चाहता हूँ। और जो इनका यथार्थी जिज्ञासु है, वह इन गऊओं को ले जाएगा। महाराज अश्वल ने आज्ञा पा करके ऐसा ही किया मेरे पुत्रों! देखो, गऊ विद्यमान हैं मुनिवरों! देखो, ब्रह्मवेत्ताओं का समाज एकत्रित होने लगा और ब्रह्मवेत्ताओं के यहाँ बेटा! विद्यमान हो करके जब सब ब्रह्मवेत्ता उनकी मृत्यु हो गई। उनका पर्दापण हो गया, सब अपने-अपने यथोचित आसन पर विद्यमान हो गएं। तो राजा जनक ने उपस्थित हो करके एक प्रश्न किया क्या हे ब्रह्मवेत्ताओं! तुम ब्रह्मवेत्ता हो मेरी दृष्टि में और तुम ब्रह्म का बखान करते हो, परन्तु मेरी इच्छा यह है क्या एक सौ एक गऊ है। इन गऊओं को वह ब्रह्मवेत्ता अपने गृह में ले जाएं जो तुममें से सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मवेत्ता हो, तो बेटा! जहाँ नाना ब्रह्मवेत्ता हों एक दूसरा मानव इन विचारों में लग गया क्या कौन इनमें से ब्रह्मवेत्ता हो सकता है? होता है तो अभी-अभी गऊओं को ले जाएं, हमसे कोई विशेष ब्रह्मवेत्ता हो, तो हमारा अपमान जनक न होगा। हम जनक की सभा में अपमानित न हो जाएं परन्तु इस विचार में लग गएं, लग जाने के पश्चात, कुछ समय के पश्चात महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने ब्रह्मचारियों को लिए हुए विद्यालय में

से उनका ब्रह्मवेताओं की सभा में पदार्पण हुआ। उन्होंने यज्ञदत ब्रह्मचारी से कहा हे ब्रह्मचारी! हे रोहिणीकेतु ब्रह्मचारी! इन गऊओं को अपने आश्रम में ले जाओ। यज्ञदत ने बेटा! गुरू की आज्ञा पाते ही, उन गऊओं को अपने आश्रम के लिए उन्होंने गमन कराया ब्रह्मवताओं में बेटा! एक प्रकार का विचार-विनिमय होने लगा। क्या ये ब्रह्मवेत्ता सबसे महान हैं, जो ये गऊओं को ले करके अपने आश्रम में ब्रह्मचारियों को इन्होंने गमन कराया है। मेरे प्यारे! देखो, जब ब्रह्मणां व्रते सभी शान्त हो गएं कोई ब्रह्मवेत्ता का ये साहस नही हुआ कि वह प्रश्न करे, परन्तु देखो, चाक्राणी उपस्थित थी चाक्राणी ने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! तुम सब शान्त हो गएं हो, मेरी इच्छा तुम्हें प्रगट करना चाहती हूँ तुम्हारी आज्ञा हो? तो ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा-देवी! तुम प्रश्न करो। हम बड़े प्रसन्न हैं, सभी ब्रह्मवेत्ताओं ने मुक्त कण्ठ से कहा मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहा है चाक्राणी ने कहा हे ब्रह्मवेत्ता! तुम मानो इन गऊओं को अपने आश्रम में ले गएं हो। मैं तुमसे ये प्रश्न करना चाहती हूँ, क्या तुम इनमें सबमें ब्रह्मवेत्ता हो महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा नही देवी! मैं ब्रह्मवेत्ता सर्वश्रेष्ठ नही हूँ। परन्तु देखो, ब्रह्म तो ब्रह्म ही है, ब्रह्म का बखान कुछ गम्भीर रूप से किसी-किसी काल में कर लेता हूँ, क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्मवेत्ता तो वह ब्रह्म है। जो ब्रह्म इस सृष्टि का निर्माणवेत्ता और नियन्ता है और सृष्टि को जो गति दे रहा है। जो एक-एक परमाणु में निहित रहने वाला है वह विभु है। तो वास्तव में ब्रह्मवेत्ता तो वही है। मैं प्रायः ब्रह्मवेत्ता नही हूँ, परन्तु इतना है, कि तुम बारी-बारी मेरे से प्रश्न करो, और यदि मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर जानता हूँगा, तो अवश्य दूंगा। और यदि प्रश्न का उत्तर नही बना, तो नमः हो जाऊंगा। वह मानो देखो, अपने नमः का मेरे द्वारा एक स्थान है। क्योंकि परमपिता परमात्मा विष्णु है, जैसे वृक्ष पर देखो, फल आने के पश्चात वह पालना के मूल में रहने से वह नीचे को हो जाता है। नमः हो जाता है। इसी प्रकार परमपिता परमात्मा पालक है,

तो वह ध्रुवां में विष्णु ब्रह्म व्रतां वेद की एक आख्यिका आती है कि ब्रह्म मानो विष्णु ध्रुवा में गमन करने वाला है, इसी प्रकार वह विष्णु सूक्तों का पठन-पाठन करता रहता है। और मैं उस हम अपने प्रभु से ये प्रार्थना करते रहते हैं कि कहीं अभिमान न आ जाएं। यदि प्रश्नों का उत्तर नही बन पाया है, तो मैं अपने में हतावृत्तियों में परिणत नही हूँगा, मैं नमः हूँ। और विष्णु के स्वरूप में, अपने को ले जाना चाहता हूँ, चाक्राणी गार्गी उनके विचारों से बड़ी प्रसन्न हुई, उन्होंने कहा तो प्रभु! मैं आपको कुछ प्रसन्न करना चाहती हूँ। उन्होंने कहा-देवी! तुम प्रश्न करो और यदि मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर जानता हूँगा, तो अवश्य दूंगा और मैं आपसे नमः कर लूंगा आप दिव्या हैं। दिव्य ज्योति में आप रमण करती रही हैं। मुझे स्मरण है कि तुम्हारे मे जो प्रमुख हैं, अहिंसा परमोधर्म में सदैव तुम परिणत रही हो, मृगराज और देखो, सृपराज तुम्हारी वन्दना करते रहें है। हे देवी! तुम प्रश्न करो? चाक्राणी उपस्थित हो करके बोली प्रभु! क्या मैं जानना चाहती हूँ, क्या मेरे दो भुज हैं, एक भुज में मेरे में कमान है, और एक में तरकश अमृतं मानो देखो, वह तीर एक है एक में कमान है हे प्रभु! मैं दोनो को एक सूत्र में ला करके मेरा एक लक्ष्य बना हुआ है, मेरा लक्ष्य क्या होना चाहिए, मेरा मानो देखो, उस कमान का और देखो, वह जो अमृहे कृति है, उसका लक्ष्य क्या है? तो चाक्राणी गार्गी ने जब ये प्रश्न किया, तो याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे देवी! तुम आध्यात्मिकवाद में जानना चाहती हो, या भौतिकवाद में जाना चाहती हो, उन्होंने कहा देव! मैं आध्यात्मिक और भौतिकवाद में दोनो में प्रवेश करना चाहती हूँ। उन्होंने तुम प्रवेश ही प्रवेश करना चाहती हो या उनमें प्रवेश हो करके मानो अपने को रत्त किया है, उन्होंने कहा-प्रभु! मैं प्रवेश नही मैं प्रश्न करता हूँ, उन्होंने कहा तो देवी एक भुज में तुम्हारे में मानो कमान है। एक में तरकश है, तरकशां भूतं लक्ष्यां वर्णा सुतं देवतवां ऋषि कहता है। देवी! तुम्हारा ब्रह्म ही तो लक्ष्य है,

परन्तु तुम्हारे इस मानव शरीर में, तुम्हारी साधना के क्षेत्र में जब प्रवेश होगे। तो तुम्हारा जो प्राण रूपी कमान है, और उस पर तरकश कशा हुआ है, जिसको मन कहते हैं। मन रूपी तरकश का मन रूपी ब्रह्मणां ब्रह्मा, उसका जो लक्ष्य है, वह ब्रह्म है। क्योंकि जो प्राण से हो करके गमन करता है, उसी का नाम मानो देखो, कमान और तरकश कहते है। वह ही, उसका लक्ष्य ब्रह्म माना गया है। क्योंकि ब्रह्म ही मानो देखो, ब्रह्म को पाना चाहता है। प्रत्येक मानव की ये इच्छा बनी रहती है, कि मैं ब्रह्म को पाना चाहता हूँ, नाना प्रकार के मैं उच्चारण मैं परम्परागतों से मैं मानवीय मस्तिष्कों में और क्रियात्मकता में होते रहे हैं। एक यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हैं, उसके मन में भी मन मस्तिष्क में यही प्रेरणा आ रही है, कि मैं अपने को सुखद में ले जाना चाहता हूँ। मेरी प्यारी माता है वह अपने में ये चाहती है कि मेरा जीवन सुखद में हो जाएं, और मृत्यु मेरे निकट न आए यही मानव का एक लक्ष्य है और देखो, मृत्यु जब नही आएगी जब वह ब्रह्मरूपी अमरपद को नही प्राप्त हो जाता हूँ। अमरावती को नही जा पाता हूं वह मृत्यु से पार नही होगा। तो इसीलिए वेद के ऋषि ने कहा-देवी! तुम्हारा जो लक्ष्य है तुम्हारा जो प्रश्न करने का अभिप्रायः है, वह क्या प्राण रूपी मानो देखो, तरकश पर एक कमान कशा हुआ है, जिसको कमान को देखो, तरकशं ब्रह्मणा मेरे प्यारे! देखो, तीर कशा मन और प्राण का, दोनो का समन्वय करने से ही मुनिवरों! देखो, मानव एक सूत्र मे आ करके ब्रह्म देखो, उसका लक्ष्य उसको प्राप्त हो सकता है। ब्रह्म को पाने का प्रत्येक साधक का कर्तव्य है। जो भी साधना करता है, वह ब्रह्म रूप में और ब्रह्म को ही मुनिवरों! देखो, अपना लक्ष्य बनाना चाहता है। और उसी के द्वार पर जाना चाहता है, जितने भी योगी जन है, वह नाना प्रकार का प्राणायाम करते हैं, कही प्राण को अपान में मिलाने का प्रयास करते हैं, क्योंकि अपान में प्रकृति का तन्तु हैं, और

प्राण में परमाणुओं का सम्मिलान है, और दोनो को मिलाने का उसका अभिप्रायः यही है, कि ब्रह्म को प्राप्त हो जाऊं मेरा जीवन प्रकाश में हो जाएं, और मैं जीवन में प्रकाश को प्राप्त हो जाऊं, मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार वह प्राणायाम करता है, रेचक करता है, कुम्भक करता है, और पूरक कर रहा है, उसका अभिप्रायः ये कि प्राणायाम करता है, वह कुम्भक करता है, प्राण को अपनी स्थिति में वही मुनिवरों! देखो, स्थिर करता है। रेचक करता है, उसको त्याग देता है आन्तरिक जगत से बाह्य जगत में त्यागता है। आन्तरिक जगत से बाह्य जगत में कुम्भक करता है। मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार करता हुआ, वह क्यो कर रहा है, क्योंकि उसका लक्ष्य है, कि मैं ब्रह्म को प्राप्त हो जाऊं। मेरा मनस्तव और प्राणतव मानो तीर और कमान दोनो देखो, एक स्थली पर आ जाएं, और उसका जो लक्ष्य है, मानो जैसे क्षत्रिय का लक्ष्य होता, तीर कमान ले करके, कि अपने शत्रु पर विजय हो जाऊं, मानो देखो, ब्रह्म को जान करके साधक, मुनिवरों! देखो, काम, क्रोध, लोभ, मोह जो शत्रु हैं उन पर विजय होना चाहता है तो मेरे प्यारे! देखो, इसीलिए विजय होने की उसकी इच्छा है। इसीलिए वह मन और प्राण का दोनो का एक दूसरे से समावेश चाहता है, और समावेश ही मेरे प्यारे! देखो, उस काल में होता है जब वह अपनी साम्यावस्था में ब्रह्म की आभा में परिणत हो जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे देवी! तुम ये जान गई होगी, क्या मैं तुम्हारे प्रश्नों का मैं यह उत्तर तो नही दे रहा हूँ परन्तु जितना मैं जानता हूँ, उतना मैं समाधान कर रहा हूँ, और समाधान यही है, कि तुम अपने में ब्रह्मवत को सिधन करके ब्रह्म को पाना चाहते हो। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म लक्ष्य में ही, वह गमनता को प्राप्त होना चाहता है। तो मानो देखो, तुम्हारे उसमें जो कमान है, उसके मेरे प्यारे! देखो, कमान पर तीर कशा हुआ है, उसका जो लक्ष्य है जैसे ब्रह्म का लक्ष्य जैसे क्षत्रिय

का लक्ष्य है शत्रुओं पर विजय पाना इसी प्रकार साधक भी देखो, उन दोनो का मिलान करके देखो, तीर और कमान दोनो का मिलान करके वह काम, क्रोध, लोभ, मोह शत्रुओं पर विजय करना चाहता है। और विजय करता हुआ, ब्रह्म ही उसका लक्ष्य है क्योंकि ब्रह्म को प्राप्त किए बिना ब्रह्म को अपने जाने बिना हम मानो इस लक्ष्य को नही प्राप्त हो सकते। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणां शत्रु पर विजय जब ही पा सकेंगे, जब लक्ष्य हमारा यथार्थ होगा, जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके उसका मन मस्तिष्क और क्रिया मानो एक ही सूत्र में रहते हैं, तो उसका याग सफल हो जाता है। इसी प्रकार साधक, मेरे प्यारे! मन मस्तिष्क एकाग्र हो करके, जब मन और देखो, वह मन और प्राण दोनो का एकाग्र तत्त्व हो जाएगा, एक रूप में हो जाएंगें, तो उसे मोक्ष की पगडण्डी प्राप्त हो जाएगी। और उस प्रकाश ब्रह्म के ही क्षेत्र में जो करके ब्रह्म को ही प्राप्त होने लगेगी।

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने याज्ञवल्क्य ने देखो, चाक्राणी गार्गी के प्रश्नों का उत्तर दिया गार्गी ने कहा-प्रभु! यथार्थ है। हे प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ, ये पंच प्राणों का क्या अभिप्रायः है, इस शरीर में ये आध्यात्मिकवाद है भगवन! उन्होंने कहा प्राणों का अभिप्रायः है सबसे प्रथम प्राण है अपान, व्यान, समान और उदान यह मानो देखो, पंच प्राण कहलाते हैं। पंच प्राणों को एकाग्र किए, बिना तो हम मानो देखो, प्राणों को और मन को ले करके हम तीर कमान पर तीर को नही कर सकते, उसको एकाग्र वृत्तियों में नही लो सकते, तो देवी देखो, प्राण प्राण देखो, अरबों खरबों परमाणु बाह्य जगत से लाता है, और आन्तरिक जगत से मानो बाह्य जगत में त्याग देता है। ये प्राणों का व्यवधान है, उन्होंने कहा तीन प्रकार के परमाणु होते हैं, और वह परमाणु सबसे प्रथम मानो तेजोमयी, तरलतव और गुरूतव ये तीन प्रकार के परमाणुओं को त्यागता रहता है। अपने में ग्रहण

करता रहता है, यदि इनमें से तीनों में से एक में से कमावृत्ति हुई, तो अपने प्राण और अपान को मिलान करने में उसे कठिनता रहेगी। इसीलिए देखो, यहाँ से, एक वैद्यराज का जन्म होता है। आयु का जन्म होता है और आयु के जन्म दाता कहते हैं, क्या ये मानो देखो, वायु प्राणां में अग्नि और अप्रतं मानं ब्रहे मानो ये तीनों एक सूत्र में रहेंगे तो पात्र प्रबल बना रहेगा, पवित्र बना रहेगा, और यदि उसमें से प्राण में से कही वायु का सन्निधान हो गया है, तो वहीं दोषारोपण हो जाएंगे। यदि वायु में पित आ गया है अग्नि और अग्नि में कही तरलतव बलवती हो गया है, तो स्वास्थय भी विचित्र नही बनेगा। आयु में सूक्ष्मता बलवती हो जाएगी। तो यहाँ से मुनिवरों! देखो, एक वेदं ब्रह्मा वेदं ब्रह्मा इसी वेदमन्त्रों में से बेटा! देखो, आयु की प्रतिभा और उसके ऊपर अनुसन्धान करने वाले वैद्यराजों का जन्म हुआ। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार आज मैं तुम्हें आयुर्वेद में नही ले जाऊंगा, विचार-विनिमय केवल हमारा ये कि महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे देवी! अमृतं देखो, ये जो प्राण हैं, हमारे यहाँ प्राण चिकित्सावेत्ताओं ने प्राण को, एक दूसरें से मिलाने का प्रयास किया। तो यह प्राण चिकित्सा का जन्म हो गया। मानो देखो, औषध विज्ञान उसी प्राण को हम बाह्य जगत में औषधियों में एकत्रित करने लगे तो वायु का वेग बन गया, ये वनस्पति विज्ञान आ गया। परन्तु इसमें भी मैं जाना नही चाहता हूँ, केवल ये विशाल ब्रह्माण्ड की चर्चा नही, तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा-देवी! ये जो प्राण है, यह व्यान मानो देखो, अरबों खरबों परमाणु बाह्य जगत में लाता है आन्तरिक जगत में त्याग देता है। मानो देखो, उसी प्रकार का वह ज्ञान उन्हीं परमाणुओं का निरीक्षण करता रहता है और निरीक्षण करके ये प्राण का प्रमाणं ब्रहे यह परमाणु ब्रहे आज यह कहाँ पंहुचा है, कहाँ से यह उत्थान हो गया, कही सूक्ष्मता हो गई हो तो उसका वह निदान करता है, व्यान मानो उसमें भ्रमण करता है, और

मुनिवरों! देखो, जितना भी खेचरी वाला जगत है। चाहे वह परमाणु को अन्तरिक्ष में से ले आए चाहे वह प्राण के द्वारा नासिका के द्वारा ले आएं। परन्तु देखो, जितना भी तरलतव जो भी खेचरी वाली वस्तु है। चाहे पृथ्वी में से जल को ले लिया जाएं चाहे माता के गर्भस्थल में देखो, वीरतव और रजतव दोनो का मिलान होना है, यह सर्वत्र मुनिवरों! देखो, यह अपान का कर्तव्य है। यह पृथ्वी के गर्भ में से यह नाना प्रकार के परमाणुओं को लाता रहता है, जल का शोधन जल को अपने में धारण करता रहता है। ऐसे ही मानो उत्पति के मूल में विद्यमान रहता है, तो यह मुनिवरों! देखो, अपान का कर्तव्य है प्राण, अपान और व्यानं देखो, प्राण अपान व्यान और नागं ब्रह्मा व्रतं देखो, यह समान है, सब में सम दृष्टिपात करता रहता है, सबमें व्याप्त रहता है, और मुनिवरों! देखो, जितना भी चित्त का मण्डल है, वह उदान का कर्तव्य है। यह जो उदान प्राण है, यही तो मानव के चित्त को लिए हुए भ्रमण करता है, जितना भी स्मरण शक्तिवाला जगत है, स्मरण शक्ति वाला जितना भी जगत है, बेटा! वह सब मानो देखो, उदान का कर्तव्य है। हम आहार करते हैं आहार करके मेरे प्यारे! उसका रस मज्जा बनता है, वह कुछ रस मानो स्मरणीय शक्ति क्षेत्र को चला जाता है, और उससे स्मरण शक्ति बनी रहती है। वह मज्जा के रूप मे मेरे प्यारे! वीरतव के रूप में विद्यमान होता है, और विद्यमान हो करके उससे स्मरण शक्ति निरूपण रहती है। निरूपण मानो बनी रहती है। तो उससे मुनिवरों! देखो, वह उदान कहलाता है, उदान मेरे प्यारे! यह मन का क्षेत्र है, यह प्राण मुनिवरों! देखो, जब मन से मिलान करता है। तो विभाजन क्रियाएं और विभक्त क्रियाएं दोनो का सम्मिलन होता है मानो देखो, यह जो प्राण रूप जिसको कहते हैं, यह विभाजन करता है, और यह मन विभाजन करता है, प्राणों का विभाजन होता है। यह विभक्त क्रिया बनी रहती है। बेटा! देखो, मानव के चित्त मण्डल में जन्म जन्मान्तरों

के संस्कार विद्यमान होते हैं। और उन संस्कारों में करोड़ों जन्मों के संस्कार चित्त मण्डल में रहते हैं, उनकी स्मरण शक्ति बनी रहती है। जब मुनिवरों! देखो, उदान प्राण यह मन का क्षेत्र कहलाता है। मन में ही बेटा! देखो, मन की धाराएं होती है। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार यह अहंकार में परिणत होता हुआ चित्त के मानो मण्डल में प्रवेश हो करके यह चित्त का आन्तरिक जगत बन जाता है, और यही जगत को जानने का योगी जन साधक जन अपने में प्रायः प्रयास करते रहे हैं, और अनुसन्धान करते रहे हैं, कि हम अपने को इसको जानने का प्रयास करें। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है हमारे यहाँ वायु गोत्र में बहुत से ऋषि हुए हैं और गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने मेरे प्यारे! एक सौ एक वर्ष तक अपनी गाड़ी के नीचे अपने जीवन को व्यतीत किया, उसी में कुटीर बना करके वह साधना में परिणत होते रहे हैं, मेरे प्यारे! देखो, एक सौ पांच वर्ष तक उनके अभ्यस्त में जो वायु का सेवन करते थे, क्षुधा लगती मेरे प्यारे! देखो, अन्न का खरल बना करके अग्नि में तपा करके क्वाथ बना करके, पान करते रहें है। परन्तु ऋषि-मुनियों ने जब प्राण को अपान में प्रवेश कराया अपान को व्यान में ले गएं, तो मेरे प्यारे! देखो, वह लगभग कोई एक लाख पिचासी हजारों के जन्मों के संस्कारों को साक्षात्कार कर पाए। मेरे प्यारे! जब तक संस्कार बने रहेंगे जब तक मानव का प्राण और मन एकाग्र नही होगा, एकाग्र न होने से मेरे प्यारे! मोक्ष की पगडण्डी प्राप्त नही होगी परमानन्द नही प्राप्त होगा। तो इसीलिए वह आहारं व्यवहारं भूतं ब्रह्मा आहार से मेरे प्यारे! मन बनता है, और जब मन पवित्र होता है, तो मन का दर्पण जैसे ही उसके समीप आता है। वह दर्पण पवित्र बना रहता है, और जब मन पवित्र होता है, तो यह प्राण भी पवित्रता में उससे मिलन करते हैं, तो बेटा! देखो, वह तीर और कमान को ले करके जब वह गमन करता है। तो उसका लक्ष्य ब्रह्म से तेज उसे प्राप्त हो जाता है।

तो मेरे प्यारे! मैं कौन से क्षेत्र में चला गया हूँ। प्रायः क्षेत्र में तो नही जाना था केवल विचार यह तो बेटा! हम अपने गुरुओं के द्वारा हम प्रश्न करते रहे हैं, उनसे जानते रहें हैं, मैं उस क्षेत्र में चला गया हूँ, परन्तु विचार-विनिमय केवल हमारा यह क्या मुनविरों देखो, ब्रह्मणं ब्रह्मा कृतं देवाः ऋषि ने अपना मन्तव्य देते हुए कहा कि देखो, वह जो उदान का क्षेत्र है। वह जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों का क्षेत्र है। जब यह आत्मा इस शरीर को त्यागता है, तो उदान प्राण के ऊपर जाता है, यह आत्मा और उदान प्राण में मेरे प्यारे! अपने सूक्ष्म शरीर को ले करके निकल जाता है। यह उदान प्राण मानो देखो, सागर है इसमें मन का क्षेत्र है और मन के क्षेत्र में ही सूक्ष्म शरीर रहता है, जिसमें बेटा! देखो, पंच तन्मात्राएं प्रकृति की रहती हैं, और दस प्राण रहता है। और मन और बुद्धि रहता है, मेरे प्यारे! बुद्धि के जितने भेदन है, उस एक ही बुद्धि में मानो समाहित हो जाते हैं। उस बुद्धि में बेटा! मेधा भी समाहित है, प्रज्ञा भी समाहित है, और मुनिवरों! ऋतम्भरा भी उसी में ओत-प्रोत हो करके मनं ब्रह्वे मानो देखो, यह प्राण के क्षेत्र में जिसको हम व्यान कहते हैं, उदान कहते हैं, उदान के क्षेत्र में रमण करता रहता है। तो मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः केवल यह कि हम आध्यात्मिक वाद को विचारें कि आध्यात्मिकवाद कितना विशाल क्षेत्र है। मेरे प्यारे! देखो, जो जन्म जन्मान्तरों के जो चित्त में संस्कार होते हैं। उन संस्कारों को हम जागरूक करने में लगे रहते हैं, और उसके ऊपर अनुसन्धान करते हैं, उससे दर्शन आता है, उसी से यौगिकता आती है, और वही विज्ञान बन करके बेटा! हमारे लिए खिलवाड़ बन जाता है। तो विचार-विनिमय देने का हमारा अभिप्रायः क्या है बेटा! देखो, चाक्राणी ने कहा था हे भगवन! मेरे भुजों मानो तीर और कमान है, उसका लक्ष्य क्या है? वह कहता है कि उसका लक्ष्य ब्रह्म है। मेरे प्यारे! देखो, मानव इस सूक्ष्म शरीर से स्थूल शरीर को जान

करके सूक्ष्म में प्रवेश कर गया है, और सूक्ष्म को जान करके वह कारण लिंग में चला गया है, और कारण लिंग में जा करके संस्कारों से विहीन हो जाता है तो यही आत्मा बेटा! देखो, ब्रह्म से मिलान करके एकोकीकरण हो जाता। मेरे प्यारे! जैसे हृदय हृदयं ब्रह्मा जैसे हृदय का हृदय से मिलन हो जाता है, तो मेरे प्यारे! देखो, वह संस्कारों के चित्त में जब संस्कार न रहा तो उदान संज्ञा भी मुनिवरों! देखो, समाप्त हो जाती है, और लिंग भी समाप्त हो जाता है, और सूक्ष्म संज्ञा भी समाप्त हो जाती है, और यह आत्मा मेरे प्यारे! पुनरूक्ति माता के गर्भ में जाना और पुनरूक्ति आना बेटा! देखो, उससे मुक्त हो जाता है। मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें बहुत दूरी ले गया हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि याज्ञवल्क्य ने कहा-देवी! मैं तुम्हारे प्रश्नों का इतना ही उत्तर जानता हूँ। परन्तु आगे मैं नही जानता केवल मेरा मन्तव्य यही है कि तुम्हारे भुज में जो मानो देखो, एक कमान है, और एक तीर कसा हुआ है, और तुम्हारा जो लक्ष्य है, वह ब्रह्म है और ब्रह्म को जानते-जानते तुम कहाँ चले जाओगे बहुत दूरी चले जाओगे, तुम्हारे इस महान देखो, तीर तरकश का अभिप्रायः केवल यही है कि तुम्हारा लक्ष्य ब्रह्म है, प्रत्येक मानव जितने भी क्रियाकलाप कर रहा है, वह संसार में कुछ पाना चाहता है, एक माता अपने पुत्र से स्नेह कर रही है वह कुछ पाना चाहती है, पितर स्नेह कर रहा है, वह भी पाना चाहता पति पत्नी स्नेह युक्त हो करके अपने गृह को ऊँचा बनाना चाहते हैं, वह भी मानो महानता को चाहते हैं और उस महानता के गर्भ में देखो, सदैव ब्रह्म रहता है, उस महानता के गर्भ में भी ब्रह्म है प्रकाश है क्योंकि प्रकाश के स्वरूप में ब्रह्म कहा जाता है। जहाँ बेटा! देखो, अज्ञान नही भासता प्रकाश ही प्रकाश में वह रहना चाहते हैं। तो मेरे पुत्रों! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ विचार-विनिमय केवल हमारा यह क्या मुनिवरों! देखो, संसार में जितना भी क्रियाकलाप है उस क्रियाकलाप में कोई न कोई रहस्य

विद्यमान रहता है, वह तीर और कमान की वार्त्ता रहती है। क्योंकि क्रिया है, और क्रिया में मानो देखो, कोई न कोई उसका लक्ष्य है, और लक्ष्य ही मुनिवरों! देखो, तीर है, और मुनिवरों! देखो, वह जो कमान है, उस पर वह मन कसा हुआ है, उसको वह पाना चाहता है। जहाँ उसे जाना है मेरे प्यारे! वह कमान को ब्रह्म का लक्ष्य बनाता है। ब्रह्म को ही लक्ष्य बनाता है, और ब्रह्म को लक्ष्य बना करके मृत्यु से पार होना चाहता है। चाक्राणी गार्गी ने कहा-प्रभु! धन्य है आपको आप ने मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया आपाके धन्य हे प्रभु! मैं आपको नमः होती हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय यह उन्होंने सबसे प्रथम पहला प्रश्न किया और पहले प्रथम प्रश्नों का यह उत्तर रहा क्या जो मुनिवरों! देखो, ऋषि ने देवी को मुनिवरों! देखो, प्राणो की संज्ञा दे करके मोक्ष तक पंहुचा दिया, सर्वत्र जगत ज्ञान और विज्ञान इन प्राणों के माध्यम से उन्होंने निर्णायत्मक दिया सूक्ष्मता से मानो प्राणों में आवागमन है। परमाणुओं में ही आवागमन है, क्योंकि अरबों खरबों परमाणु आवागमन में लगे हुए हैं, और व्यान उसके निरीक्षण में लगा हुआ है और समान उनको सब जगह देखो, निरीक्षण देता है, क्या वह देखता है कि कही प्राण जहाँ नही पंहुचा वही वह पंहुचाने का प्रयास करता है, और मुनिवरों! देखो, वह अपानं भूतं ब्रह्मे देखो, जितना ऊर्ध्वा गति देखो, ध्रुवा गति यह सब मुनिवरों! देखो, वह व्यान के कहलाते हैं। देखो, प्राण, उदान, समान, नाग देखो, देवदत्त, धनंजय मानो देखो, दूसरे में परिणात हो जाते हैं। यह पंच प्राणो में बेटा! पांच ज्ञानेन्द्रियाँ समाहित रहती हैं। इन्ही पांच ज्ञानेन्द्रियों में पांच कर्मेन्दियां समाहित रहती हैं। और जब यह बाह्य जगत बन जाता है तो इनके ऊपर तृष्णा का क्षेत्र बन जाता है। मेरे प्यारे! इन सबको नष्ट करने के लिए एकोकीकरण करने के लिए बेटा! देखो, प्राण और मन का सन्निधान करना चाहता है। अपने सुखद और मृत्यु को विजय करने के लिए अज्ञान को नष्ट

करने के लिए यह बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा कल बेटा! इससे आगे चाक्राणी आगे बेटा! देखो, प्रश्न करेगी याज्ञवल्क्य मुनि महाराज उसका उत्तर दे सकेंगे। आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए अपने प्रभु की महिमा को जानते हुए इस सागर से पार होने का प्रयास करें। प्रत्येक मानव बेटा! यह संसार रूपी सागर से पार होना चाहता है। वह बिना ज्ञान के जाने हुए अज्ञान को उसमें मिश्रित करते हुए नही जान सकता बेटा! देखो, जानाति जानं ब्रह्मा ज्ञान और कर्म दोनों को ले करके जब गमन करता है, और कर्म को बेटा! देखो, जब अन्धकार में मिश्रण कर देता है। तो वह अन्धकार को विजय हो जाता है। अन्धकार से विजय हो करके प्रकाश में चला जाता है। यह है बेटा! आज का वाक् कल मुझे समय मिलेगा तो चाक्राणी के अगले प्रश्नों का उत्तर याज्ञवल्क्य मुनि महाराज राजा जनक की सभा में अपने उद्गीत गायेंगे यह कल मैं इस प्रश्न को ले सकूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

११ मोक्ष प्राप्ति का मार्ग २० ०७ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं, और वह ज्ञान और विज्ञान में निहित रहने वाले हैं, क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए, परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित हैं, और वह सीमा मे आने वाले नही हैं। क्योंकि उसका जो वर्णन करने वाला वर्णन करता रहता है। तो उसका यशोगान गाता है, परन्तु अन्त में इन्द्रियाँ अपने में शान्त हो जाती हैं, उसका जो भी मानव बखान करता है, और बखान करता है, उसकी महिमा का गुण गाता ही रहता है। परन्तु गान गाने वाला अन्त में मौन हो जाता है। तो इसीलिए उस परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान अनन्तमयी विद्यमान रहता है। वह अनन्तमयी है। तो इसीलिए वे परमपिता परमात्मा हमारे अन्तःकरण में विद्यमान होता हुआ, और ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहता है। क्योंकि जितना भी अणुवाद है, लोक-लोकान्तरवाद है, यह उस परमपिता परमात्मा की महिमा है, अथवा उसका ज्ञान और विज्ञान है, एक-एक अणु में सर्वत्र ब्रह्माण्ड विद्यमान होता है। जब ऋषि-मुनि इसका अन्वेषण करते हैं, तो एक परमाणुवाद को जब वह उसका विभाजन किया जाता है। तो उस एक-एक परमाणु में सर्वत्र ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आता रहता है, जिस

प्रकार माता के गर्भस्थल में एक शिशु विद्यमान है, और शिशु अमृतां निन्द्रां भूतं ब्रह्मणा ब्रह्मणे एक आसुतं ब्रह्मा वेद का वाक् कहता है कि यह जो लोक की रचना है, माता के गर्भस्थल से हमें प्रतीत होती है, परन्तु ऋषि-मुनियों के क्षेत्र में जब हम प्रवेश करते हैं। तो उनके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर प्रायः अनुसन्धान करते हैं, तो उनका ज्ञान और विज्ञान इतना नितान्तर रहा है। क्या एक-एक श्वास में एक-एक रक्त के बिन्दु में बेटा! मानव का मानो चित्रण होता रहा है, एक-एक श्वास की गति है, परमाणुवाद को जब मापा जाता है, वह एक श्वास से इतना परमाणुवाद जाता है। जितने परमाणुओं से माता के गर्भस्थल में एक बाल्य का निर्माण हो जाता है। एक मानो शरीर का निर्माण हो जाता है, परन्तु उसका ज्ञान और विज्ञान इतना महान है, हमारे ऋषि-मुनियों ने एक परमाणु का जब विभाजन किया तो एक-एक परमाणु में बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगा कही बेटा! लघु मस्तिष्क में इसको दृष्टिपात किया जाता है। कही रेणाकेतु मस्तिष्क में अपनी कृति को योगीजन ले जाते हैं। कहीं प्राण और मन को एक मानो वृत्तियों में ले जाते हैं। जहाँ बेटा! ब्रह्माण्ड उन्हें साक्षात्कार दृष्टिपात होने लगता है। तो आज बेटा! मैं विज्ञान के वांगमय में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, हमारे यहा एक विचित्रता ऋषि-मुनियों की प्रायः चिन्तन और मनन में रही है। क्या उन्होंने बेटा! भौतिकवाद को आध्यात्मिकवाद में परिणत कर दिया और आध्यात्मिवाद को भौतिकवाद से मानो उसको कटिबद्ध कर दिया विचार आता रहता है बेटा! जहाँ नाना अलंकारों की चर्चाएं आती हैं, अलंकारों में बेटा! देखो, अलंकार में आ करके मध्य काल में प्रायः बेटा! मुझे मेरे पुत्र महानन्द जी ने वर्णन कराया मध्य काल में मानो देखो, नाना प्रकार की भ्रमितयां युक्त हो करके और ज्ञान न रह करके देखो, अलंकार को एक साहित्य का एक मूलक स्वीकार कर लिया उसका परिणाम यह हुआ साहित्य में न अलंकार रहा है।

न साहित्य रहा तो मानव का जीवन मिश्रितं ब्रह्मा ब्रहे मानव! का जीवन बेटा! भ्रमित हो गया, और भ्रमित हो करके परन्तु उसके मानवतव में सुन्दरता न रह करके देखो, उसमें भ्रमिता आ गई। तो आज मैं बेटा! इस साहित्यिक विचार में नही ले जा रहा हूँ, विचार-विनिमय केवल यह कि आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है, वेदमन्त्र कहता है। यमं ब्रह्मा वर्णासुतप्रहा सूर्या यह सूर्य नाना प्रकाश की ऊर्ज्वा देता है, अथवा प्रकाश देता है, जिस प्रकाश में प्रत्येक मानव बेटा! रत्त रहता है। इसी प्रकार ऊर्ज्वा मेरे प्यारे! आती रहती है। परन्तु उसकी ऊर्ज्वा में मानव अपने को प्रकाशित करता हुआ और आध्यात्मिकवाद में बेटा! प्रवेश कर जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ जब भी ऋषि-मुनियां का सम्मेलन हुआ है, अथवा एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हुए हैं, तो उन्होंने सृष्टि को मापा है और मानो देखो, सृष्टि को मापने के पश्चात पंच महाभूतों को मापने का प्रयास किया, और मुनिवरों! देखो, इस सृष्टि को जब मापा गया तो मुनिवरों! देखो, तो उससे नाना प्रकार की धाराओं का जन्म हो गया। बेटा! हमने इससे पूर्व काल में तुम्हें प्रगट करते हुए कहा था, मैं राज जनक की सभा में तुम्हें ले जाता रहता हूँ, जहाँ ब्रह्मवेत्ताओं का समूह एकत्रित रहा है। जहाँ देखो, अश्वल जैसे पुरोहित विद्यमान हैं। जो ब्रह्मज्ञान में सदैव रत्त रहते हैं। तो मुनिवरों! देखो, जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने चाक्राणी गार्गी के प्रश्नों का उत्तर दिया तो सब मानो देखो, उससे सन्तुष्ट हो गएं सन्तुष्ट हो गएं, तो उन्होंने कहा ब्रह्मे व्रतं परन्तु ब्रह्मवेत्ताओं का निश्चयात्मक नही हुआ उनके हृदय में सदैव यह आशंका बनी हुई कि यह ब्रह्मवेत्ता अपने को सर्वत्र ब्रह्मवेत्ता की उपाधि प्रदान कर रहा है। तो मानो यह ब्रह्मवेत्ता है, अथवा नही तो यह आशंका उनके हृदय में मन मस्तिष्क में सदैव बनी रही, परन्तु ब्रह्मवेत्ता सब शान्त महात्मा दिग्ध जैसे भी शान्त थे और महात्मा अर्द्धभाग मेरे

प्यारे! देखो, नाना ब्रह्मवेत्ता नाना जिज्ञासु अपने में सान्त्वना को प्राप्त हो रहे हैं मेरे प्यारे! कोई ऋषि से आगे यह प्रश्न नही कर रहा है परन्तु चाक्राणी पुनः से उपस्थित हुई और चाक्राणी ने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो मैं इस ब्रह्मवेत्ता से दो प्रश्न कर सकती हूँ, मेरे प्यारे! ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा कि अवश्य देवी तुम इनसे प्रश्न करो तुम भी ब्रह्मवादिनी हो ब्रह्म में तुम्हारी सदैव निष्ठा रही है, और ब्रह्म का सदैव चिन्तन करती रही हो तुम इन्द्रियों में जय हो तो तुम ऋषि से अवश्य प्रश्न करो मेरे प्यारे! महात्मा अश्वल ने और भी अर्द्धभाग ने एक स्वर में यह कहा प्रवाहण और दालभ्य ने भी ऐसा ही कहा कि तम अवश्य प्रश्न करो परन्तु चाक्राणी ने कहा हे दालभ्य! हे महात्मा शिलक! तुम तो उस माता के पुत्र हो जिस माता ने तुम्हें गर्भस्थल में तुम्हें ब्रह्मवेत्ता बना दिया था और गर्भ में तुम्हें शिक्षा प्रदान कर दी तुम ऋषि से क्यों नही प्रश्न कर रही हो महात्मा अर्द्धभाग ने कहा और देखो, महात्मा शिलक ने कहा कि हम इसीलिए प्रश्न नही कर रहे हैं। क्योकि हम इन्हें जानते हैं, हम देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज को जानते हैं। हमने जब तपस्या की माता से आज्ञा पा करके और ब्रह्मवेत्ता तो मानो हमें बना दिया, परन्तु तपस्या की सूक्ष्मता रह गई तो भयंकर पन में जहाँ महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का आश्रम था वही हमने भी अपने आश्रम में विद्यमान हो करके ब्रह्मजिज्ञासु बन करके देखो, हमने ब्रह्मवादी बनने के लिए तप किया क्योंकि बिना तप के एक मानव अपनी वाणी से बखान कर सकता है। ब्रह्म का चिन्तन कर सकता है, बखान कर रहा है। परन्तु देखो, बिना तप के वह मानो देखो, उसके बखान में अशुद्धवाद रह जाता है। वह जब तप करता है, तो तप से वह निश्चय हो जाता है, मानो देखो, तप ही उसे कहते हैं, जिसकी इन्द्रियों में ब्रह्मवाद समाहित हो जाता है, और इन्द्रियों पर जय हो जाता है। इन्द्रियों का जो क्रियाकलाप है। इन्द्रियों में जो-जो गुण हैं। परन्तु जो-जो

देवता उसमें वास कर रहा है। उस देवतव को ही जानना मानो देखो, हमें ब्रह्मवाद में तपस्वी बनना है, मेरे प्यारे! देखो, यह महात्मा के वाक्यों को पान करके चाक्राणी अपने में मौन हो गई परन्तु चाक्राणी ने कहा कि तुम्हारी आज्ञा है मैं ऋषि से प्रश्न कर सकती हूँ उन्होंने कहा अवश्य कीजिए मेरे प्यारे! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज उनके आसन पर विद्यमान हैं चाक्राणी ने उपस्थित हो करके कहा हे प्रभु! आप ने इससे पूर्व जो प्रसंग मैंने किया अपनी जिज्ञासा मैंने प्रगट की मैं प्रश्न नही करती हूँ मेरे अन्तर्हृदय में जो जिज्ञासा बनी रहती है मैं केवल अपनी जिज्ञासा को ही ले करके अपनी वार्त्ता प्रारम्भ करती हूँ हे प्रभु! मैं जिज्ञासु हूँ और जिज्ञासु के नाते मैं आपको अपनी जिज्ञासा प्रगट कर रही हूँ हे प्रभु! यह जो मुझे दृष्टिपात आने वाला जगत है यह जगत मानो देखो, चतुर्षता में परिणत हो रहा है हे प्रभु! देखो, यह चार प्रकार की सृष्टियां कहलाती हैं, सबसे प्रथम मानो सृष्टि का नाम स्थावर है, और द्वितीय सृष्टि का नाम अण्डज है, और तृतीय सृष्टि का नाम जंगम है, और तृतीय सृष्टि का नाम उद्भिज कहलाता है। तो हे प्रभु! यह जो चतुष प्रकार का जो सृष्टि चक्र है। इसकी प्रतिष्ठा कहाँ रहती है? यह कहाँ अपने में ओत-प्रोत होता है। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा-देवी! सबसे प्रथम सृष्टि का नाम स्थवर कहलाता है। तो स्थावर सृष्टि में मानो जितना भी वृक्षवाद है, वनस्पतिवाद है, जो स्थिर रहने वाला जो स्थावर है। मानो देखो, वह गति कर सकता है। वह चरेवेति शब्दों में ही प्रवेश करता है। परन्तु देखो, वह अपने में स्थिर है, और उसको स्थावर सृष्टि कहते हैं। जैसे नाना प्रकार के वृक्ष हैं। इन वृक्षों में एक-दूसरा वृक्ष मानो एक दूसरे की सहायता से यह अपने में मानो ओजस्वता को जन्म दे रहा है, और यह अपने में प्रदूषण को समाप्त कर रहा है। एक-दूसरें में ओत-प्रोत होता हुआ एक दूसरे में समन्वय होता हुआ मानो यह प्रदूषण का विनाश का मूलक

कहलाता है। तो हे प्रभु! यह मानो देखो, स्थावर सृष्टि है, यह स्थावर जगत कहलाता है। हे प्रभु! का तो हे प्रभु! देखो, यही तो प्रदूषण को समाप्त करने वाला है। परन्तु यह उज्ज्वलता देने वाला है, उज्ज्वल बनाता है, और वायुमण्डल को पवित्र बनाता रहता है। क्योंकि इसमें वनस्पति हैं, और यह मानो एक वृक्ष दूसरे का पूरक बन करके मानो एक दूसरें में मानो एक दूसरे में मानो उत्पति के मूल में लगा हुआ है। एक दूसरा मानो इसमें ओत-प्रोत हो रहा है। इसी प्रकार यह स्थावर सृष्टि है, जो मेरे प्यारे! देखो, सूर्य की नाना प्रकार की ऊर्ज्वा को ले करके यह ओजस बन रहा है। जैसे पीपल का वृक्ष है, वह मानो देखो, पीपल के वृक्ष में यह विशेषता है क्या यह मुनिवरों! देखो, जब भी यह अपने में ऊर्ज्वा देता है तो मुनिवरों! देखो, एक सप्ताह अपने में ऊर्ज्वा देता है, एक दिवस ऐसा है, जहाँ वह ऊर्ज्वा नही देता प्रदूषण देता है। वह मानो देखो, ऊर्ज्वा दे करके और वह मुनिवरों! देखो, इस प्रदूषण को समाप्त करने वाला है। बेटा! मैं आज तुम्हें देखो, इस वनस्पति विज्ञान में नही ले जा रहा हूँ, ऐसी-ऐसी औषध प्रभु के राष्ट्र में मेरे प्यारे! जो स्वर्ण के पात्रों से जिसका समन्वय रहता है। ऐसी-ऐसी भी औषधियां जो मानो चन्द्र ब्रीहि तृत मेरे प्यारे! जो मुनिवरों! देखो, चन्द्र पात्रों से ही मानो देखो, उसके पात्रों से उसका समन्वय रहता है। मेरे प्यारे! एक औषध है, जिसको सोमवृत्तिका औषध कहा जाता है। वह स्वर्ण की ही मानो देखो, पात्रों से नियुक्त किया जाता है। स्वर्ण की मानो देखो, अस्त्रों से उसको निकासा जाता है और वह स्वर्ण के ही पात्रों में मुनिवरों! देखो, उसको खरल किया जाता है। उसको जो भी रूग्ण देखो, रूग्णोतं प्रमाणां ब्रहे और जो यक्ष्मा भयंकर रूग्ण है जब उनको देखो, वह अमृता को प्राप्त करके जब उन्हें प्रदान किया जाता है। तो उनके रूग्णों को समाप्त कर देता है। मेरे प्यारे! देखो, वह औषध इस प्रकार की है जितना भी मुनिवरों! देखो, मुझे स्मरण है जब मुनिवरों देखो, महात्मा

दधीचि ने देखो, दधीचि के मस्तिष्क को इन्द्र ने दूरी कर दिया था, तो उसी समय देखो, अश्विनी कुमारों ने उसी औषध को ले करके मानो उसको क्वाथ बना करके और उसका लेपन करने से उसका मस्तिष्क ज्यों का त्यों स्थिर कर दिया था तो आज मैं बेटा! आयुर्वेद में न जाता हुआ केवल विचार-विनिमय यह कि ऋषि कहता है कि यह स्थावर सृष्टि है इसमें कितने प्रकार के गुण विद्यमान है इसी में आयुर्वेद विद्यमान रहता है मानो ऐसी-ऐसी सोमलता हैं जिनको पान करने से मुनिवरों! देखो, माता के गर्भस्थल में मानो देखो, बाल्य ब्रह्मवेत्ता बन जाता है मेरे प्यारे! देखो, जब स्वाति नक्षत्र में मानो देखो, रोहिणी नक्षत्र की जब दोनो की पुट लगी रहती है, तो जब माता उसे ग्रहण करती है। तो माता उसे अपने बाल्य को मानो ब्रह्म का उपदेश देना प्रारम्भ करती है, और वह बाल्य मानो देखो, प्राण के माध्यम से औषधियों के माध्यम से मानो देखो, ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है। तो आज बेटा! मैं विशेष चर्चा नही मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। महर्षि दुर्वासा मुनि का महर्षि दुर्वासा मुनि के ऐसा मानो विद्या को जानते थे, वेदमन्त्रों में उन्होंने उन वेदमन्त्रों को निहित किया, जिन वेदमन्त्रों में बेटा! देखो, वह विद्या, वह ज्ञान विज्ञान, विद्यमान था जैसा बेटा! मुझे स्मरण है जब मैं तुम्हें द्वापर के काल में ले जाता हूँ तो बेटा! मुझे एक आश्चर्य जगत मानो देखो, संसार दृष्टिपात आने लगता है यह विद्याएं बेटा! देखो, महाभारत के काल तक रही है महाभारत के काल में बेटा! देखो, महर्षि दुर्वासा थे और त्रेता के काल में मुनिवरों! देखो, महर्षि कागभुशुण्ड और लोमश मुनि, इस विद्या को जानते थे। मेरे प्यारे! देखो, विद्या माता ये चाहती है जब गर्भस्थल में शिशु का प्रवेश होता है, क्या मुझे अमुक देवता का आह्वान करना है और अमृक देवता की उपासना करके देखो, मैं मानो अमुक देवता के गुणों वाले मानो देखो, बाल्य को जन्म देना चाहती हूँ, तो माता उसी प्रकार की विद्या का अध्ययन और

वेदमन्त्रों का अध्ययन करके मानो देखो, प्राणायाम करते हुए अपान प्राण में प्रवेश करके मानो जब इस प्रकार का वह अवधान करती और उस मन्त्र का जपन करती, मन एकाग्र रह करके तो उसी गुणों की सन्तान को बेटा! जन्म देने वाली बनीं। बेटा! देखो, ये विद्या माता कुन्ती के अन्तर्हृदयों में भी विद्यमान रहती थी दुर्वासा ने प्रदान की थी, क्योंकि महर्षि दुर्वासा मुनि इसको जानते थे, माता के गर्भ में जैसे शिशु का प्रवेश हुआ उसी समय बेटा! ऋषि उन्हें उस वेदमन्त्र को प्रदान करते थे, क्या उससे प्रश्न करते क्या पुत्री तुम्हें कौन से देवता और गुणों को धारण कराना है। तो वह मानो उसी प्रकार का वेद का मन्त्र उन्हें प्रदान करते और वह वेदमन्त्रों का बेटा! अपने में जपन करती और उसके जप करने से मानो उसी के गुणों का सन्तान को मानो जन्म देना है। तो मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में ही माता मानो देखो, उसका अध्ययन करती है, प्राण और अपान को दोनो को सम्मिलान करके मन की पुट लगाती है, और वेदमन्त्रों का जब अध्ययन करती है, तो बेटा! वह प्रायः विद्या देखो, उसके समीप आ जाती है, और वह देवताओं के गुण आ जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, मैं आज इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नही चाहता हूँ यह तो विचारों का वन है, आज मैं तुम्हें यह उच्चारण कर रहा हूँ बेटा! देखो, स्थावर सृष्टि में इस प्रकार का गुण हैं, मानो जिस माह में देखो, बुद्धि का निर्माण होता है। उसी माह में उसी प्रकार की औषध को लिया जाता है। यह वनस्पति से लिया जाता है। जब शुक्ल पक्ष में मानो देखो, सूर्य अपने प्रकाश की चरम सीमा पर होता है, और शुक्ल पक्ष मानो चन्द्रमा रात्रि को अपने गर्भ में धारण करता हुआ हो तो चन्द्रमा की कान्ति में कुछ औषधियां एकत्रित की जाती है। और उनको माताएं जब पान करती है। तो बेटा! सौम्य और मानो देखो, सूर्य विद्या को धारण करने वाले पुत्र को जन्म देती हैं। वनस्पतियों को धारण करना अथवा यह स्थावर सृष्टि

कहलाती है तो मेरे प्यारे! देखो, मैं विचार-विनिमय करता हुआ दूरी चला गया हूँ, विचार-विनिमय केवल यह कि मुनिवरों! प्रत्येक दशा में उस वेद की विद्या का प्रायः अध्ययन करना है, जिस वेद की विद्या उस परमपिता परमात्मा ने ऋषियों के ऋषियों के अन्तर्हृदयों में जिस विद्या को प्रदान किया उस वैदिकता को हमें अपनाना है। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार अमृतं ब्रह्मा वर्णा वेद का वाक् कहता है कि द्वापर के काल तक यह विद्या रही जो माता कुन्ती बेटा! इस विद्या को जानती थी, मेरे प्यारे! देखो, यही विद्याएं प्रायः देखो, कुन्ती और भी नाना माताएं इस विद्या को अपने में धारणा करती रही हैं। दुर्वासा मुनि जब देखो, सब देवियों का पुत्रियों का अध्ययन कराते इस विद्या को प्रदान कराते रहे हैं, और यह मानो देखो, नक्षत्रों की और औषध विज्ञान में प्रवेश कराते रहे हैं। यही वाक् बेटा! मैं त्रेता के काल में महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ब्रह्मवेत्ता थे इस विद्या को यह भी जानते थे विश्वामित्र भी जानते थे परन्तु देखो, यह विद्या अपने में बड़ी गहन रही है।

आज मैं बेटा! इस विचार में न जाता हुआ केवल ये उन्होंने कहा हे ब्रह्मणे ब्रह्ने राजा जनक की सभा में बेटा! ये प्रसंग था तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या हे ब्रह्मे हे व्रतं हे गार्गी! तुमने ये जान लिया होगा, कि मानो देखो, सबसे प्रथम सृष्टि है स्थावर में एक वृक्ष दूसरें में जैसे ब्रह्माण्ड एक दूसरे का सहायक बना हुआ है, जैसे मानो देखो, यह नाना पृथ्वियाँ हैं, यह नाना पृथ्वियाँ मानो देखो, सूर्य की सहायता से मानो गमन कर रही हैं, अपने में ओत-प्रोत हो रही हैं, परन्तु देखो, इतना विशाल चन्द्रं ब्रहे सूर्य सुतं मानो यह सूर्य अपना ऊर्ज्वा देता है क्या यह तीस लाख पृथ्वियों को अपनी ऊर्ज्वा देता रहता है एक दूसरा एक दूसरें में सहायक बना हुआ है तो इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार वनस्पति एक दूसरें की सहायक बनी हुई है एक दूसरें में अपनी ऊर्ज्वा देते हैं, अपने एक दूसरें में

मानो शमन कर देते हैं, उनमें सत्ता होती है, तो यह विचार प्रायः विद्यालयों में आचार्यों के मध्य में किया जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया तो उन्होंने कहा सबसे प्रथम सृष्टि का नाम स्थावर है, और द्वितीय सृष्टि का नाम हमारे यहाँ अण्डज माना गया है। तो अण्डज जो सृष्टि है, इसमें मानो देखो, सर्पराज भी आता है और देखो, जलचर भी आते हैं, समुद्रों में रहने वाली बहुत सृष्टियां हैं, जो मानो देखो, अण्डज से उत्पन्न होने वाली हैं, और बहुत-सी इस प्रकार की जो अन्तरिक्ष में गमन करने वाली पक्षी गण हैं। मानो देखो, रेंगने वाले जल चरों में भरत करने वाले परन्तु बहुत से प्राणी हैं, जो इस मानो देखो, मानं ब्रीहि यह अण्डज सृष्टि से जन्म लेने वाली हैं। परन्तु देखो, बड़ी विचित्रता इनमें विद्यमान हैं मानो देखो, सर्पराज है, यह सर्पराज देखो, प्रकृति में जो दूषति पना है, अथवा इसमें जो मेरे प्यारे! प्रदूषण है, यह अपने में सिंचन करता रहता है, और सिंचन करता हुआ मेरे प्यारे! देखो, शान्त हो करके यह अमृत को त्यागता रहता है। इसी प्रकार जितने भी विषैली प्राणी हैं, वह विष को निगलते रहते हैं। और मुनिवरों! देखो, अमृत को त्यागते रहते हैं, तो कैसा मेरे प्यारे! प्रभु का विचित्र जगत है। इसके ऊपर जब विचार-विनिमय करते हैं, तो हृदय गद्-गद् हो जाता है, और मैं यह कहा करता हूँ, प्रभु! तेरा कैसा यह अनुपम जगत है। तेरे जगत के ऊपर हम चिन्तन करते-करते हम मौन हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, जितने भी हिंसक प्राणी हैं। वह प्राणी मुनिवरों! देखो, अपने में प्रदूषण को शमन करते हैं और अमृत देते रहते हैं, अमृतां भूतं ब्रह्मा देखो, प्राण वर्धक वायु को प्राण वर्धक मानो देखो, अपनी आभा को त्यागते रहते हैं।

तो विचार आता रहता है, बेटा! कैसा अनुपम जगत है। अण्डज सृष्टि में देखो, सर्पराज जैसे प्राणी अपने में बेटा! गमन करते रहते हैं। शमनं प्रह्वा

शमनं करते रहते हैं परन्तु जो वेद का पाण्डितव है। बेटा! वह इससे भी ऊर्ध्वा में गमन करता है।

मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा था हे देवी! हे चाक्राणी! जब तुम देखो, बाल्यकाल, में वेदों का आचार्य से गान गाती रहती आचार्य से जब तुमने वेदों का गान जैसे जटा पाठ, घन पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त और अनुदात्त में जब वेदो गा गान गाया जाता है। तो मानो देखो, वह गान में परमात्मा की विद्या विद्यमान होती है। परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान उसमें निहित होता है। मानव का हृदय उसमें मानो विकृत हो जाता है, हृदय में एक महानता का जन्म और हर्ष ध्वनि हो जाती है। परन्तु देखो, उसी को जब वेद का पठन-पाठन करने वाला, जब वेद का गान गाता है, जटा पाठ में गाता है, माला पाठ में गाता है, तो बेटा! देखो, हिंसक प्राणी हिंसक नही रहते, वह उनके चरणों की वन्दना करने लगते हैं। तो विचार आता है कि पाण्डितव अपने में विचित्र है, परन्तु देखो, जो पक्षी गण और हिंसक प्राणी ये चाहते हैं कि वह परमात्मा हमारा पिता है, और पिता की जो विद्याएं हैं, और पिता का जो स्वर संगम है, उसे जो प्राणी श्रवण करता है, परन्तु वही अपने में हर्ष ध्वनि करने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया, उन्होंने ये अण्डज सृष्टि का गुण है, परन्तु इसके अवान्तर भेदन माने गएं हैं, बहुत से मानो देखो, प्राणी, इस समुद्र में रहते हैं, और समुद्रों में जो भी मुनिवरों! दूषित परमाणु जाते हैं। यह जल अपने में शमन करता है जब परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया जैसे यज्ञमान मानो देखो, यज्ञशाला की मेखला में जल का संचय करता है और जल को संचय करके मानो देखो, देवता का आह्वान करता है, इसी प्रकार परमपिता परमात्मा ने इस मानो देखो, जल की मेखला को जन्म दिया है जन्मदाता प्रभु है ये समुद्र रूपी मेखला है जो भी पृथ्वी में पृथ्वी पर

रहने वाले प्राणी मात्र है वह जितना भी मानो देखो, विष उगलते रहते हैं, उसको समुद्र अपने में शमन करता रहता है, और समुद्र के जल में से प्राणी अपने में शमन करते रहते हैं। परन्तु जैसे मछली जैसा वह भी अण्डज से जन्म लेने वाला है, परन्तु देखो, जैसे कच्छ है वह भी अण्डे से जन्म लेने वाला परन्तु देखो, वह मछली तो अण्डे से इतना वृत नही है, उसको तो जन्म वैसे ही प्राप्त होता है। परन्तु देखो, ये समुद्र का जितना भी विष है उसको अपने में संचय करते रहते हैं। उसे पान करते रहते हैं। समुद्र को स्वच्छ बनाया जाता है, और समुद्र मानो देखो, ऊर्ज्वा में वह अमृतं देखो, ऊर्ज्वा देता है और वह मुनिवरों! देखो, प्रदूषण को अपने में शमन कर लेता है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है, जब तूने इस संसार का सृजन किया, तो कितना चिन्तन होगा मानो देखो, यह कितना परिपूर्णता से इस संसार की रचना की गई है। मेरे प्यारे! इसी प्रकार यज्ञमान से ये कल्पना की है प्रभु के राष्ट्र से ये कल्पना मात्र से मानो देखो, मेखला का निर्माण किया, मेखला में जल, क्योंकि देखो, यह समुद्रं ब्रह्मा देखो, साकल्य है, चरू है, ये अग्नि में जब प्रदान किया जाता है, तो अग्नि में से, कुछ विष की धाराओं का जन्म होता है। परन्तु यह प्रदूषण देता है। परन्तु वह जल को शमन करने के लिए जल की विशेषता मेखला का होना बहुत अनिवार्य होता है। तो बेटा! जैसे परमपिता परमात्मा ने पृथ्वी के अन्तर्गत ये समुद्रों की मेखला को जन्म दिया ऐसे ही याज्ञिक पुरूषों ने ऋषि-मुनियों ने सृष्टि के प्रारम्भ में बेटा! मानो यज्ञशाला के आँगन में मानो एक मेखला का निर्माण किया, जो देवता के सम्बन्ध में उपास्य देव देखो, यज्ञमान अपने में देखा वह जल का सिंचन कराता है।

तो आज बेटा! मैं इस कर्म काण्ड की पद्धति में तुम्हें नही ले जा रहा हूँ विचार-विनिमय मुनिवरों! देखो, केवल यह कि यह अण्डज सृष्टि में कितना

विशेष गुण है वह मानो देखो, गुणाधानम बनी हुई हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, एक दूसरें में एक दूसरा अपने में ओत-प्रोत हो रहा है, तो विचार आता रहता है, कि एक दूसरा एक दूसरे प्राणी का सहायक है, मेरे प्यारे! देखो, मानव जब जब जंगम सृष्टि में यह मानव का जन्म होता है, जंगम सृष्टि में गो आता है परन्तु देखो, और भी नाना प्रकार के पशु आते है। परन्तु गो का बछड़ा उसको वृषभ कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब वत्रासर से वृष्टि होती है तो मानो देखो, गऊ के बछड़े, वृषभ को ले करके, मेरे प्यारे! देखो, मानव बीज के द्वारा देखो, वह पृथ्वी की चमड़ी को उधेड़ करके इसके गर्भ में बीज की स्थापना करता है। यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है और यह नाना प्रकार का अन्नाद देना प्रारम्भ करती है। मेरे प्यारे! यह माता वसुन्धरा है, इस पृथ्वी को वसुन्धरा कहते हैं, और वसुन्धरा को जो स्वामीतव करने वाला है, वह इन्द्र है। इन्द्र कहते हैं, बेटा! इन्द्रो शमं ब्रह्मा लोकप्रह्वा इन्द्र कहते हैं मुनिवरों! जो अप्रतम ब्रह्म इन्द्र कहते हैं, वायु को और मुनिवरों! शचि कहते है। विद्युत को और मुनिवरों! देखो, वृषभ कहते हैं। मेघ मण्डलों को और मुनिवरों! जब यह मिलन हो करके जब वृष्टि होती है, इन्द्रं ब्रहे प्राण रूपी वज्र को ले करके प्राण रूपी वत्रासुर का विनाश कर देता है, और विनाश करके मुनिवरों! देखो, धीमी वृष्टि प्रारम्भ होती है, यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है। तो यहाँ बेटा! देखो, गऊ के बछड़े की बलि का वर्णन आता है। यहाँ मुनिवरों! देखो, वाजपेयी याग का वर्णन है, और वाजपेयी याग में बलि का वर्णन है देखो, बलि का अभिप्रायः यह है, एक वेदमन्त्र आता है। बलप्रह्वा देवतवां वर्णं बलि असुतां बलि कहते हैं बेटा! पुरूषार्थ को गऊ के बछड़ों को ले करके मानव ने मुनिवरों! देखो, पृथ्वी की चमड़ी को उधेड़ करके मांस में बीज की स्थापना की तो बेटा! यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन गई अन्नाद को देने लगी तो बेटा! देखो,

बलि का अभिप्रायः है, पुरूषार्थ करना जितना मानव पुरूषार्थ करता है, उतना वह बलि में परिवर्तित हो जाता है। उसका नाम बलि कहा जाता है, बलि का अभिप्रायः किसी को हनन करके आहार करना नही है, बलि का अभिप्रायः यह है, पुरूषार्थ करना है। मेरे प्यारे! देखो, जब कृषक वह हलं व्रतं ब्रह्मा गो के वृषभ को ले करके पृथ्वी में यन्त्रों से मानो देखो, पृथ्वी में बीज की स्थापाना कहता है। तो नाना प्रकार के व्यंजनों वालीर बन जाती है। बेटा! मैं दूरी न जाता हुआ केवल विचार-विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो, हमें अलंकारों को भी विचारना चाहिए। परन्तु उसमें क्या-क्या रहस्यतम विद्यमान हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे विचार आता है, क्या मुनिवरों! देखो, जंगम सृष्टि में यह मानो देखो, गऊ हैं। जो पय देने वाला है, और मुनिवरों! देखो, एक मानव है, और देखो, एक मानव है। जो माता के जंगम सृष्टि से जन्म लेता है। मेरे प्यारे! वह जंगम सृष्टि कहलाती है, उसमें कितने प्रकार के हैं, देखो, प्राणी मात्र हैं, जो राष्ट्र करता है। राष्ट्रवेत्ता बन जाता है मेरे प्यारे! अनुशासन करता है, और अनुशासन में मुनिवरों! देखो, यह मानव जंगम ब्रह्मा प्राणियों को अपने वशीभूत कर लेता है। अथवा इनके गुणों को धारण कर लेता है, और इनके गुणों से राष्ट्र में बेटा! एक प्रकाश को जन्म देता है। वही जंगम सृष्टि से उत्पन्न होने वाला मानव मेरे प्यारे! ब्रह्मवेत्ता बनता है। वही मेरी प्यारी माता ब्रह्मवादिनी बन करके अपने गर्भ को ऊँचा बनाती हुई, उसे प्राण के द्वारा प्राण और अपान को मिलान करके देखो, गर्भ की अन्तरात्मा से वार्त्ता प्रगट करती है। तो मेरे प्यारे! देखो, जंगम सृष्टि कहलाती है यह जंगम सृष्टि में मुनिवरों! देखो, नाना प्राणी विद्यमान हैं, एक मानो देखो, एक ही पौधा है, जो स्थावर कहलाता है। उस पौधे पर दो प्रकार का अन्न विद्यमान रहता है। एक अन्न को पशु पान करता है, तो एक को मानव पान करता है। एक अन्न को देखो, मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपाती है। तो ओज और तेज को

देने वाला है। एक अन्न को मानो पशु पान कर रहा है, वह दुग्ध देता है, पय दे रहा है वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। जब मैं तेरे विज्ञान के ऊपर मानो अपनी विवेचना प्रगट करता हूँ, तो मेरा अन्तर्हृदय गद्-गद् हो जाता है। मेरे प्यारे! एक ही पौधा है दो प्रकार के अन्न हैं। एक मानव पान करता है। तो एक पशु पान करता है। यह जंगम सृष्टि का का ही आहार कहा जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, अमृतं ब्रह्मा लोकां मुनिवरों! देखो, यह जंगम सृष्टि का वर्णन नही एक मानव माता के गर्भ से जन्म लेता है। जंगम सृष्टि में मेरे प्यारे! वह ब्रह्म का बखान कर रहा है, तप कर रहा है, सूर्य का तप कर रहा है, तो सूर्य से ऊर्ज्वा ले करके वह ब्रह्मज्ञानी बन रहा है। वह ब्रह्म का बखान करता है। कोई प्रकृति का बखान करता है, एक मानव विज्ञानवेत्ता बन करके पांच प्रकार की प्रकृति को जान करके वह कही तेजोमयी बनता है। वह अणु और परमाणु में रत्त होता हुआ मेरे प्यारे! देखो, अग्नि की धाराओं पर जो परमाणु गति करता है, उस परमाणुवाद को विचारता है कि कहा समाहित हो रहा है। कही र्भु, भुवः, स्वः मानो तीन व्याहृतियां को विचारता हुआ द्यौ लोक में प्रवेश हो जाता है। द्यौ में अपनी वार्त्ता को पंहुचा देता है। वहाँ स्थिर हो जाता है। तो विचारवेत्ता बेटा! देखो, अपने में बहुत गम्भीरता से विचार करते हैं, तो यह चार प्रकार की सृष्टि है, और चार प्रकार की सृष्टि में सबसे प्रथम स्थावर और मुनिवरों! देखो, अण्डज और जंगम और मुनिवरों! देखो, चतुर्थ सृष्टि का नाम मेरे प्यारे! देखो, हम उसे उद्भिज कहा करते हैं उदभिज नामं ब्रहे जो समुद्रो में रहने वाली है। जो जल और देखो, वह उष्णता के संयोग से इनके समीप आने मात्र से उनसे प्राणियों का जन्म हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, मानव के वस्त्रों में बहुत से प्राणियों का जन्म हो जाता है, यह मुनिवरों! देखो, वह उष्णता और मुनिवरों! देखो, उष्णता के प्रभाव से दोनों के सन्निधान मात्र से प्राणियों का जन्म होता रहता है। ऐसे-ऐसे

प्राणी हैं बेटा! समुद्रों में जिन प्राणियों के बेटा! उनके नगर के नगर है, और उसमें वह विद्यमान रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, उनमें अण्डज सृष्टि भी हैं, जंगम भी हैं, परन्तु देखो, उनमें उद्भिज भी कही जाती है, और मुनिवरों! देखो, जब मेघमण्डलों में जलों का उत्थान करते हैं। तो बहुत से जलों के साथ वर्षा काल में वह प्राणियों का जन्म हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता है यह चार प्रकार की सृष्टियां कहलाती हैं। तो ऋषि कहता है, देखो, देवी यह चार प्रकार की सृष्टि हैं, मानो सबसे प्रथम स्थावर जंगम और देखो, अण्डज और देखो, स्वेदज भी उसे कहते हैं। परन्तु देखो, उद्भिज कहा जाता है। उद्भिज कहते हैं, जो जब देखो, उष्णता के और शीतलता के संयोग से ही उसका जन्म होता है। तो यह चार प्रकार का बेटा! जगत है परन्तु इसमें अवान्तर भेद माने गएं हैं। इन भेदनों की चर्चा तो मैं किसी काल में ही कर पाऊंगा जब वेदमन्त्रों का समूह आयेगा आज तो केवल तुम्हें उच्चारण करना है, जो गार्गी ने प्रश्न किया गार्गी के प्रश्नों को उन्होंने स्पष्टीकरण किया उन्होंने कहा-देवी! यह चार प्रकार की सृष्टि है, और यह चार प्रकार की सृष्टि का जो समावेश है। मानो यह पृथ्वी में ओत-प्रोत हो जाता है। पृथ्वी में यह प्रतिष्ठित हो जाती है। मानो देखो, इसी में ओत-प्रोत हो जाती है मेरे प्यारे! देखो, यह ऋषि ने उत्तर दिया और ऋषि ने कहा हे देवी! यह इसी में ओत-प्रोत हो जाती है, इसी में यह अपने को पृथ्वी को शमन कर लेती है। मानो कहते हैं कि अमुक प्राणी मृतक हो गया है। परन्तु देखो, जब मृतक का प्रसंग आता है। मृतक नही उनका परिवर्तन हो गया है। वह अपने-अपने स्वरूप में चला गया है। परन्तु अपने स्वरूप में प्रवेश हो करके मुनिवरों! देखो, वह उसका स्थूलतव समाप्त हो गया है। परन्तु उसका सूक्ष्म रूप बन गया, और सूक्ष्म रूप को देखो, इस वसुन्धरा ने भी उसे अपने शमन कर लिया अपने में ग्रहण कर लिया है। गुरूतव को गुरूतव ने अपने में ग्रहण

कर लिया उसका परिवर्तन हो गया है। तो यह परिवर्तन की चर्चाएं मानो देखो, ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने राजा जनक की सभा में अपना मन्तव्य दिया और यह कहा हे देवी! इसको अपने में चिन्तन करने का एक विषय बनाओ, जिससे देखो, तुम्हारा अनुपात तुम्हारा यह शरीर संगमं ब्रहे व्रतनं मानो देखो, तुम अपने में ओत-प्रोत हो जाए। इसीलिए परमात्मा का जो जगत है, वह बड़ा अनन्तमयी माना गया है। आज हम प्रभु के जगत के ऊपर अपने उदगार प्रगट कर रहे थे, तो बेटा! तुमने यह जान लिया होगा कि एक दूसरा प्राणी कितना सहयोगी है, एक दूसरें में कैसे सहयोग कर रहा है, किस प्रकार एक दूसरी सृष्टि मानो एक दूसरें में मानो देखो, परिवर्तित हो रही है, और अपने में अपनेपन को धारणा कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता है इन सबमें आत्मा विद्यमान हैं, परन्तु आत्मां भूतं ब्रह्म लोकां वाचसुतं मेरे प्यारे! देखो, आत्मा का यह लोक है, पंच महाभूत हैं, और पंच महाभूत मानो सर्वत्र सृष्टि में विद्यमान हैं, और यह आत्म का लोक माना गया है, जैसे जालवी जी ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा है, और अर्द्धभाग ने भी इसी प्रकार व्यक्त किया है, मेरे प्यारे! उन्होंने कहा है क्या यह जितने भी यह पंच महालोकं ब्रह्मा उनमें आत्मा विद्यमान हैं। मानव का शरीर है, वह भी पंच महाभूतों का है, और देखो, जहाँ भी आत्मा का गुण है वही पंच महाभूत शरीरां ब्रह्मे व्रतं देखो, वह शरीर में आत्मा विद्यमान रहता है। तो आज का विचार-विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो, महा अमृते याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब भली भांति उत्तर दिया तो चाक्राणी गार्गी उपस्थित हो करके बोली कि हे प्रभु! यह तो हमने जान लिया है। परन्तु जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा अध्ययन करती थी, तो मेरे पूज्यपाद मुझे इसका वर्णन कराते रहे हैं। परन्तु यह वार्त्ता प्रगट कराते रहे हैं, परन्तु मैं यह जानना और चाहती हूँ, प्रभु यह जो पृथ्वी है, इसकी प्रतिष्ठा कहाँ हो जाती है। यह कहाँ प्रतिष्ठित

है? तो उन्होंने कहा कि यह जो है अमृतं ब्रह्वे कृतं मंगलं वृत्ति असुतां आ पा हिरण्यं कृते यह आपों में ओत-प्रोत हो जाती है। मानो देखो, यह पृथ्वी आपो में मग्न हो जाती है। आपों में ही यह रज रूप बन जाती है आपो में ही मानो प्रवेश करके देखो, आपां ब्रह्मे देखो, आपं ब्रहे यह आपा में ओत-प्रोत हो करके मानो देखो, अपने में समन्वय हो जाती है। अपने में समन्वय करने वाला आपो है। यह आपो ही मुनिवरों! देखो, एक परमाणु याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब भली भांति उत्तर दिया तो चाक्राणी गार्गी उपस्थित हो करके बोली कि-प्रभु! यह तो हमने जान लिया है, परन्तु मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा अध्ययन करती थी तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे इसका वर्णन कराते रहे हैं, परन्तु यह वार्त्ता प्रगट कराते रहे हैं, परन्तु मैं यह जानना और चाहती हूँ कि-प्रभु! यह जो पृथ्वी है इसकी प्रतिष्ठा कहाँ हो जाती है? यह कहाँ प्रतिष्ठित है? तो उन्होंने कहा यह जो है अमृतं ब्रह्वे कृतं मंगलं पृथ्वी असुतां आपा हिरण्यं ब्रहे यह आपो में ओत-प्रोत हो जाती है। मानो देखो, यह पृथ्वी आपो में मग्न हो जाती है। आपो में यह अद्भुत बन जाती है आपो में ही मानो प्रवेश करके यह यह देखो, आपां ब्रह्मे आपा ब्रहे यह आपा में ओत-प्रोत हो करके मानो देखो, अपने में समन्वय हो जाता है। अपने में समन्वय करने वाला आपो है, यह आपो ही मुनिवरों! देखो, एक अद्भुत हो गई और यह कहा कि-प्रभु! आपको धन्य है आप ने मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया है, इसको प्रतिष्ठित होता आप ने मुझे दर्शाया है, क्या यह पृथ्वी में है, और पृथ्वी मानो देखो, आपो में ओत-प्रोत हो जाती है। उसमें प्रतिष्ठित हो जाती है, तो मैं प्रतिष्ठिं की चर्चाएं भगवन! मैं आगे भूतां भूतं ब्रह्मा तो आज का विचार बेटा! यह सम्पन्न होने जा रहा है। आज के विचारों का अभिप्रायः यह क्या प्रभु के राष्ट्र में प्रभु के जगत में ही नाना प्रकार का यह जो जगत है सृष्टियां है इसका बड़ा एक महत्व मानो देखो, इसमें बड़ा विज्ञान विद्यमान रहता है, जब

वैज्ञानिक जन इसके ऊपर अन्वेषण करते हंत तो कहीं आयु में प्रवेश करते हैं, कही मानो तरंगो में तरंगित हो जाते हैं, कही मानो देखो, ऐसी औषधियों को एकत्रित करते हैं। जहाँ प्रदूषण को समाप्त किया जाता है। तो बेटा! देखो, आज का विचार-विनिमय क्या अब मैं अपने ब्रह्मे देखो, इन वाक्यों को सम्पन्न करने जा रहा हूँ। शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या ऋषि-मुनि अपने में उनका कितना गम्भीर अध्ययन रहा है, सिंचन करने का मनन करने की जो धाराएं हैं, मैं यह उच्चारण कर रहा था एक मन्त्र में क्या प्रभु का जो जगत है यह बड़ा अन्नतमयी हैं, और प्रभु के जगत में हम आयें हैं, परन्तु देखो, उसका ज्ञान और विज्ञान अनन्तमयी कहा जाता है। तो समय मिलेगा तो बेटा! शेष चर्चाएं हम आगे की चर्चा कल प्रगट करेंगे अब वेदमन्त्रों का पठन-पाठन होगा। इसके पश्चात हमारी वार्त्ता समाप्त ओ३म् देवाः आभ्या मना वायु गतं मना मानं ग्राहणां त्वा। ओ३म् दिव्यां भवितां वायाहाम्।